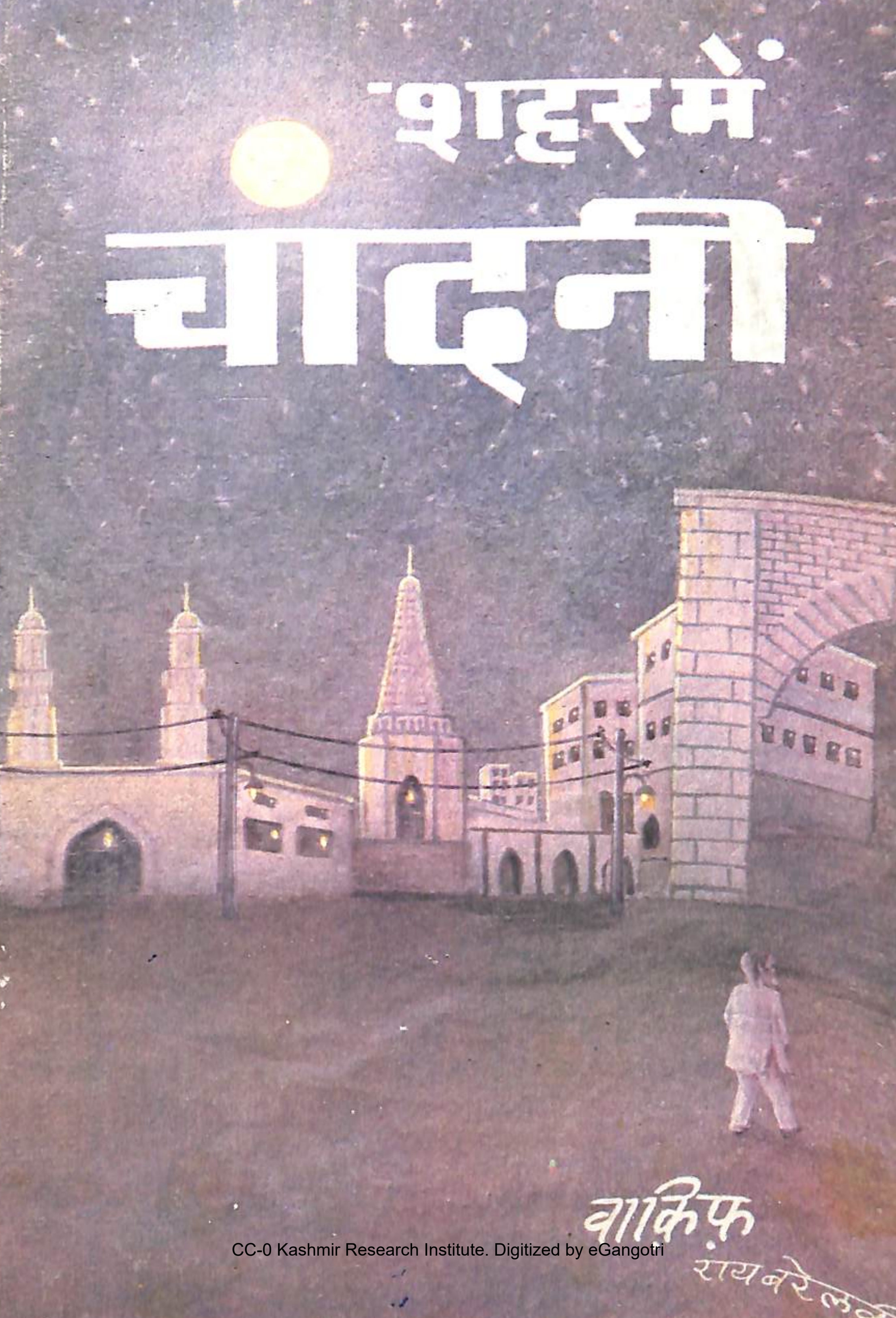

शहर में
चांदनी
वाकिफ़
रायबरेल

शहर में चाँदनी

मैं तो बुलबुल हूं, मेरा काम है गाते रहना
भूल जाऊं तो मुझे याद दिलाते रहना

'वाकि़फ़' रायबरेलवी

नाम किताब	शहर में चांदनी
मुसन्निफ़ का नाम	'वाक़िफ़' रायबरेलवी
नाशिर	'ज़ेब' वाक़िफ़ी
सने इशाअत	१९९७
बारे अव्वल	एक हज़ार (१०००)
मतबा	चार्मिंग आफसेट २४३–ए, दायरा शाह अजमल इलाहाबाद
बइहतेमाम	'वाक़िफ़' मिमोरियल अदबी संगम रायबरेली
क़ीमत	पचहत्तर रूपया (७५/–)

मिलने के पते

१. ज़ेब–उन–निसा मकान नं० १ उत्तरी जहानाबाद
रायबरेली

२. मकतबा दीनो अदब अमीनुद्दौला पार्क
लखनऊ

ज़िन्दगी में गीत का रस घोल कर उड़ जायेंगें
नीलगूं आकाश में पर खोल कर उड़ जायेंगें

ये परिन्दे बाग़ में कुछ रोज़ के मेहमान हैं
अपनी अपनी बोलियां सब बोल कर उड़ जायेंगे"

जो इन्सानों पे गुज़री है जहाँ के इन्क़िलाबों में
मैं वह भी पढ़ रहा हूँ जो नहीं लिक्खा किताबों में

फ़ेहरिस्त

फ़ेहरिस्त

फ़ेहरिस्त

फ़ेहरिस्त

फ़ेहरिस्त

तआरुफ़

नामः अब्दुल जलील 'वाक़िफ़' रायबरेलवी

वालदैन : शेख जमील हसन, अजमलुन्निसा दुर्रानी

सने पैदाइश : १९२६ जहानाबाद, रायबरेली

शरीक–ए–हयात : ज़ैबुन्निसा प्र०अ० कन्या स्कूल वावन, बुजुर्ग, रायबरेली

बच्चे : नवेद हसन, तन्ज़ीम फ़िरदौस

तसनीफ : "ज़ख़्मों के चराग़" (मजमू–ए–कलाम) दो एडीशन ज़ेरेतकमील

"नदी और परछाइयां" (याददाश्त)

पता : २२०, ताड़तल्ला उत्तरी जहानाबाद, रायबरेली, यू०पी०

मैंने कहीं फ़न्नी और लस्सानी रवायत पर ख़्याल और मक़सद को तरजीह दी है इस मजमुए का कुछ कलाम अहबाब व अग़यार अपने काम में ला चुके हैं खुदा उन्हें हिदायत दे काश इस मजमुए के कुछ अशआर मुसर्रत, मुहब्बत तसकीन और रोशनी दे सकें।

"शायर की नवा हो कि मुग़न्नी का तरन्नुम
जिससे चमन अफ़सुर्दा हो वह बाद–ए–सबा क्या।"

वाकिफ़ रायबरेलवी

शख़सियत और पस मन्ज़र

मैं १९२९ में एक मुहज़्ज़ब और इल्म दोस्त घराने में पैदा हुआ वालिद का नाम शेख जमील हसन और वालिदा का नाम अजमलुन्निसा दुर्रानी था।

घराने के सभी लोग इल्म व अदब का ज़ौक़ रखते थे मेरी अम्मी जूनियर हाई स्कूल के उस ग्रूप में शामिल थीं जिसमें पहली बार तीन मुस्लिम लड़कियाँ शरीक हो रही थीं। मेरी नानी और वालिदा ने लोक कहानियाँ सच्चे वाक़ियात और अच्छे अशआर का सरमाया मुझे दिया अम्बिया, औलिया असहाब व मुजाहिदीन की इस्तिक़ामत क़ुरबानी और राम, सीता, कृष्णा, सावित्री सत्यभगत प्रहलाद, गौतम बुद्ध के किरदार ने भी मुझे मुतास्सिर किया। वालिद साहब ने क़ुरान पढ़ाया और मौलाना, रोम व सादी की हिकायतें सुनाईं तिलिस्मए होशरूबा दास्ताने अमीर हमज़ा और शेक्सपियर के डरामों से मुतार्रिफ़ कराया, मेरे इर्द गिर्द बे तअस्सुब, रवादार और रौशन ख़्याल लोग थे इस लिये मेरे ज़ेहन में मज़हबी या क़ौमी अस्बियत और नफ़रत का पौदा कभी लग नहीं सका, मज़हब मुझे सादा और असली शक्ल में मिला लोग ईमानदार और अम्न व इंसाफ़ पसन्द थे, बचपन खेल कूद, सैर व शिकार नदी, तालाब और जंगल में गुज़रा, ग़रीबी और फ़ाक़ाकशी, के बावजूद ज़िन्दगी बड़ी मज़ेदार थी, मैं एक हस्सास, जज़बाती और तख़ीइली नौजवान था, जिसका दिल मुहब्बत और दोस्ती के जज़बात से लबरेज़ था।

वाकिफ़ रायबरेलवी

महसूसात की तसवीर ही वाकिफ़ की अस्ल तसवीर है जो ज़बानेहाल में अहले मुहब्बत की रूदाद भी ब्यान करती है और समाज की ज़हनी कशमकश भी, इसकी आवाज़ नारा बाज़ी या सिर्फ़ रवायती शायरी की सदाऐ–बाज़गश्त नहीं बल्कि शऊर व इंफ़िरादियत के परदे को मुतहर्रिक करती हुयी यह कह जाती है कि "उन्ज़ूर मन क़ाला वला तन्ज़ुर मन क़ाला"

-------- डाक्टर सय्यद एजाज़ हुसैन

'वाक़िफ़' की शायरी में जो पुर असर अनासिर हैं उनका राज़ यही है कि उन्होंने अपने ख़्यालात और मशाहिदात को भरपूर सच्चाई और फ़न्नी लेवाज़िम के साथ पेश करने की कोशिश की है।

शायरी सियासत का बदल नहीं बन सकती और बाज़ लोग इससे यही मतालबा करते हैं। वाक़िफ़ ने जिस तरह इशारों और कनायों से काम लिया है उससे शायरी मजरूह नहीं होती बल्कि पढ़ने वाले पर ख़ुशगवार असर पड़ता है "मेरे वतन", "एहसास के साये", "बरस पड़ो" "एशिया जाग उठा", और "एक ही ग़म" में यही ख़ुसूसियतें मिलती हैं।

"अपनी–अपनी खुशी" और "जिन्दगी की शहज़ादी" अम्न के मौज़ू को दिलकश अन्दाज़ में पेश करती हैं, "तवायेफ़", तुम भी चले जाओगे", और "नमूद–ए–ज़िन्दगी" में उन्होंने बहुत ख़्याल अंगेज़ बातें कहीं हैं, ग़ज़लों में यह कैफ़ियात ज़्यादा बेहतर लिबास पहन कर जलवागर हुई हैं बल्कि कहीं–कहीं तो हलके दिलकश इशारों और हसीन अदा की वजह से ज्यादा पुर असर मालूम होती हैं, वाक़िफ़ का मेलान नज़्मों की तरफ़ ज़्यादा हैं लेकिन उनकी ग़ज़लें ज़्यादा मुतरन्नम हैं असर अंग्रेज़ और रवां हैं, उदासी की एक ख़ास कैफ़ियत उनके अशआर को ख़ूबसूरत बनाती है ज़रूरी नहीं कि ग़में इश्क़ की देन हो, ज़िन्दगी के दुःखों के एहसास से भी यह बात पैदा हो सकती है।

-------- सय्यद एहतिशाम हुसैन

वाकिफ़ से मेरी मुलाक़ात तक़रीबन २२ साल क़ब्ल बम्बई की किसी शेरी नशिस्त में हुयी थी, मैंने देखा उनके कलाममें चमक हैं लहजे में पुख़्तगी और आंखों में अपने अहेद की तसवीर है मैंने अपने यहां ठहराया, चन्द माह मेहमान नवाज़ी का मौक़ा मिला।

मयनोश मैं था वह बलानोश थे, इसी शिद्दत ने उन्हें इस निगार ख़ाने में ज़िम्मेदार बनने नहीं दिया वह ज़हीन थे उन्हें शायरी पर मलका था, फ़िल्म में काम भी मिला, मुस्तक़बिल की तवुक्क़ात भी थी, लेकिन अफ़सोस उन्होंने अपने आप को पहचाना न अपनी शायरी का मर्तबा जाना इस तरह उर्दू का एक जांनिसार शराब नोशी में ज़ाया हो गया।

.... महरूह सुल्तानपुरी

डा० अजमल अजमली

(साबिक़ एडीटर सोवियत देसउर्दू)

डियर मज़हर! तुम्हारे ख़त से ये ख़बर मिली कि वाक़िफ़ को ज़िन्दगी की क़ैद से रिहाई मिल गई, समझ में नहीं आता कि तुम्हें ख़ुद को या शबनम नक़वी और काज़िम मिर्ज़ा जैसे दोस्तों को पुरसा दूं, या मुबारकबाद, सच पूछो तो वाकिफ़ ने जिन्दगी का बड़ा हिस्सा क़ैद, वह भी सी क्लास बैरिक में गुज़ारा लेकिन आफ़रीं है वाक़िफ़ की हिम्मत और हौसले को कि वह ज़िन्दगी के ये बुरे दिन हंसते खेलते गुज़ारता रहा।

वाकिफ़ बड़ा अच्छा शायर था, उसकी ग़ज़लें उसकी नज़्में दाख़िली नग़मगी और क़लन्दराना मिजाज़ की हामिल हैं उसकी नज़्मों में जोश है, जज़्बा है संघर्ष का शऊर है अगर हालात ने

मौक़ा दिया होता तो वह बहुत दूर तक जा सकता था, क़ूवते गोयाई पर उसकी गिरफ़्त मज़बूत थी, वाकिफ़ की एक ग़ज़ल के अशआर मुझे बेसाख़्ता याद आ गये और मैं देर तक उन्हें गुनगुना कर वही कैफ़ महसूस करता रहा जो आज से लगभग ३०–४० साल पहले उस वक़्त हुआ था जब वाकिफ़ ने यह ग़ज़ल सुनाई थी।

ख़ुदी को बचा कर फ़क़ीरी में ख़ुश है
यह सर ख़ुशी मेरी दौलत है यारो

□□□

मेरा और वाक़िफ़ का साथ उनके पहले मजमुऐ कलाम "ज़ख़्मों के चराग़" जलने से पहले का है, मैंने हर चराग़ को अपनी आंखों से जलते हुये देखा है और उसकी रोशनी को अपने ज़हन के परदे पर साफ़ महसूस किया है वाक़िफ़ ने जो चराग़ जलाये थे, उनको वह अकेला ले कर जिस डगर से गुज़रा वह रौशन मालूम होती, नतीजा अहले नज़र के सामने है।

अब "शहर में चांदनी" हो सकी है। ठन्डक और नर्म रोशनी लिये हुये, उम्मीद तो यही है कि यह रोशनी तेज़ जलते बुझते क़ुमक़ुमों के माहोल में अपने हुस्न को बनाये रहेगी।

-------- विलायत जाफ़री
स्टे़शन डायरेक्टर
दूर दर्शन, लखनऊ

□□□

कोई शायर उस वक़्त तक अच्छा शायर नहीं हो सकता जब तक वह एक अच्छा इन्सान भी न हो वाक़िफ़ साहब के बारे में ग़ौर कीजिये तो इस क़ौल की सदाक़त होती है कि वाक़िफ़ साहब कितने अच्छे इन्सान और कितने अच्छे शायर थे, शायर समाज के लिये एक ख़ास मक़सद लेकर पैदा होता है, वह आम लोगों के मुक़ाबले में वसीउन्नज़र वसीउल फ़िक्र और ज़हीन होता है वह समाज का मेमार होता है और फ़िक्र के नये–नये दरीचे खोलता है।

वाक़िफ़ साहब उर्दू के शायर थे लेकिन वह जानते थे कि हिन्दी क़ौमी ज़ूरूरत है और उर्दू हमारी सक़ाफ़ती ज़रूरत है वाक़िफ़ साहब ने हिन्दी को भी अपनी फ़िक्रए सुख़न के एक मख़सूस गोशे में रक्खा यही वजह है कि वह हिन्दी और उर्दू दोनों हलक़ो में हरदिल अज़ीज़ रहे हैं।

-------- जस्टिस भुर्तज़ा हुसैन

वाकिफ़ के कलाम में एहसासात और जज़बात की नज़ाकतों के साथ–साथ तख़ीइल की बुलन्द परवाज़ी और शऊर व विजदान की लताफ़त भी नज़र आती है वह महेज़ तसुव्वरात की वादियों में अपने फ़न का चराग नहीं रोशन करते बल्कि वह समझते हैं कि फ़न की अज़मत ज़िन्दगी में हैं।

मेरे क़लम में रची हुई है शऊर व विजदान की नज़ाकत
मैं इस हक़ीक़त को जानता हूं कि ज़िन्दगी से है फ़न की अज़मत

वाकिफ़ ने नज़्मों, ग़ज़लों और गीतों के अलावा मज़हबी शायरी में भी अपनी इन्फ़िरादियत क़ायम रखी है और यह बात बहुत कम लोग जानते हैं कि वाक़िफ़ क़सीदे भी कहते थे, ग़ालिबन १२ सितम्बर १६६४ की बात है कि इलाहाबाद की रवायती "महफ़िले–नूर" में वाक़िफ़ साहब भी तशरीफ़ लाये जहां अलीरज़ा जव्वाद ज़ैदी, राही मासूम रज़ा, राज़ इलाहाबादी, नाज़िश प्रतापगढ़ी, वामिक़ जौनपुरी जैसे कुहना मश्क़ और मायेनाज़ शोरा शरीके महफ़िल थे मगर हक़ीक़त ये है कि उस साल की महफ़िल वाक़िफ़ हीं के हाथ रही, ज़माना गुज़र गया लेकिन वाक़िफ़ के यह चार मिसरे आज़ भी इलाहाबाद की फिज़ा में ग़ूंज रहे हैं:

ग़ुरूर टूट गया कोई मर्तबा न मिला
जफ़ा के बाद भी कुछ हासिले–जफ़ा न मिला
सरे हुसैन मिला तो यज़ीद को लेकिन
शिकस्त यह है कि वह सर झुका हुआ न मिला

.... शकील जमाली

शम्भू दयाल सिंह "सुधाकर"

मुझे लगता है प्रतिभा कस्तूरी मृग की नाभि में बसी कस्तूरी की तरह होती है। वह जिसके भीतर रहती है वह अपनी ही सुगन्ध में मस्त हो जाता है और हर जगह उसी सुगन्ध को खोजता हुआ फिरने लगता है। उसे क्या पता कि वह ख़ुश्बू उसके ही भीतर से आ रही है वह तो कण–कण में ,पत्ती–पत्ती में उसे खोजने लगता है। यदि मेरा वाक़िफ़ से परिचय न होता तो प्रतिभा और कस्तूरी के इस रिश्ते को मैं क़तई न जान पाता क्योंकि वाक़िफ़ की तरह का और कोई व्यक्ति आज तक मुझे मिला ही नहीं!

अलमस्त, फ़क़ीर, शायर वाकिफ़ रायबरेलवी अपनी इसी खोज में ज़िन्दगी भर गाता फिरा :

एक पल रुके नहीं किसी भी गांव में
हम यूं ही चला किये धूप–छांव में

सीधी लकीर खींचना बहुत टेढ़ा काम है किन्तु वाकिफ़ के जीवन के हर टेढ़ेपन पर शायरी की सीधी लकीर खींची थी। सहज आधार पाने के लिये कठोर तप आवश्यक है, वाकिफ़ ने ये तप किया था और भाषा उनकी अनुगामिनी (पीछे चलने वाली) बन गयी थी जब तक शायर छोटा रहता है उसकी भाषा बड़ी रहती है मगर जब शायर बड़ा हो जाता है तो उसकी भाषा उसके क़द से छोटी हो जाती है। वाकिफ़ ऐसे ही महान शायरों में से एक थे, भाषा जिनके पीछे–पीछे चलती थी।

प्रतिभा हीरे की तरह होती है वह जितने ही दिन धरती के भीतर की आग में तपती है पकती है तब कहीं कोयले से हीरा बनती है। वाकिफ़ हीरा हो गये थे। जैसे हीरा की कोई जात बिरादरी नहीं होती वैसे ही वे भी संकीर्णताओं से दूर थे, यानी कोयेले की बिरादरी से बाहर हो चुके थे। उनका धर्म केवल मानव धर्म था।

□□□

''कमला शंकर त्रिपाठी''

खेल मौजों का ख़तरनाक सही
क्या मैं इस खेल से ड़र जाऊंगा

अदम्य साहस और स्वस्थ निर्भीक चिन्तन आलौकिक प्रभामण्डल से आवृत्त वाकिफ़ रायबरेलवी की उपर्युक्त पंक्तियाँ उनके व्यक्तिव को खुलासा करने में पूर्णतया सक्षम हैं ऐसे हिन्दी, उर्दू अदब के अमिट हस्ताक्षर वाकिफ़ रायबरेलवी ३० मई १९९२ को चिरनिन्द्रा में लीन हो गये और अपने पीछे छोड़ गये गीतों और ग़ज़लों के ऐसे निशान जो युग–युगान्तर तक अपनी पहचान बनाये रहेगे। वाकिफ़ साहब की काव्य धारा किसी पवन के थपेड़ों की मोहताज कभी नहीं रही, अपितु वह समाजिक कुरीतियों वर्णागत भेदभाव एवं मानव जीवन की विभिन्न विषमताओं रूपी शिलाखण्डों का भदचूर्ण करती हुयीं समतल मैदानों से प्रवाहित होती हुयी सरल बोधगम्य एवं सदैव दिशा सूचक रही।

वाक़िफ़ साहब की रचना धर्मिता की सब से बड़ी विशेषता यह है कि वह सदैव सहज एवं बोधगम्य रही है आपने हिन्दू, उर्दू अदब को सम्मिलित करके अपने गीतों और ग़ज़लों के लिये एक नई एवं निराली भाव भूमि निर्मित की और उसी सतह पर अपनी आयु के अन्तिम पड़ाव तक चलते रहे। अपनी उस साहित्यक यात्रा को चिरन्तन स्वरूप प्रदान करने के लिये ही आपने हिन्दी और उर्दू के साहित्यकारों की ''अदबी संगम'' नामक संस्था की स्थापना की जो आज ''वाक़िफ़ मेमोरियल अदबी संगम'' के नाम से परिचर्चित होकर वाकिफ़ साहब द्वारा निर्मित साहित्यिक धरातल को और अधिक विस्तार प्रदान करने के लिये कृत संकल्प है।

□□□

राजेन्द्र बहादुर सिंह ''राजन''

अपने पूर्व जन्मों के पुण्यों का फल ही मैं मानता हूं कि विगत १५ वर्षों से मैं एक ऐसे शायर के सानिध्य में रहा हूँ जो स्वयं में कविता के अनंत पुरुष थे। एक ऐसा व्यक्तिव जिसकी शायरी को उसके भीतर के शायर और जिस शायर को उसकी शायरी से पृथक करके वैसे ही नहीं देखा जा सकता जैसे आंख को शरीर से निकाल कर कुछ भी नहीं देखा जा सकता जिस के बाहर भीतर प्रेम ही प्रेम छलकता था। वह मस्त फ़क्कड़ शायर थे वाक़िफ़ साहब।

इश्के हक़ीक़ी से इश्के मजाज़ी तक शायरी को पहुंचाने वाला प्रेम और सौंदर्य का शायर 'वाक़िफ़' भारतीय दर्शन के अनुरूप परम सत्य तक पहुंचने के लिये कहता है :

''चलो आओ जहां तक रोशनी मालूम होती है''

जाति पात, सम्प्रदाय से ऊपर उठकर विसंगतियों की नदियों को दृढ़ आस्था और विश्वास के साथ पार करते हुये, जीव की चिन्ता न करते हुये जीवन और जीवन मूल्यों की तलाश में ही वाकिफ़ साहब ने अपना जीवन व्यतीत किया विषम से विषम परिस्थितियों में भी उन्होंने परिस्थितियों के समक्ष कभी घुटने नहीं टेके।

राष्ट्रीयता की भावना उनके रग–रग में समायी हुयी थी, भारत वर्ष की धरती को वह सतत् नमन करते हुये देखे गये हैं महा कवि तुलसी के साहित्य से वह अत्यन्त प्रभावित थे। क़ौमी एकता के लिये उन्होंने जो सार्थक प्रयास किये हैं उसे भुलाया नहीं जा सकता। ''वसुधैव कुटम्बकम्'' की भावना इस महान शायर के जीवन में मैंने स्पष्ट रूप से देखी है।

□□□

सूर्य नारायन दुबे "सूरज"

वाकिफ़ की जिन्दगी वह आइना है जो हमें दिखाता है कि

१. हिन्दुस्तान का आम आदमी कितना महान और हुव्बुल वतनी का दीवाना हो सकता है।

२. समाजी बुराइयों और कुरीतियों तथा शोषण के प्रति ज़ेहनी क्रान्ति ला सकता है।

३. अपने को भुला कर ग़ुरबत से लड़ते हुये इन्सानी कुरबत का परचम बुलन्द कर सकता है।

४. अपनी ज़ाती मजबूरियों के ज़हर को घूंट–घूंट पी कर शेरो–सुख़न की शमा जला सकता है।

५. खुद मर कर इन्सानी किरदार को बुलन्दी की राहें दिखा सकता है।

६. अपनी शख्सियत इलमो–शायरी की रवायतों को जारी रखकर सरमाया दारों और फ़िरक़ा परस्तों के मुंह पर तमांचा मारता हुआ ख़ुद तिल–तिल जल कर मौत को गले लगाने वाला कोई ग़ालिब जोश, विसमिल या 'वाक़िफ़' ही इन्सानी ज़िन्दगानी में इन्क़ेलाब ला सकता है।

□□□

''चारू चन्द्र द्विवेदी''

कवियों का सिरमौर 'वाक़िफ़' आम लोगों से सदैव ही जुड़ा रहा। शारीरिक या मानसिंक श्रम करने वालों की वास्तविक स्थिति उनके दैनन्दिन संघर्ष उनकी आशाओं, आकांक्षाओं और उनकी सफलताओं, असफलताओं का अंकन करते हुये वाकिफ़ की लेखनी जन सामान्य से जो शोषित, दलित, अभावग्रस्त और कुंठित हैं अधिक जुड़ी थीं। उन्होंने संघर्ष से झूझते हुये लोगों के लिये आशा और विश्वास का दीपक जला कर उन्हें अपने मार्ग में सतत् आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है प्रोत्साहित किया है। इस प्रकार उनकी रचनाओं में स्वभाविक रूप से मानवीय चेतना का आग्रह, वास्तविकता का स्पर्श हार्दिकता का माधुर्य तथा अतीन्प्रिय प्रेम की प्रतिष्ठा वर्तमान है।

वाकिफ़ प्रतिभा सम्पन्न कवि थे, प्रतिभा का सम्बन्ध आत्मा से है, जिस कवि की आत्मा जितनी प्रांजल, जितनी सुसंस्कृत और निर्मल होगी उसकी प्रतिभा उतनी ही जागरूक होगी। हम कह सकते हैं कि उनके द्वारा रचित साहित्य सर्वजनीन, सर्वकालीन एवं शाश्वत है। हमें उनके सम्पूर्ण साहित्य को हिन्दी और उर्दू में प्रकाशित करना चाहिये और यदि हम ऐसा कर सके तो यही उस महान आत्मा के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी, अन्त में मैं अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये परमात्मा से यही प्रार्थना करता हूँ कि वाकिफ़ साहब की आत्मा को सदगति प्रदान कर उनके परिवार को शक्ति दे कि वह इस आकस्मिक आघात को सह सकें।

□□□

''जवाहर इन्दु''

'वाक़िफ़' साहब की शायरी एक विश्वास और सत्य को प्रकट करती हैं वहीं दुष्यन्त कुमार की शायरी में भय आतंक और मात्र यथार्थ दिखता है।

वाकिफ़ की सोच का कैनवास बहुत बड़ा है जिसमें समिष्टि लगभग सभी भावनाओं का समावेश बड़े साथर्क रूप में हुआ है। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के साम्य को स्थापित कर रूपायित कर लिखने के लिये हर पक्ष को उजागर करना पड़ेगा और प्रख्यात युवा कवि कमलेश भट्ट ''कमल'' के एक हाइकु के द्वारा मैं अपनी बात कहूँ तो अतिश्योक्ति न होगी।

समुद्र नहीं।
लांघना कठिन है।
परछाईं भी''

'वाक़िफ़' साहब एक ऐसे सेतु थे, जहां से होकर हिन्दी और उर्दू के लोग आकर एक जगह मिलते थे। उनका विश्वास अटूट था, आस्था प्रदृढ़ थी। निराश होना उन्होंने सीखा नहीं। जीवन और शायरी का जो सामन्जस उन्होंने स्थापित कर दिखाया वह आज के क्षणिक प्रचार–प्रसार की ओर भागते तथा दौड़ते लोगों के लिए प्रेरणा स्त्रोत है।

❑❑❑

मान्यवर,

वाक़िफ़ साहब का उर्दू काव्य संस्करण "शहर में चांदनी" उनके जीवन काल में ही फ़ख़्रूद्दीन अली अहमद मेमोरियल कमेटी उत्तर प्रदेश सरकार लखनऊ से स्वीकृत हो चुका था। परन्तु वह उसे अपनी कमज़ोरियों की बिना पर न छपा सके।

उनकी मृत्यु के पश्चात ये ज़िम्मेदारी हमने अपने कमज़ोर कंधों पर ले ली। इस काम को अंजाम देने में बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उस मालिक के सहारे कोशिश करती रही और मालिक ने सफ़लता दी।

उर्दू के संस्करण से लेकर हिन्दी तक मरहूम के कुछ मुख़लिस दोस्तों ने भरपूर सहयोग किया जिनमें जनाब मज़हर रायबरेलवी, वज़ीर हसन, वज़ीर, ज़की अहमद, हसन रायबरैलवी, ज़मा सिद्दीकी, इक़बाल ज़फ़र, रईस बल्लवी, क़मर रायबरेलवी, विलायत, जाफ़री, शबनम नक़वी, रहबर रायबरेलवी, मुश्ताक़ नक़वी, एजाज़ रायबरेलवी, अपने मुफ़ीद मश्विरों से समय–समय पर नवाज़ते रहे, जिसके नतीजे में उर्दू पुस्तक "शहर में चाँदनी" छप कर तय्यार हो गयी। और उस पुस्तक को उर्दू एकेडिमी द्वारा मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद एवार्ड से भी पुरस्कृत किया गया।

हमने मरहूम की काव्य शैली, भाषा, हिन्दी साहित्यकारों का प्रेम, और समयी तक़ाजों को देखते हुये उर्दू के साथ इस संस्करण को हिन्दी लिपि में भी छापना आवश्यक समझा इस प्रकार हिन्दी में लिखने का काम आरम्भ कर दिया गया आरम्भ में घर के सभी लोगों ने थोड़ा–थोड़ा लिखा। जनाब डाक्टर हैदर मुस्तफ़ाबादी साहब ने अपने पुत्र दिलशाद हैदर को हिन्दी कार्य में लगा दिया इस प्रकार हम सबने पंचपेपर पर पूर्ण काव्य उतारा। इसे रजिस्टर

पर जनाब ग़ुलाम हैदर साहब ने उतारा। कुछ पेपर खो जाने पर बाद में मेंरे बेटे और बहू ने इस काम को पूरा किया। अब इस की जांच एवं नोक पलक संवारना भी ज़रूरी था, कि लिखने में कोई त्रुटि तो नहीं रह गयी। इसे जनाब नाज़ प्रतापगढ़ी, ज़की अहमद साहब व ज़फ़र इक़बाल साहब ने नज़्र सानी करने में अपना अमूल्य समय दिया।

हिन्दी में तय्यार हो जाने पर मैंने कई लोगों से पुस्तक छापने की बात की, तब लोग ख़ुश हुये और इस कार्य को सराहा इसी सिलसिले में श्री कृष्णा बिहारी नूर,लखनवी साहब से लखनऊ में मुलाक़ात की उन्होंने डाक्टर मधुरिमा सिंह जी से मिलवाया, लेकिन समय के अभाव में अधिक बातें न हो सकी, क्योंकि वह उसी दिन विदेश जा रही थीं।.

आम सुझाव था कि उर्दू पुस्तक का विमोचन कर उन्हें बेचने पर जो धन प्राप्त हो उसे हिन्दी की छपाई पर लगाया जाये। परन्तु मेरे बेटे ने इस बात को नहीं पसन्द किया। उस का कहना था जब तक हिन्दी का संस्करण नहीं तय्यार होगा। उर्दू वाली किताब का विमोचन नहीं होगा। दोनों किताबों का विमोचन एक साथ होना उचित रहेगा। सभी लोग दोनों किताबें एक साथ लेकर जायें इसके लिए काफ़ी परिश्रम हम दोनों को करनी पड़ी। तब हिन्दी संस्करण प्रेस तक पहुँचा।

वाक़िफ़ साहब के पहले संस्करण में जिन मुक़तदिर हस्तियों ने भूमिका लिखी थी, उसे वह अपने हांथों से उन्होंने इस संस्करण में भी लिखा था। उनकी मृत्यु पर बहुत से चाहने वालों ने लेख एवं श्रद्धान्जलियाँ लिख कर दिये। उनमें कुछ लेख इक़्तसाबात के रूप में उर्दू की किताब में कुछ इस में दिये जा रहे हैं।

(शेष पृष्ठ 228 एवं 229 पर)

ख़ालिक़ बारी

(नज़रे अमीर ख़ुसरू)

(हिन्दी माँ की लोरी अपनी उर्दू बेटी के लिए)

ख़ालिक़" बारी सिरजन हार
तू ही एक विधा, करतार
तेरी इबादत सुबहो शाम
तुझको सज्दा बारम्बार
खालिक़ बारी सिरजन हार
तू जीवन है तू प्रकाश
तुझसे यह धरती आकाश
ये दरिया बादल तेरे
ये पर्वत जंगल तेरे
तेरे मौसम तेरे फूल
तेरी खुश्बू तेरे शूल
तेरे सहरा तेरी रेत
तेरे गुलशन तेरे खेत
लाफ़ानी हस्ती तेरी
ये रोशन बस्ती तेरी
कितने अनदेखे संसार
खालिक़ बारी सिरजन हार
तू मालिक है तू रहमान
तेरे पयम्बर और भगवान
मुल्कों मुलकों आये रसूल
धरती–धरती महके फूल
तेरे शायर तेरे फ़क़ीर
तेरे क़लम तेरी तहरीर
तेरे रहबर तेरे अमीर
तेरे राजा तेरे वज़ीर

ये ज्ञानी और विज्ञानी
उजली, काली पेशानी
लम्बे-लम्बे इनके हाथ
आग उजाला दोनों साथ
शोला शोला रंगे बहार
खालिक़ बारी सिरजन हार

तू आशा है तू उम्मीद
तुझ से होली तुझसे ईद
तेरा कलमा तेरी बात
इनसे रोशन है दिन रात
तूफानों में ऐ अल्लाह
तू है अनदेखा मल्लाह
सुख-दुख का सच्चा साथी
तन्हा का तन्हा साथी
कोई नहीं है ऐसा मीत
किसको होगी इतनी प्रीत
वेद हकीमी सब कुछ होय
"दिल का दर्द न जाने कोय"
ये दुनिया ना वो संसार
बिन तेरे सब कुछ बेकार
ख़ालिक बारी सिरजन हार
तू ही एक विधा करतार

'नॉत'

क़ुरआन मेरे दिल में उतरता चला गया
तारीख़ का जुलूस गुज़रता चला गया
तक्मीले–आदमी है मुहम्मद के रूप में
इन्सानियत का रूप निखरता चला गया

जैसे यह बादल, हवा, यह रोशनी सब के लिए
वैसे ही इस चन्द्रमा की चांदनी सब के लिए

आ चुका है आख़िरी पैग़म्बरे–राज़े–हयात
है मुहम्मद का पयामे–सरमदी सब के लिए

ज़िन्दगी है जिस्म की पाकीज़गी है रूह की
है ख़ुदा का यह कलामें–आख़िरी सब के लिए

हम अन्धेरे में अगर भटके तो है अपना क़ुसूर
आस्मां से आ रही है रोशनी सबके लिए

रहबरे–इन्सानियत वह हासिले–इन्सानियत
उसके नक़्शे–पा में 'वाक़िफ़' रहबरी सबके लिए

ऐ ग़ज़ल

ऐ ग़ज़ल दिल का आइना बन जा
कोई चेहरा कोई सदा बन जा

इक तख़ैयुल की इन्तिहा के बाद।
इक तसव्वुर की इब्तिदा बनजा ।।

एक पल की भी अहमियत है बहुत।
एक ही पल का आईना बन जा।।

एक है जिन का ज़ाहिरो बातिन।
उन फ़क़ीरों का हमनवा बन जा।।

संसनाती उदास रातों में।
कोई मासूम सी दुआ बन जा।।

दर्द–ए–हस्ती दिलों में चमका दे।
खुद ही इस दर्द की दवा बन जा।।

अपने दिल का चिराग़ रोशन कर।
आप ही अपना रहनुमा बन जा।।

गज़ल

आसूदा मुहब्बत का जहां ढूढं रहे हैं
इक आलमे बेसूदोज़ियाँ ढूंढ रहे हैं

इक वो कि लगाये हैं दिलोजां की बाज़ी
इक हम कि सुकूनें दिलोजां ढूंढ रहे हैं

आवाज़ के शोलों से चिरागाँ हैं ज़हां में
और हम कोई अन्दाज़े बयाँ ढूंढ रहे हैं

अब ग़र्क़ करे नाव को या पार लगादे
हम ऐसी कोई मौजे रवां ढूंढ रहे हैं

पाई हुई दुनिया तो संभाली नहीं जाती
खोयी हुई दुनिया के निशाँ ढूंढ रहे हैं।

इक उम्र से आवारा हैं इस शहर में 'वाकिफ़'
इक उम्र से ख़्वाबों का जहां ढूंढ रहे हैं

पुकार लो कि न जाने किधर निकल जायें
तुम्हें क़रीब न पा कर बहक रहे हैं क़दम

गज़ल

इश्क़ अभी मंज़िले तकमील में है
एक जन्नत मेरी तख़ईल में है

चांद का जिस्म किसी का भी सही
चांद का अक्स तो हर झील में है

दरिया दरिया है मुक़द्दस यारो
जो है गंगा में वही नील में है

वाइज़ो! मेरी भी फ़रियाद सुनो
कुछ मेरे दिल की भी इन्जील में है

हुस्न कितना भी गराँ हो 'वाक़िफ़'
नक़्दे जां इश्क़ की ज़म्बील में है

ग़ज़ल

करम के बाद सितम है सितम के बाद करम
कोई समझ न सका उस निगाह का आलम

रूला रहा है मुझे उसकी बेबसी का ख़याल
न बेरूख़ी की शिकायत न बेवफ़ाई का ग़म

कहां कहां न किया हमने इन्तेज़ार तेरा
कहां कहां से न गुज़रे तेरी तलाश में हम

पुकार लो कि न जाने किधर निकल जायें
तुम्हें क़रीब न पाकर बहक रहे हैं क़दम

तेरे ख़याल से मिलती है ज़िन्दगी की शराब
तेरी निगाह से क़ायम है मैकदा का भरम

है ज़िन्दगी के लिए ये फ़रेब भी 'वाक़िफ़'
वगरना ख़ूब समझते हैं उस निगाह को हम

ग़ज़ल

हां मुहब्बत को भी मौत आती है मर जाती है
ज़िन्दगी दे के ख़मोशी से गुज़र जाती है

रौशनी बन के अंधेरों से गुज़र जाती है
क्या तमन्ना है कि अंजाम से डर जाती है

कोई आलम हो मेरा नशा उतरता ही नहीं
इक नज़र है जो मेरे जाम को भर जाती है

इतनी मासूम कि मिलती ही नहीं उसकी नज़र
इतनी हुशियार कि हर दिल में उतर जाती है

मुझको पहचान गयी उसके बदन की ख़ुशबू
मेरे नज़दीक सबा आके ठहर जाती है

ज़ुल्फ़े हस्ती को कई बार संवारा लेकिन
इसकी फ़ितरत है बिखरना यह बिखर जाती है

बैठ जाती है क़रीब आके तेरी याद कोई
एक परछांई सी पास आके ठहर जाती है

एक दिन कहीं काटे नहीं कटता 'वाक़िफ़'
मैकदा है कि जहां रात गुज़र जाती है

ग़ज़ल

जहां वालो तुम्हें क्या हो गया है
जुनूं क्यूं इतना पैदा हो गया है

यह हस्ती किसकी हस्ती हो गयी है
यह चेहरा किसका चेहरा हो गया है

ख़ुदा के नूर से महरूम हो कर
ख़यालों में अन्धेरा हो गया है

न अपनी है न उसकी है ये हस्ती
कि हर लम्हा पराया हो गया है

बड़े ज़ोरों पे है क़ौमी सियासत
मगर इन्सान तन्हा हो गया है

न दे पाओगे अब इस दिल की क़ीमत
यह दिल अब बे तमन्ना हो गया है

फ़िज़ाओं में है इतना शोर 'वाक़िफ़'
कि यह तोता भी बहरा हो गया है

ग़ज़ल

बहार लूट लें, फूलों का क़त्ले–आम करें
वो जैसे चाहें गुलिस्तां का इन्तिज़ाम करें

ख़िज़ां के दौर में यह कह के चल दिया माली
गुल अपनी अपनी हिफ़ाज़त का इन्तिज़ाम करें

भरा है मैकदा कमजर्फ़ पीने वालों से
किसे रफ़ीक़ बनायें, किसे इमाम करें

ये शहर–ए–अहल–ए–हवस है निकल चलो यारो
यहां से दूर किसी मैकदे में शाम करें

हज़ार दर्द सही जुर्रअते तबस्सुम देख
ग़मों का जश्न मनायें ख़ुशी का नाम करें

जहां मिले थे वहीं एक बार फिर मिल लें
उसी मुक़ाम पे यह दास्तां तमाम करें

ख़राब हालों में वह लोग भी मिले 'वाक़िफ़'
नज़र झुका के फ़रिश्ते जिन्हें सलाम करें।

गज़ल

बदले हुए हालात से मायूस न होना
इन्सान के जज़्बात से मायूस न होना

यह रात उसी की है, सहर भी है उसी की
इस दर्द भरी रात से मायूस न होना

हर दिल से उदासी का भरम तोड़ते रहना
मायूस ख़यालात से मायूस न होना

माना कि बहुत आग है माहौल में लेकिन
इस मुल्क की बरसात से मायूस न होना

दुनिया से बहुत आस लगाना न मेरे दोस्त
दुनिया की किसी बात से मायूस न होना

कुछ लोग ज़रा देर में खुलते हैं किसी से
पहली ही मुलाक़ात से मायूस न होना

यह रंग, यह माहौल बदल जायेगा 'वाक़िफ़'
बदले हुए हालात से मायूस न होना

पहाड़ी नदी

(जिसे मैंने एक लड़की के रूप में भी देखा है)

एक पहाड़ी नदी गुनगुनाती चली
झूमती नाचती मुस्कुराती चली
ज़िन्दगी के मधुर गीत गाती चली
एक पहाड़ी नदी गुनगुनाती चली

अपने आँचल में ठंडी हवाएं लिए
अपने जूड़े में काली घटाएं लिए
सुबह के आइने में संवरती हुई
झिलमिलाते उफ़ुक़ से उतरती हुई
रौशनी और कुहर से गुज़रती हुई
चाल जैसे घटा में पवन मस्त हो
जैसे जंगल में कोई हिरन मस्त हो
नौजवानी में उठता बदन मस्त हो
दिन को रंगीं नज़ारों का ज़ेवर मिला
रात आई सितारों का ज़ेवर मिला
धूप और चांदनी में नहाती चली
एक पहाड़ी नदी गुनगुनाती चली

राह देखी नहीं राह जानी नहीं
मुश्किलों से मगर हार मानी नहीं
ज़िद में आकर चटानों ने टोका तो क्या
अपनी बाहों में राहों ने रोका तो क्या
दिन गुज़रते रहे रूत बदलती रही
बेख़बर अपने रस्ते पे चलती रही
जंगलों के अंधेरों से घबरा गयी
चलते चलते घने शहर में आ गयी
शोख़ पायल की झंकार कम हो गयी

शहर में आक रफ़्तार कम हो गयी
पाँव में बेबसी- का गहन लग गया
जिस्म में गन्दगी का गहन लग गया
साफ़ दामन की पाकीज़गी खो गयी
वह जवां जिस्म की रोशनी खो गयी
रोशनी में सियाही मिलाते रहे
बेवफ़ा प्यास अपनी बुझाते रहे
तेरी मौजो से तस्कीन लेते रहे
ले के अमृत तुझे ज़हर देते रहे
डगमगाती चली लड़खड़ाती चली
एक पहाड़ी नदी गुनगुनाती चली
क्या यह तेरी लगन रायेगां जायेगी
ग़म न कर तेरी मंजिल ज़रूर आयेगी
कल समन्दर की आग़ोश मिल जायेगी
ज़ख़्म घुल जायेंगे रूह खिल जायेगी
नग़मा मिल जायेगा साज़ पहचान ले
अपनी फ़ितरत की आवाज़ पहचान ले
फिर उसी रंग में फिर उसी जोश में
मैं समन्दर हूँ आ मेरी आग़ोश में
मैं न पूछूँगा दामन में धब्बे हैं क्यूँ
मैं न सोचूंगा यह लोग हँसते हैं क्यूँ
मेरे आगे तेरा कोई माजी नहीं
मैं मुहब्बत का शायर हूँ क़ाज़ी नहीं
फिर उसी रंग में फिर उसी जोश में
मैं समन्दर हूँ आ मेरी आग़ोश में
सुन के यह बात वह मुस्कुराती चली
एक पहाड़ी नदी गुनगुनाती चली

ग़ज़ल

आरज़ू मौजे-बे वतन जैसे
तेरी ख़ुश्बू चमन चमन जैसे

झिलमिलाता हुआ नदी में चाँद
आइने में तेरा बदन जैसे

लाल फूलों पे शाम की रंगत
सो के जागे हुए नयन जैसे

किस के दिल को न जाने कब छूले
प्यार बहकी हुई पवन जैसे

हाय यह सांवले हंसीं बादल
भीगे भीगे हुए बदन जैसे

कहके एक बात झुक गयीं नज़रें
आइना देख कर दुल्हन जैसे

जल के बुझना है बुझके जलना है
ज़िन्दगी शम्मे अंजुमन जैसे

मेरे अश्कों पे वह नज़र 'वाक़िफ़'
ओस को चूमती किरन जैसे

नदी और शाम

फिर वह सूरत हमें आती है नज़र पानी में
हो चला शाम के जादू का असर पानी में

ढ़ल गयीं शक्ल में बचपन की सुहानी यादें
जैसे दिखलाई पड़े बर्गो शजर पानी में

जैसे एक रंग सा, एक ख़्वाबसा, एक जादूसा
वह दमकता सा बदन ता–ब–क़मर पानी में

देखने के लिए भीगे हुए मुखड़े की बहार
आइना बन गया यह चांद, उतर पानी में

ये दमकते हुए तारे ये चमकते से चिराग़
दूर तक बहते हुए लाल–ओ–गुहर पानी में

जाने किस सिम्त से आवाज़ का पत्थर आया
टूट कर फैल गया अक्स–ए–नज़र पानी में

दो शेर

भटका रहा है क्या–क्या झूटा क़यास मेरा
तुम हो करीब लेकिन दिल है उदास मेरा

मैं रास्तों में तन्हा फिरता हूँ अब बरहना
तुम थे सिंगार मेरा तुम थे लिबास मेरा

"चल अपने घर"

चल अपने घर चल दीवाने क्या देस बिदेस फिरे मारा
पत्थर चेहरे दिल वीराने क्या देस बिदेस फिरे मारा

छम–छम बरखा आई होगी सब ख़ालीताल भरे होंगे
बाग़ों पे घटा छाई होगी सब सूखे पात हरे होंगे
क्या ताने होगीं झूलों पर क्या मेले आम तरे होंगे
वह मुखड़े जाने पहचाने क्या देस बिदेस फिरे मारा
चल अपने घर चल दीवाने क्या देस बिदेस फिरे मारा

पौधों के बदन से मौसम की भीगी ख़ुश्बू आती होगी
खेतों से कच्चे चावल की मीठी ख़ुश्बू आती होगी
हर आहट हर पगडन्डी से कोई ख़ुश्बू आती होगी
बे मन्ज़िल रस्ते अंजानेक्या देस बिदेस फिरे मारा
चल अपने घर चल दीवाने क्या देस बिदेस फिरे मारा

सूरज अब भी छुपता होगा मस्जिद की मिनारों के पीछे
एक रंग हसीं बिखरा होगा ख़ामोश नज़ारों के पीछे
तोतों की सदा आती होगी बगलों की क़तारों के पीछे
वो किरनों के ताने बाने क्या देस बिदेस फिरे मारा
चल अपने घर चल दीवाने क्या देस बिदेस फिरे मारा

बचपन के ख़्वाबों की परियाँ आई हैं तुझे ले जाने को
क्यों इनको अकेला छोड़ दिया दर दर की ठोकर खाने को
कहते हैं हवाओं के झोंके बरसात की रुत है आने को
चल तुझको बुलाया है माँ ने क्या देस बिदेस फिरे मारा
चल अपने घर चल दीवाने क्या देस बिदेस फिरे मारा

सई और समन्दर

बम्बई
बम्बई, मसरूफ़ इन्सानों का इक खारा समन्दर
जगमगाती रोशनी के झिलमिलाते रंग
जिन में सख़्त चट्टानें छुपी हैं
और पसमन्ज़र में एक गहरा अन्धेरा
एक दूजे को कुचलती काटती बेरहम लहरें
ख़ुद कुचल जाएं कहीं एक पल जो ठहरें
मेरा दिल नदिया का मीठा एक क़तरा
वह भी उसके शोरो शर में खो गया है
और शायद ख़ुद भी खारी हो गया है
हैं वही चेहरे मगर चेहरे पे अपना पन कहां है
दिल में वह इन्सानियत के प्यार की धड़कन कहां है
प्यार की दौलत अगर खो दी तो क्या बाक़ी बचेगा
हम सभी मिट जायंगे
बस आसमां पर एक ख़ुदा बाक़ी बचेगा
मैं मगर मायूस क्यूं हूँ
हैं इसी खारे समन्दर में मुहब्बत के जज़ीरे
हैं इसी पत्थर में चिन्गारी इसी पत्थर में हीरे
दूर पर वह टिमटिमाती रोशनी
जैसे दुल्हन पलकें उठाये धीरे धीरे
झिलमिलाती मुस्कुराती
दूर जाती पास आती
हर थके हारे मुसाफ़िर को बुलाती
मैं थका हारा मुसाफ़िर तो नहीं हूं
मैं हू पारा जिसकी हस्ती टुकड़े टुकड़े हो गयी है
सोचता था प्यार से कोई इसे फिर जोड़ देगा
किसको फ़ुर्सत है, यहां किसको पड़ी है

शहर में ख़ुद ही क़यामत की घड़ी है
खै़र इस बिखरी हुई हस्ती को मैं ख़ुद जोड़ लूगा
क़तरा क़तरा उठ रहा हूँ शोरोशर के दरमियां से
और एक दिन बन के बादल चल पडूंगा मैं यहां से

अपनी अपनी ख़ुशी

आहू अपनी उमंग में ख़ुश हैं
पंछी अपनी तरंग में ख़ुश हैं

धीमी धीमी फुहार पड़ती है
पत्तियाँ जल तरंग में ख़ुश हैं

आती जाती रहे बहार–ओ–ख़िज़ां
फूल कांटों के संग में ख़ुश हैं

शाख़ें बोझल हैं ख़ुशंबुऐ गुल से
भवंरे उसकी उमंग में ख़ुश हैं

झील की बेक़रार लहरें भी
अपनी दुनियाए तंग में ख़ुश हैं

हम अवध के जवान–सादामिज़ाज
अपने मुर्ग़–ओ–पतंग में ख़ुश हैं

ज़िन्दगी ज़िन्दगी नहीं, न सही
ज़िन्दगी की उमंग में ख़ुश हैं

ईद का दिन यह सुबह होली की
जो हैं सब अपने रंग में ख़ुश हैं

और दुनिया के यह सियासतदां
सिर्फ़ नफ़रत की जंग में ख़ुश हैं

ग़ज़ल

मैं वह नहीं जिसको चाहा था, मैं तो उसका साया हूँ
तुझे ढूढने निकला था ख़ुद को भी कहीं खो आया हूँ

तू कांटों से घिरा फूल है, मैं शबनम की उड़ती बूंद
तू पत्थर से घिरी झील है, मैं बादल का साया हूँ

तू धरती पर गिरी बेल है मैं पीपल की टूटी शाख़
तेरी चाह में, तेरी राह में, मैं ख़ुद टूट के आया हूँ

मेरे वतन की प्यारी गलियो, शाद रहो आबाद रहो
तुम क्या जानो तुमसे बिछड़ कर, मैं कितना घबराया हूँ

यह नर्म हवा की हमदर्दी, यह तन्हाई का अपनापन
बाहर बच्चों की आवाज़ें, दिल में आंगन का सूनापन

ग़ज़ल

ये महक अपने ख़यालों में बसा ले जाऊँगा।
शहर में भी सब्ज़ बाग़ों की हवा ले जाऊँगा।।

झिल मिलाती आँख से अहद–ए–वफ़ा ले जाऊँगा।
और इस दुनिया में क्या है और क्या ले जाऊँगा।।

ये मुहब्बत, ये तबस्सुम, ये सदा ले जाऊँगा।
फिर मुझे मिलना है मैं तेरा पता ले जाऊँगा।।

ग़म के सहरा में न बहकेगी ये मेरी तश्नगी
तेरी आंखों से मैं इतनी मय चुरा ले जाऊंगा

जब भी थक जाऊँगा तुम ही आसरा दोगे मुझे
तुम से मिल कर ज़िन्दगी का हौसला ले जाऊँगा।

क़त्ल करके छोड़ देगें जब तुझे अहल–ए–हवस
लाश तेरी अपने काँधे पर उठा ले जाऊँगा।

आसमाँ पर ले के जायेंगे ये अपना मालो–ज़र
मैं भी 'वाक़िफ़' कुछ ग़रीबों की दुआ ले जाऊँगा।

ग़ज़ल

प्यार ले कर जिधर से गुज़रे हैं
क्या नज़ारे नज़र से गुज़रे हैं

हर नज़र ने सनम नहीं देखा
संग तो हर नज़र से गुज़रे हैं

है यह ख़ुशबू उन्हीं के आने की
या अभी वह इधर से गुज़रे हैं

हर हसीं शै बसी है यादों में
यूं तो हम बेख़बर से गुज़रे हैं

सूली, तन्हाई ज़हर का प्याला
ख़्वाब किस–किस सफ़र से गुज़रे हैं

ग़ौर से देखिये निशान–ए–क़दम
हादसे हर डगर से गुज़रे हैं

दिल की इक मौज के लिए 'वाक़िफ़'
कितने तूफ़ान सर से गुज़रे हैं

दौलत से मिली है न सियासत से मिली है
इन्सान को तहज़ीब मुहब्बत से मिली है

हर जज़्ब–ए–ख़ामोश को पहचाना है हमने
यह दर्द की दौलत हमें क़िस्मत से मिली है

जब कोई दुःखी हो तो दुःखी होता हूँ मैं भी
यह चीज़ तेरे ग़म की रिफ़ाक़त से मिली है

रुकती है कहां जाके हर इक शाम की ख़ुश्बू
यह बात तेरी ज़ुल्फ़ की निकहत से मिली है

मालूम न था उसको मुहब्बत भी है मुझसे
मुझको यह ख़बर तेरी रक़ाबत से मिली है

'वाक़िफ़' मेरी दुनिया तो है इक़ जहदे मुसलसल
वह और हैं दुनिया जिन्हें क़िस्मत से मिली है

ग़ज़ल

आप अपनी मिसाल है दुनिया
किस हसीं का ख़याल है दुनिया

मिल चुके सैकड़ों जवाब मगर
आज भी इक सवाल है दुनिया

अपनी अपनी तलाश अपनी नज़र
अपना अपना ख़याल है दुनिया

ढूँढिएगा कहां मिसाल इसकी
ख़ुद ही अपनी मिसाल है दुनिया

हर अमल ख़ुद है एक रद्दे–अमल
ख़ुद ही अपना मआल है दुनिया

ग़ज़ल

ये मुहब्बत भी कोई ठुकराने वाली चीज़ है
दिल में रख लो राह में काम आने वाली चीज़ है

और कोई रूप हो वह और कोई नाम हो
ये मुहब्बत खोके फिर मिल जाने वाली चीज़ है

तुम से इतना प्यार है मुझको ये अन्दाज़ा न था
यह जुदाई तो बहुत तड़पाने वाली चीज़ है

कोई परदा हो, कोई महफ़िल हो, कोई भीड़ हो
उसकी सूरत दूर से दिख जाने वाली चीज़ है

जिस्म का पाना ही 'वाकिफ़' प्यार की मंज़िल नहीं
इस नदी में और भी कुछ पाने वाली चीज है

ग़ज़ल

खेल मौजों का ख़तरनाक सही, क्या मैं इस खेल से डर जाऊँगा
फिर कोई लहर पुकारेगी मुझे, फिर मैं दरिया में उतर जाऊँगा

ख़ूबसूरत हैं यह आंखे' लेकिन, क्या मैं आंखों में ठहर जाऊँगा
ख़्वाब की तरह से देखा है तुम्हें, ख़्वाब की तरह बिसर जाऊँगा

शक्ल बन जाऊँगा बादल में कभी, कभी पुर्वा में उभर जाऊँगा
मैं किसी याद का झोंका बनकर, तेरे आँगन से गुज़र जाऊँगा

यह मुहब्बत मुझे ताक़तदेगी, हौसला देगी यह हिम्मत देगी
रोशनी तेरी नज़र से लेकर, हर अँधेरे से गुज़र जाऊँगा

कोई मक़सद न कोई मुस्तक़बिल कोई साथी है न कोई मंज़िल
तुमको जाना है जहां तुम जाओ, क्या बताऊँ मैं किधर जाऊँगा

क्यूं नहीं मुझको भी प्यारा है वतन, है मगर सारी ज़मी' अपना चमन
किसी आंगन में खिला हूँ 'वाक़िफ़' किसी धरती पेबिखर जाऊँगा।

मुझको तन्हा पाके वह तस्वीर यूँ गोया हुई
फूल मेरे क्या हुये मेरी अंगूठी क्या हुई

उम्र के हर मोड़ पर मैंने पुकारा है तुझे
बढ़ते–बढ़ते यह सदा ख़ुद एक सन्नाटा हुई

ऐश की मय चन्द रातों के नशे तक रह गयी
तेरे ग़म की तिश्नगी बादल बनी दरिया हुई

जब तलक उन मस्त आखों से शनासाईन थी
प्यास मेरी मैकदा दर मैकदा रूस्वा हुई

क़ता

जब भी हाथों में जाम लेते हैं
ग़म से पत्थर का काम लेते हैं
आप जख़्मी हुए हैं काटों से
फूल से इन्तिक़ाम लेते हैं

क़तआत

तख़ईल की हसीन रवानी में बह गये
भूले हक़ीक़तों को, कहानी में बह गये
पानी में उतने डूब के शायद नहीं मरे
जितने कि इस शराब के पानी में बह गये

शऊर–ए–इन्साँ की क्या हक़ीक़त, कभी अन्धेरा, कभी उजाला
अज़ीम इन्साँ से बालातर है क़ज़ा का छोटा सा इक निवाला
अजीब हैं तेरे खेल मालिक, ग़लत नहीं कोई काम तेरा
किसी को दुखदे के ज़िन्दगी दी किसी को सुखदे के मार डाला

प्यार की बात बताएं कैसे
यह ग़ज़ल उसको सुनाएं कैसे
फूल इक चुन लिया है लेकिन
उसके जूड़े में लगाएं कैसे

ज़िन्दगी काम भी है प्यार भी है ग़ीत भी है
नग़मा बन जाए मशीनों में वह संगीत भी है
न बुरा मान कि दुनिया की यही रीत भी है
तेरा दिल हार न जाये तो यहां जीत भी है
एक परछायीं सी बचपन से है मेरे हमराह
मैं अकेला नहीं कोई तो मेरा मीत भी है

शराब

लगाओ आग न ख़ुद अपने आशियाने में
तुम्हे क़सम है न जाओ शराब ख़ाने में

यह घर का बाग ये मासूम फूल से मुखड़े
हज़ार जाम हैं आखों के मुस्कुराने में

न दोस्ती न मुहब्बत न ग़म न हिज्र–ओ–विसाल
कोई भी जान नहीं है किसी बहाने में

इसे लगाओ किसी नेक काम में यारो
बहुत से काम हैं दुनिया के कारख़ाने में

यह ज़िन्दगी है बड़ी क़ीमती मेरे प्यारो
जवानियां न जलाओ श़राब ख़ाने में

पलट भी आओ कि तुम रास्ते से 'वाक़िफ़'' हो
बग़ैर नशे की मस्ती भी है ज़माने में

पन्द्रह अगस्त

सदियों की ज़ंजीरें टूटीं हुआ वतन आज़ाद
आज ज़मीं आज़ाद हमारी यह तन मन आज़ाद

आज़ादी तोहफ़ा है ख़ुदा का
ख़ूने शहीदाँ रंग हिना का
जैसे आँचल बाद–ए–सबा का
यह दिन झोंका तेज़ हवा का
पूर्वा, बादल, दरिया, लहरें, किरन किरन आज़ाद।

सुन ले जितनी आज़ादी है
पाबन्दी में आज़ादी है
वरना सबकी बर्बादी है
हर जीवन पर पाबन्दी है हर जीवन आज़ाद।

कोई भी हस्ती हेच नहीं है
कोई भी बच्चा नीच नहीं है
जोति कहीं की जन्म कहीं है
शायर जोगी निश्छल धर्मी, प्रेमी मन आज़ाद।
सदियों की ज़न्जीरें टूटीं, हुआ वतन आज़ाद।।

आख़री कलाम

('सलाम' मछली शहरी और 'नाज़िश' प्रतापगढ़ी के नाम)

हम चले शहर के वासियो ख़ुश रहो
दोस्तो ख़ुश रहो, दुशमनो ख़ुश रहो

थी शिकायत मगर अब शिकायत नहीं
तुम जहां भी रहो भाइयो ख़ुश रहो

ज़ुल्म से तुममें लड़ने की हिम्मत तो है
ख़ुश रहो शहर के मन चलो ख़ुश रहो

आप दोनों बराबर हैं मेरे लिए
आलिमों ख़ुश रहो जाहिलो ख़ुश रहो

कोई कुछ भी कहे तुम हो शाने चमन
चहचहाती हुई बुलबुलो ख़ुश रहो

तरशी ज़ुल्फों की कलियां महकती रहें
झिलमिलाते हुए आंचलो ख़ुश रहो

आज कम हो गया गांव का रास्ता
गुनगुनाती हुई पायलो ख़ुश रहो

तुमको छूने की कोशिश में दिन कट गया
दूर जाती हुई तितलियो ख़ुश रहो

मेरे जज़्बात ही ख़ुद हैं क़ातिल मेरे
फिर भी दूंगा दुआ कातिलो ख़ुश रहो

एक रूमाल

यह एक छोटा सा रूमाल मेरी जन्नत है
कि इसमें है किसी मासूम प्यार की ख़ुश्बू

कहीं पे अश्क–ए–मुहब्बत के धुधंले–धुंधले निंशा
कहीं बसी है ग़मे–इन्तिज़ार की ख़ुश्बू

झलक रही है कहीं मेरे दिल की बेताबी
छलक रही है कहीं जिस्मे यार की ख़ुश्बू

कहीं हसीन लबों की शराब की मस्ती
कहीं जवान बदन के ख़ुमार की ख़ुश्बू

हज़ार फूल ख़िलेगें ख़िजां के मौसम में
ठहर गयी है चमन में बहार की ख़ुश्बू

यह एक छोटा सा रूमाल मेरी जन्नत है

इक तरफ ऐश की ज़िन्दगी थी इक तरफ प्यार की बांसुरी थी
एक ग़मगीन लड़की खड़ी थी मैने चुपके से बंसी उठा ली

ग़ज़ल

नज़र मिले तो ज़रा देर को ठहर जाना
फिर अजनबी की तरह पास से गुज़र जाना

नसीब हो जो कहीं उसके गेसुओं की महक
मेरे क़रीब से बादे–सबा गुज़र जाना

इसी चमन में महकना भी मुस्कुराना भी
इसी ज़मीं पे गुलों की तरह बिखर जाना

अभी फ़ज़ाओं में पर्वाज़ तो करो 'वाक़िफ़'
किसी शजर पे कहीं शाम को ठहर जाना

दो शेर

उसके जाने से मुहब्बत की ख़ुशी जाती नहीं
चांद छुप जाता है लेकिन रोशनी जाती नहीं

मैक़दे में लौट आते हैं थके बहके क़दम
क्या करूं घर की तरफ़ कोई गली जाती नहीं

ग़ज़ल

गुज़र जाती है शब, दिल में अन्धेरा छोड़ जाती है
सहर जलती हुई राहों पे तन्हा छोड़ जाती है

किसी को देख पाता हूँ न मैं पहचान पाता हूँ
ख़ुमार–ए–मय की तल्ख़ी ऐसा पर्दा छोड़ जाती है

कहीं चलती है मेरे साथ आहट तेरे क़दमों की
कभी उलझी हुई राहों पे तन्हा छोड़ जाती है

गुज़र सकती हैं जिसकी याद में सदियां जुदाई की
मुहब्बत जाते जाते ऐसा लम्हा छोड़ जाती है

ख़ुदी की राह से 'वाकिफ़' अकेले ही गुज़रना है
यहां तो रोशनी भी सिर्फ़ साया छोड़ जाती है

ग़ज़ल

तुफ़ान है ऐसा कि ठहर भी नहीं सकते
छोटी से यह हस्ती है बिखर भी नहीं सकते

जीना नहीं आसान यहां ख़ुद को बचा के
अपनी तो यह मुश्किल है कि मर भी नहीं सकते

देखो हमें हम जलते हैं दिन रात यहां पर
क्या तुम यहां इक रात ठहर भी नहीं सकते

अब दूर हो इतने कि मुलाक़ात हो शायद
नज़दीक थे इतने कि बिसर भी नहीं सकते

'वाकिफ़' यह असीरी है कि अज़्मत का भरम है
बैठे हैं, बुलन्दी से उतर भी नहीं सकते

ग़ज़ल

दिल तुझे भूल गया है शायद
यह भी जीने की अदा है शायद

कहीं रुकते नहीं अपने भी क़दम
वह मुझे ढूंढ़ रहा है शायद

धड़कनों से भी चुभन होती है
दिल में कुछ टूट गया है शायद

होश आता है तो रो लेता हूँ
मैकशी एक सज़ा है शायद

मौत आ आ के पलट जाती है
ज़िन्दगी मां की दुआ है शायद

कोई तस्वीर बनालो 'वाकिफ़'
कुछ लहू दिल में बचा है शायद

ग़ज़ल

बिन तेरे यूँ हयात गुज़री है
जैसे जंगल में रात गुज़री है

अब अकेला न छोड़ ऐ ग़मे–दिल
ज़िन्दगी तेरे साथ गुज़री है

क्या बताएं कहां गुज़रनी थी
मैक़दे में जो रात गुज़री है

मौत को नज़्र दे के अपना लहू
ज़िन्दगी की बरात गुज़री है

हम से पूछो कि ज़िन्दगी क्या है
हम पे हर वारदात गुज़री है

हम को 'वाक़िफ़' ख़ुदी का होश न था
बेख़ुदी में हयात गुज़री है

ग़ज़ल

अपनी मंज़िल का पता दे ज़िन्दगी ऐ ज़िन्दगी
दूर ही से मुस्कुरादे ज़िन्दगी ऐ ज़िन्दगी

उलझनों से दूर होकर देखलें फिर कोई ख़्वाब
एक ही शब को सुला दे ज़िन्दगी ऐ ज़िन्दगी

कोई आहट, कोई लहजा कोई ख़ुश्बू, कोई गीत
कुछ हमें भी आसरा दे ज़िन्दगी ऐ ज़िन्दगी

है हमारी ही ख़ुदी से तेरी अज़्मत तेरी शान
हम फ़क़ीरों को दुआ दे ज़िन्दगी ऐ ज़िन्दगी

तुझसे रूठा ही सही 'वाक़िफ़' मुग़न्नी है तेरा
याद रख चाहे भुला दे ज़िन्दगी ऐ ज़िन्दगी

ग़ज़ल

कौन कहता है कि जूड़े में सजा ले मुझको
अपनी सासों में ज़रा देर बसा ले मुझको

गन्दी नाली में हूँ मैं क़तर-ए-शबनम की तरह
ऐ समन्दर की हवा आके उठा ले मुझको

कभी तूफ़ां का हरावल, कभी तह का मोती
मौज ही ग़र्क करे मौज उछाले मुझको

मेरी धारा में हैं दुनिया के करोड़ों आंसू
किसकी हिम्मत कि जटाओं में सम्हाले मुझको

सारी दुनिया से मैं रूठा हूँ मुहब्बत के लिए
कोई चाहे तो मुहब्बत से मना ले मुझको

आज मैख़ाने से जाता हूँ हमेशा के लिए
मय भी वह चीज़ नहीं है जो सम्हाले मुझको

अब कोई छांव नहीं हद्दे नज़र तक 'वाक़िफ़'
किस जगह छोड़ गये चाहने वाले मुझको

ग़ज़ल

एक इक परछांई जीती जागती तहरीर है
रात इक सादा वरक़ है चाँदनी तहरीर है

यह कहानी चल रही है साहिलों के साथ–साथ
यह ज़मीं है एक कागज़ यह नदी तहरीर है

नाम सुनते हैं समन्दर का कभी देखा नहीं
अपनी क़िस्मत में यह छोटी सी नदी तहरीर है

इस ज़मीं को देखिए पानी बरस जाने के बाद
कैसी तस्वीरें हैं क्या क्या शायरी तहरीर है

ज़र्रा–ज़र्रा कह रहा है अपनी–अपनी दास्तां
एक इक पत्थर पे एक पूरी सदी तहरीर है

बन चुके हैं लाश 'वाक़िफ़' उन शहीदों के बदन
उनकी पेशानी पे लेकिन ज़िन्दगी तहरीर है

ग़ज़ल

देखा वह आसमान रौशन है
जिससे सारा जहान रौशन है

प्यार ही उम्र का उजाला है
प्यार से जिस्मो जान रौशन है

इनके मुखड़ों को देखता हूँ मैं
जिनसे सारा मकान रौशन है

यह किताबे चराग़ हैं 'वाकिफ़'
जिन से मेरी दुकान रोशन है

लोगों को हमख़याल बनाये हुए हैं लोग
बारीकियों का जाल बिछाये हुए हैं लोग
किसकी मजाल है जो कोई वार कर सके
मज़हब को अपनी ढाल बनाये हुए हैं लोग

ग़ज़ल

भटक कर रास्ते पर आ रही हैं ज़िन्दगी अपनी
वही नक़्शे क़दम फिर कर रहे हैं रहबरी अपनी

मैं फ़ानी भी हूँ लाफ़ानी भी, यह है ज़िन्दगी अपनी
कभी यह तीरगी अपनी कभी यह रोशनी अपनी

मुहम्मद का पयामे आख़िरी तफ़सीरे हस्ती है
इसी में रास्ता अपना इसी में ज़िन्दगी अपनी

ज़मीनो आसमां के नूर थोड़ा सा उजाला दे
हमारे वास्ते काफ़ी नहीं है रोशनी अपनी

नमाज़–ए–शौक़ भी है, शेर–ओ–नग़मा भी मुहब्बत भी
इबादत ही इबादत है यह पूरी ज़िन्दगी अपनी

बहुत कुछ हौसले थे मेरे दिल में भी मगर दाता
सिमट कर अपने दिल में रह गयी दरियादिली अपनी

शराबों में कहां 'वाक़िफ़' जो मस्ती है मुहब्बत में
किसी भी मैकदे में बुझ न पायी तिशनगी अपनी

मैं देखता हूँ

मैं देखता हूँ
गुलाब की शाख़ पर महकती हुई कली को
वह प्यार से देखती है उस गुल को
जो दूसरी शाख़ पे खिला है
क़रीब ही एक ज़र्द पत्ती
उसे मुहब्बत से तक रही है
मैं देखता हूँ
कनार–ए–दरिया हसीन जोड़े टहल रहे हैं
किसी के मुखड़े पे सांवला पन
किसी के चेहरे पे रोशनी है
किसी के चेहरे पे है उदासी
किसी के चेहरे पे ज़िन्दगी है
किसी का जूड़ा बग़ैर बेनी
किसी में सादा सी एक कली है
कहीं है बाक़ी अभी उजाला
कहीं–कहीं शाम हो रही है
मैं आज तन्हा हूँ
फिर भी तन्हाई का जैसे एहसास ही नहीं है
जो लोग ख़ुश हैं तो मैं भी ख़ुश हूँ
मैं देखता हूँ रसोई में उसको काम करते
वह मुझको इतनी हसीन लगती है क्या बताऊं
कि दिल धड़कता है बात करते
पुर मुसर्रत हैं नौजवां है
जो दूर से इतनी संगदिल है
क़रीब आये तो मेहरबां है
किसी भी बम में नहीं है ताक़त
कि ज़िन्दगी को तबाह कर दे
हज़ार रंगों में डूबी सूरज की रोशनी को तबाह कर दे

ग़ज़ल

बढ़ती रही गर फिरक़ापरस्ती हाल वतन का क्या होगा
होती रही जो ख़ून की बारिश रंग चमन का क्या होगा

ज़हर मिलाते हो नफ़रत का मन की मीठी नदियों में
नादानो इतना तो सोचो गंगो–जमन का क्या होगा

ज़ुल्मो–सितम की हद से गुज़र कर तू पागल हो जायेगा
रूह तेरी बेचैन रहेगी मेरे बदन का क्या होगा

राम और कृष्णा, मुहम्मद, ईसा, नानक किसके दुशमन थे
सारी दुनिया उनका चमन है उनके चमन का क्या होगा

किस–किस बस्ती को फूकोगे कितनी जानें मारोगे
वह दुशमन जो दिल में छुपा है उस दुशमन का क्या होगा

जो दुशमन हैं अहले वतन के उनको वतन से प्यार कहां
'वाक़िफ़' उनके पत्थर दिल में दर्द–वतन का क्या होगा

ग़ज़ल

ज़िन्दगी के रहनुमा भुला दिए गये
वह सबक़ किताब से उड़ा दिए गये

याद के निशान भी मिटा दिए गये
वह दरख़्त काट कर गिरा दिए गये

आदमी को बेयकीं बना दिया गया
आसमां निगाह से गिरा दिए गये

जिनका काम था हयात–ए–नौ की जुस्तुजू
मौत की तलाश में लगा दिए गये

जिनसे मिल रही थी ज़िन्दगी को रौशनी
वो चराग़ जान कर बुझा दिए गये

कल खिलेगी फूल बनके अपनी ज़िन्दगी
'वाकिफ़' आज ख़ाक में मिला दिए गये

क़तआत

गीत के हमराह चली यह ग़ज़ल की बात है
दोस्तो यह एकता अपने अमल की बात है
ज़िन्दगी थी ख़ूबसूरत मुख़तलिफ़ अन्दाज़ में
एक थे हम मुख़तलिफ होकर यह कल की बात है

--

ख़्वाबों की हसीं जादूगरी ले गयी मुझको
ख़ुश्बू था हवा-ए-सहरी ले गयी मुझको
फिर तेरे सिवा कोई मुझे ढूंढ़ न पाया
बचपन में ख़्यालों की परी ले गयी मुझको

--

कोई देता जो एक फूल हमें
उसका दामन गुलों से भर देते
शाम इतनी हसीन लगती है
कोई मिलता तो प्यार कर लेते

--

रात ख़्वाबों को सजाते गुज़री
सुबह किरनों को मनाते गुज़री
तुम गये घर का अन्धेरा न गया
ज़िन्दगी ख़ुद को जलाते गुज़री

--

चश्मे-साक़ी से ख़बरदार रहो
हादसा के लिए तै़यार रहो
फ़ैसला ज़र्फ़ का इस जाम पे है
आख़िरी जाम है हुशियार रहो

ग़ज़ल

ग़म में यह धोका मैं अकसर खा गया
अपनी परछाईं से टक्कर खा गया

फातहे–कौनोमकां थी जिसकी ज़ात
उसको अपनी ज़ात का डर खा गया

मुस्कुराहट, दर्द, लहजा सादगी
बेच कर सब अपने ज़ेवर खा गया

राह पर डाला था औरों के लिए
ख़ुद उसी पत्थर से ठोकर खा गया

वह कसौटी ही मेरे लायक न नहीं
जिस कसौटी पर मुझे परखा गया

हो के तन्हा दोनों दुशमन बन गये
घर को मैं 'वाकिफ़' मुझे घर खा गया

ग़ज़ल

मौत से आगे हमें यह ज़िन्दगी ले जायेगी
तीरगी के दरमियां से रोशनी ले जायेगी

दिन के सहरा में यह ख़ुशबू रायगाँ होगी नहीं
कुछ हवा ले जायेगी कुछ चांदनी ले जायेगी

यह ज़मीं मेरा वतन है आस्मां मेरा वतन
ज़िन्दगी लायी है मुझको, ज़िन्दगी ले जायेगी

जिसमें वादों के जंज़ीरे हैं उम्मीदों के जहां
उस समन्दर तक यह छोटी सी नदी ले जायेगी

आंसुओं को अपने आंचल में हवाएं ले गयीं
यह उदासी भी सहर की रोशनी ले जायेगी

कुछ ख़ुदी की राह से जायेंगे मंज़िल की तरफ़
और कुछ लोगों को 'वाक़िफ़' बे ख़ुदी ले जायेगी

इक तरफ़ है मौत 'वाक़िफ़' इक तरफ़ है ज़िन्दगी
क्या पता किस सिम्त हमको यह सदी ले जायेगी

नया साल आया

नया साल आया नये काम लेकर
नया रूप लेकर नये नाम लेकर

नये फूल, ख़ुश्बू नयी लेके आए
महक में नयी ज़िन्दगी लेके आए
हवाएं बहारों का पैग़ाम लेकर
नया साल आया नये काम लेकर

नये हौसले हैं नयी ज़िन्दगी है
वही रोशनी आज जैसे नयी है
नयी सुबह लेकर नयी शाम लेकर
नया साल आया नये काम लेकर

जो पिछड़े हुए काम थे हो रहे हैं
क़लम एक नयी ज़िन्दगी बो रहे हैं
हमें आगे जाना है आराम लेकर
नया साल आया नये काम लेकर

सूरज ग़ुरूब होगा तो चाँदनी मिलेगी
(मुश्ताक़ और सुरइया नक़्वी के लिए)

दिल की गली से आकर दिल की गली मिलेगी
किस को ख़बर थी मंज़िल खोई हुई मिलेगी

चुप चाप चल दिये थे तन्हाई के सफ़र पर
दिल को यक़ीं नहीं था मंज़िल कभी मिलेगी

जाती हुई हवा ने ये भी नहीं बताया
जो शाम जा रही है क्या फिर कभी मिलेगी

सहरा–ए–तशनगी में महके जो लब किसी के
ज़ुल्फ़ों की छांव बनकर तश्नालबी मिलेगी

जिस ज़िन्दगी के हमने देखे थे ख़्वाब मिल कर
तुम मिल गये तो इनकी ताबीर भी मिलेगी

वह सांवला सा मुखड़ा घर का चराग़ होगा
हर रोशनी में शामिल ये रोशनी मिलेगी

इक बेक़रार ख़ुशबू कर देगी दिल पे जादू
हर दम ख़्याल होगा हर पल ख़ुशी मिलेगी

जो ढूंढ़ लेगी वाकिफ़ खोई हुई मुहब्बत
उस ज़िन्दगी को जन्नत खोइ हुई मिलेगी

क़ुर्रतुल ऐन हैदर

क़ुर्रतुल ऐन हैदर को देखा
इक नदी में समन्दर को देखा

दर्द के शबनमी आंसुओं में
मुस्कुराते गुलेतर को देखा

उसकी तहरीर की रोशनी में
ज़िन्दगी के मुक़द्दर को देखा

यह भी जादू है उसके क़लम का
रूह के साथ पैक़र को देखा

जिस जगह लोग थे सर बसजदा
तेरे उट्ठे हुए सर को देखा

दिल में सच्चाइयों का उजाला
रुख़ पे किरनों के मन्ज़र को देखा

चल पड़े हम किनारे किनारे
दूर जाते जो सागर को देखा

आग का एक दरिया था 'वाक़िफ़'
डूबते जिसमें हर घर को देखा

ग़ज़ल

तन्हाई के सहरा में क्यों उम्र बसर करते
फूलों से मुहब्बत थी कांटों में गुज़र करते

हर बार मुहब्बत ने हस्ती को सम्भाला है
वरना तेरी दुनिया में हम कैसे बसर करते

मिलती जो न ये आंखें प्यासे ही चले जाते
मिलते न अगर ये लब हम होंठ न तर करते

कोई यहां लोहा था पत्थर थी कोई बसती
नग़्में थे मेरे ख़ुशबू, क्या उनपे असर करते

इस राह के राही क्या इस राह के रहबर क्या
मंज़िल ही नहीं कोई गुज़री है सफ़र करते

मौसम की हवाओं में घनघोर घटाओं में
आकाश पे देखा है दरिया को सफ़र करते

१५ अगस्त सन् १९८७

बेचैन दुःखी अबके आया पन्द्रह अगस्त
दुःख है बच्चो बेचैन दुःखी तुमने पाया पन्द्रह अगस्त

अपनों की नफ़रत से बोझल
अपनों के पत्थर से घायल
अपने ही तशद्दुद से ज़ख़्मी
अपनों के ख़न्जर से घायल
मौसम घायल पुरवा ज़ख़्मी
रिशते ज़ख़्मी वादे ज़ख़्मी
सजदे ज़ख़्मी पूजा ज़ख़्मी
हम ना शरमाऐ शरमाया पन्द्रह अगस्त
बेचैन दुःखी अबके आया पन्द्रह अगस्त

करते है इस्तक़बाल तेरा
अश्कों और उम्मीदों से
सपनों के सारे रंगों से
इन्सान अगर हम बन जाएं, हो जाये सुखी पन्द्रह अगस्त
फिर भी आज़ादी का साया पन्द्रह अगस्त
बेचैन दुःखी अबके आया पन्द्रह अगस्त

अलविदा

सब गये दूर तुम भी चले जाओगे
हो के मज्बूर तुम भी चले जाओगे
दे के इक ज़िन्दगी
प्यार की रोशनी
याद की चांदनी
बात करते हुए, मुस्कुराते हुए
पास बैठे हुए, दूर जाते हुए
तुम न होगे मगर तुम नज़र आओगे
सब गये दूर तुम भी चले जाओगे

बर्फ़ पिघलेगी जब वह हवा पाओगे
ऐ समन झील से तुम भी उड़ जाओगे
कुछ मगन, कुछ दुःखी, कितनी यादें लिए
दूर आकाश के टिमटिमाते दिए
हम सफ़र, राहबर
झिलमिलाती फ़िज़ा झिलमिलाते नगर
यह अन्धेरे उजाले का लम्बा सफ़र
तीरगी में भी इक चांदनी पाओगे
सब गये दूर तुम भी चले जाओगे

ये चमन वो चमन ये ज़मीं वो ज़मीं
एक ही गुलबदन, एक ही नाज़नीं
यह हमारी ज़मीं वो तुम्हारी ज़मीं
ज़र्रा–ज़र्रा जुड़ी है यह सारी ज़मीं
पर्बतों सागरों से गुज़रती हुई
चांदनी हर ज़मीं पर उतरती हुई
रंग–ओ–नस्ल–ओ–वतन के सनम तोड़ती
ख़ौफ़–ओ–नफ़रत के सारे भरम तोड़ती

आदमी आदमी दोस्ती का चलन
शम्मा जलती हुई अन्जुमन अन्जुमन
रिश्तए खूँ भी है रिश्तए दोस्ती
हमख़्याली भी है नग़मए दोस्ती
इश्क में भी है इक जलवए दोस्ती
इससे आगे भी है जज़्बए- दोस्ती
यह मुहब्बत कई रूप में पाओगे
सब गये दूर तुम भी चले जाओगे
फिर मिलन का यक़ीं है ख़ुदा का यक़ीं
इस दुआ का यक़ीं बे दुआ का यक़ीं
इन्तिहा का यक़ीं इब्तिदा का यक़ीं
ज़िन्दगी का यक़ीं आत्मा का यक़ीं
वो मिलेगा मुझे जो मेरी याद है
वो मिलेगा मुझे जो मेरा प्यार है
सिर्फ़ दुनिया नहीं हासिले ज़िन्दगी
जन्नतें और हैं क़ाबिले ज़िन्दगी
आस्माँ आस्माँ मंज़िले ज़िन्दगी
आगे–आगे अजब रोशनी पाओगे
सब गये दूर तुम भी चले जाओगे

किसी नाम से पुकारो

जिस नाम से पुकारो उसको ही पुकारोगे
जिस धाम से पुकारो उसको ही पुकारोगे

हर पाक नाम उसका हर नाम रोशनी है
वो सुबह का उजाला रातों की चांदनी है

उसके बग़ैर बिल्कुल बेमॉनी ज़िन्दगी है
दोहराओ चाहे जितना ये नाम ताज़ा तर है
हर सुबह ताज़ा तर है हर शाम ताज़ा तर है

सूरज ये चांद तारे मज़हर हैं सब उसी के
बादल हवा ये धारे नौकर हैं सब उसी के

धरती से आस्मां तक फैला है राज उसका
फ़िकर–ओ नज़र से आगे है साम्राज उसका

काले हों चाहे गोरे जल्वे हैं सब उसी के
बन्दे हैं सब उसी के सज्दे हैं सब उसी के

जिस नाम से पुकारो उसको ही पुकारोगे
जिस धाम से पुकारो उसको ही पुकारोगे

इलाहाबाद
(फ़सादात के सिलसिले से मुतास्सिर होकर)

नस्ल परस्ती, क़ौम परस्ती झूटी वतन परस्ती है
फ़िरक़ा परस्ती की नागिन सौ रूप बदल कर डसती है

संगम की ज़मीं लाल हुई किसके लहू से?
रंगीन हैं किस रंग से मासूम दुपटटे?
ये बहता लहू उसके ही बेटों का लहू है
जो पैदा हुए और मरे अपने वतन में
ये ख़ून अमीरों का ग़रीबों का लहू है
ये ख़ून क़लम का है अदीबों का लहू है
मासूम नई उम्र के ख़्वाबों का लहू है
मज़दूर का ये ख़ून है मेहनत का लहू है
देखो इसे ये देश की ख़िदमत का लहू है
आंसू ये वतन के हैं लहू भी है वतन का
संगम की ज़मीं लाल हुई किसके लहू से

रोटी थी न पानी न उजाले का पता था
झगड़ा न था ये हादसए कर्बोबला था
सन्नाटा था चीख़ें थीं कहीं शोर बपा था
पानी की तरह रात का अंधियारा खड़ा था

इक मौत का माहौल था वहशत की हवा थी
वह खौफ़ का आलम था वह दहशत की फ़िज़ा थी
इतना तो है मालूम कि हां ज़ुल्म हुआ था
ज़ालिम का पता है न मुहाफ़िज़ का पता है
करता ये सब कौन ये सब किसने किया है
नफ़रत में जो डूबा है जो हैवान बना है

इन्साफ़ भी ख़ामोश है दीवार भी ख़ामोश
रहबर भी हैं ख़ामोश क़लमकार भी ख़ामोश
अफ़साने हैं अख़बार में हालात नहीं हैं
बरबादी की साज़िश है फ़सादात नहीं हैं
जिस अह्द में जिस रूप में हो चाहे जहां हो
इन्साफ़ तो होना है यहां हो कि वहां हो
संगम की ज़मीं लाल हुई किसके लहू से

ग़ज़ल

दिलों में आग है जैसी भी जिसने ज़िन्दगी कर ली
किसी ने घर जला डाले किसी ने रौशनी कर ली

मशीनी आदमी ने शहर भर को क़त्ल कर डाला
मगर हमसे निगाहें मिल गईं तो ख़ुदकुशी कर ली

यहां फ़ुर्सत कहां थी दुशमनी की ज़िन्दगी कम थी
बढ़ाया हाथ जब उसने तो मैने दोस्ती कर ली

यह दुनिया ख़ूबसूरत है मगर मंज़िल नहीं यारो
कि इस संसार में किसने मुकम्मल ज़िन्दगी कर ली

मैं अपने रास्ते पर बेख़बर चलता रहा 'वाकिफ़'
किसी ने दोस्ती कर ली किसी ने दुशमनी कर ली

ग़ज़ल

हर कोई बिखरा हुआ टूटा हुआ
आदमी से आदमी रूठा हुआ

दिल का ये आलम तेरे जाने के बाद
जैसे कोई गांव हो लूटा हुआ

क़ाफ़िले भटके हुए बे रहनुमा
ज़िन्दगी का रास्ता छूटा हुआ

ये पड़ी है देख सच्चाई की लाश
बोलती आंखें गला घूंटा हुआ

मेरे चेहरे में ख़राबी कुछ नहीं
आईना है आपका टूटा हुआ

ये मिलन 'वाक़िफ़' ज़रूरी भी नहीं
तेज़ है धारा घड़ा फूटा हुआ

ग़ज़ल

बहुत से हादसे इंसान का दिल तोड़ देते हैं
हैं ऐसे लोग भी टूटे हुए दिल जोड़ देते हैं

बहुत बेज़ार हो जाते हैं जब दुनिया की ख़बरों से
ख़्यालों को हसीं यादों की जानिब मोड़ देते हैं

ख़्यालों और उमीदों में तेरा ही आसरा लेकर
ग़मों के सिलसिले को हम ख़ुशी से जोड़ देते हैं

हमारे शहर में चलती नहीं फ़िरक़ापरस्तों की
हमारे शेर 'वाक़िफ़' उनका भांडा फोड़ देते हैं

ग़ज़ल
(नज़्रे बेकल उत्साही)

दे के अपनी रोशनी चमका दिया
तूने ज़र्रे को कहां पहुंचा दिया

कुछ न था छोटा सा मैं एक नाम था
तूने मेरे नाम को फैला दिया

तूने जज़्बे को अता की शायरी
तूने ही आवाज़ को नग़्मा दिया

तेरा हर वादा है सच्चा ऐ ख़ुदा
तूने बिन मांगे हमें क्या–क्या दिया

भूल बैठा था मैं दर्दे–इश्क़ को
फिर से 'बेकल' ने मुझे तड़पा दिया

मैं ज़माने से बहुत मायूस था
इस मुहब्बत ने मुझे चौंका दिया

गांव में 'वाक़िफ़' खिला था एक फूल
जिसने पूरे मुल्क को महका दिया

ग़ज़ल

ज़िन्दगी की महफ़िल में अपनी ज़िन्दगी तन्हा
शहर में भटकती है जैसे चांदनी तन्हा

बुझ गये सितारे भी खो गये नज़ारे भी
इक तेरे न होने से रात हो गयी तन्हा

दौर–ए बदहवासी हैसब की रूह प्यासी है
हर तरफ़ उदासी है क्या करूं ख़ुशी तन्हा

दर्द के अन्धेरे में तेरी याद का आलम
जैसे दूर ज़ंगल में कोई रोशनी तन्हा

नग़्मा था तरंगें थीं प्यार की उमंगें थीं
एक दिल के बुझते ही हो गये सभी तन्हा

'वाक़िफ़' इस उदासी को यह चराग़ समझेगा
इसने भी गुज़ारी है पूरी ज़िन्दगी तन्हा

ग़ज़ल

हवा के गुनगुनाने से इन्हें तकलीफ़ होती है
हमीं क्या इक ज़माने से इन्हें तकलीफ़ होती है

उठा लो इस चमन से ऐ परिन्दो आशियां अपना
तुम्हारे चहचहाने से इन्हें तकलीफ़ होती है

हसीं मौसम है लेकिन बन्द करदो खिड़कियां सारी
हवा के तेज़ गाने से इन्हें तकलीफ़ होती है

तआरुफ़ क्या, तबस्सुम क्या, तकल्लुम क्या, तरन्नुम क्या
ख़ुशी के हर बहाने से इन्हें तकलीफ़ होती है

मुसर्रत है हर इक शै में, नज़र आती नहीं उनको
ख़ुद अपने मुस्कुराने से इन्हें तकलीफ़ होती है

हक़ीक़त को छुपाने से बढ़ेगी और बीमारी
बताएं तो बताने से इन्हें तकलीफ़ होती है

इन्हें दुनिया तो क्या जन्नत में भी सुख मिल नहीं सकता
गुलों के मुस्कुराने से इन्हें तकलीफ़ होती है

कोई रोये तो ख़ुश होते हैं ये अल्लाह के बंदे
किसी के मुस्कुराने से इन्हें तकलीफ़ होती है

इसी में ख़ैरियत है छोड़ दो ये शायरी 'वाक़िफ़'
तुम्हारे ही तराने से इन्हें तकलीफ़ होती है

ग़ज़ल

याद बनकर सिमट गई ख़ुशबू
दिल से आकर लिपट गयी ख़ुशबू

उससे पहला सा प्यार क्या मागें
खिल गया फूल बट गई ख़ुशबू

काग़ज़ी फूल थे मुहब्बत के
उड़ गया रंग घट गयी ख़ुशबू

कौन जाने कहाँ से आयी थी
किस चमन में पलट गयी ख़ुशबू

फूल मुरझा गये मगर 'वाक़िफ़'
मेरे दिल में सिमट गयी ख़ुशबू

क़ता

बाग़ में ये न बन में खिलते हैं
प्यार के फूल तन में खिलते हैं।
ग़ैर फ़ानी हैं गुल मुहब्बत के
सूख जायें तो मन में खिलते हैं।

मुतफ़रिक़ अशआर

उम्र भर जिसके तसव्वुर में जलाईं आखें
वो मिला तो उसे पहचान न पाईं आंखें

□□□

मैं मुन्तज़िर हूं लौट कर कोई सफ़र से आयेगा
चमक रही है जो डगर उसी डगर से आयेगा
इसी तरह बनेगा ज़िन्दगी का एक क़ाफ़िला
कोई इधर से आयेगा कोई उधर से आयेगा

□□□

ख़ुशियों का आइना है यह सुबहो शाम तेरी
आई है फिर कहां से ये ग़म की रात मेरी

□□□

पता नहीं कि ये बादल कहां बरसते हैं
चमन के फूल तो शबनम को भी तरसते हैं

□□□

यह जहां इतना हसीं है
मुझको जन्नत का यक़ीं है
रोशनी कितनी हसीं है
ये ख़ुशी कितनी हसीं है
ख़्वाब कितने ख़ूबसूरत
ज़िन्दगी कितनी हसीं है
मौत भी कुछ कम नहीं है

□□□

वही देखेगा वह जल्वा जिसे इसका यक़ीं होगा
हमें जिसने बनाया है वह ख़ुद कितना हसीं होगा

□□□

ग़ज़ल

रात बादल देर तक बरसा किये
नींद की एक बूंद को तरसा किये

रोज़–ओ–शब के हुस्न को देखा नहीं
उम्र भर सोया किये जागा किये

उसके रूख़ पर थी वफ़ाकी रोशनी
हम अन्धेरे में उसे देखा किये

कितनी मुददत से उसे देखा नहीं
कितनी सदियां हो गईं परदा किये

शहर के बुत इस लिए नाराज़ हैं
मैं गुज़र जाता हूँ बिन सज्दा किये

और भी थे रास्ते 'वाकिफ़' मगर
हम उसी का रास्ता देखा किये

क़ता

ध्यान तुझमें ही धरा रहता है
दिल मुहब्बत से भरा रहता है
दिल में है प्यार का सोना 'वाकिफ़'
हर कसौटी पे खरा रहता है

बिखरे फूल
(क़तआत)

कहीं भाषा का कोई रूप हुआ
कहीं भाषा का कोई नाम हुआ
कोई समझा कोई नहीं समझा
हर ज़ुबां में वो हमकलाम हुआ

□□□

इन्सान है वही जो कोई काम छोड़ जाये
अपनी किताब–ए–दिल पे कोई नाम छोड़ जाये
प्यासे नजाएं बाद में आएं जो तश्नालब
मैख़ाने में छलक़ता हुआ जाम छोड़ जाये

□□□

उनका दावा है कि आबाद न होने देंगे
उसका वादा है कि बर्बाद न होने देंगे

□□□

गीत

एक दिन रुके नहीं किसी भी गांव में
हम युँही चला किए धूप छाँव में

शाख़ शाख़ प्यार से लचकती रह गई
फूल फूल से महक छलकती रह गई
मोड़ पर कोई नज़र भटकती रह गई
दूर एक चूनरी झलकती रह गई
पत्तियां पुकारती रहीं हवाओं में
एक दिन रुके नहीं किसी भी गांव में

दिल में प्यार की लगन लगा के चल दिए
रास्ते में एक दिया जला के चल दिए
ग़म कोई मिला तो मुस्कुरा के चल दिए
जो गुज़र गई उसे भुला के चल दिए
तुम हमें मिले न शहर में न गांव में
एक दिन रुके नहीं किसी भी गांव में

हम तेरी तलाश में जिधर जिधर गये
ज़िन्दगी के रास्ते उधर–उधर गए
मौत के क़दम जहां ठहर–ठहर गए
ऐसे रास्तों से हंस के हम गुज़र गए
एक धाव दिल में लिए इक पांव में
एक दिन रुके नहीं किसी भी गांव में

दोस्तों की अन्जुमन पुकारती रही
हम नहीं रुके थकन पुकारती रही
तिश्नगी बदन बदन पुकारती रही
ज़िन्दगी वतन वतन पुकारती रही
कितना प्यार था ख़्याल की सदाओं में
एक दिन रुके नहीं किसी भी गांव में

शहर शहर ज़िन्दगी की मुस्कुराहटें
मोड़ मोड़ रोशनी की जगमगाहटें
गांव गांव मेहनतों की गुनगुनाहटें
हर क़दम पे आने वाले युग की आहटें
मंज़िलें चमक रहीं नई दिशाओं में
एक दिन रुके नहीं किसी भी गांव में

हम यूंही चला किए धूप छांव में
एक दिन रुके नहीं किसी भी गांव में

जाने किस वक़्त घर से निकले थे
फिर कभी घर का रास्ता न मिला

ग़ज़ल

गिला किसी को नहीं तेरी कज अदाई का
तेरी नज़र को सलीक़ा है बेवफ़ाई का

मिले न होते तो आसान था भुला देना
मिले तो और भी ग़म बढ़ गया जुदाई का

बहुत क़रीब न आओ बहुत न प्यार करो
कहां से लाएंगे हम हौसला जुदाई का

उदास क्यों हो यह दामन से छूट जायेगा
हमारा प्यार तो धब्बा है रोशनाई का

वह अजनबी की तरह देखता रहा 'वाकिफ़
बड़ा ग़ुरूर था यारों को आश्नाई का

ठहरे लम्हे

1949

से

1960

तक

दो शेर

दिलों को प्यार का जज़्बा कहां से मिलता है
कली कली को तबस्सुम जहां से मिलता है

हर इक सितारे के आगे है रोशनी की झलक
ये सिलसिला तो न जाने कहां से मिलता है

क़तआत

मुहब्बत है वही यकजाई के माने नहीं बदले
कि बाप और मां बहन और भाई के माने नहीं बदले
भलाई सो भलाई है बुराई सो बुराई है
वही सच्चाई है सच्चाई के माने नहीं बदले

❑❑❑

सुबह को देख के आइने में
कोई शै टूट गयी सीने में
रात ख़्वाबों को लिए लौट गई
लोग मशग़ूल रहे पीने में

❑❑❑

हम तो मजबूर हैं तुम चैन से घर में रहना
अपनी तक़दीर में लिखा है सफ़र में रहना

❑❑❑

यह सफ़र अच्छा लगा ये जागना अच्छा लगा
ठंडी ठंडी रेत पर चलना बड़ा अच्छा लगा
ख़ुद को पहली बार देखा मैंने सर से पांव तक
यह नदी का झिलमिलाता आइना अच्छा लगा

❑❑❑

ग़ज़ल

अदब शेर–ओ–नग़मानवा है ख़ुदा से
हर इक हर्फ़ की इब्तिदा है ख़ुदा से

यहीं तक हैं सब फ़ल्सफ़े ज़िन्दगी के
नई ज़िन्दगी का पता है ख़ुदा से

ख़ुदा है नई ज़िन्दगी की बशारत
हसीं ज़िन्दगी का सिला है ख़ुदा से

अभी तक है पहली सहर का उजाला
कि हर नूर का सिलसिला है ख़ुदा से

ये हस्ती मसर्रत, मुहब्बत इबादत
हमें और क्या मांगना है ख़ुदा से

हर इक शै का है दूसरी शै से रिशता
तआल्लुक़ का ये सिलसिला है ख़ुदा से

हक़ीक़त में है हमसे नज़दीक 'वाक़िफ़'
मगर यूं बहुत फ़ासला है ख़ुदा से

ग़ज़ल

मेरे क़लम में रची हुई है शऊर—ओ—वजदान की नज़ाकत
मै इस हक़ीक़त को जानता हूं कि ज़िन्दगी से है फ़न की अज़मत

बसा रहा हूं दिलों की जन्नत लुटा रहा हूं ग़मे मुहब्बत
यही मेरी शायरी का हासिल यही मेरे आँसुओं की क़ीमत

निज़ामे—दौलत की सख़्तियों ने दिलों को पत्थर बना दिया है
न मुझ को अपनों से कुछ गिला है न मुझको ग़ैरों से कुछ शिकायत

तेरी नज़र हुस्न ढूंढ़ती है मेरी नज़र हुस्न के ग़मों को
कहां तेरे इश्क़ के फ़साने कहां मेरे प्यार की हक़ीक़त

जब एक ही है मर्ज़ हमारा तो क्यूं न इस का इलाज ढूंढें
तुझे भी तक़दीर से गिला है मुझे भी माहौल से शिकायत

जो ज़हर देते हैं ज़िन्दगी को मै उनपे तन्क़ीद कर रहा हूं
न शेख़ से कोई दुश्मनी है न बरहमन से है मुझ को नफ़रत

वह कम नज़र और होंगे जिनको तलाश है सीम—ओ—ज़रकी 'वाक़िफ़'
मेरा क़लम है मेरा ख़ज़ाना मेरे ख़्यालात मेरी दौलत

ग़ुबारे कारवां - १९४९

रहबरों ने कहा देश आज़ाद है
और कैदी उठे रक़्स करने लगे
शोर उठ्ठा चमन में बहार आ गई
ग़ुंचओ-गुल हवा से बिखरने लगे

एक फ़िरक़ा परस्ती का तूफ़ान था
जिसके रेले में इन्सानियत बह गई
कितने भरपूर वह मौत के वार थे
मुस्कुरा कर ज़िन्हें ज़िन्दगी सह गई

जिस तरफ़ देखिए ख़ून ही ख़ून था
जिस तरफ़ देखिए आग ही आग थी
एक कुचला हुआ फूल थी हर हंसी
ज़िन्दगी थरथराता हुआ राग थी

ज़िन्दगी कितनी ख़ामोशो-मग़मूम थी
जैसे सहमा हुआ हो परिन्दा कोई
हर नज़र में वो हैवानियत की चमक
आदमी जैसे भूका दरिन्दा कोई

बर्फ़ की चोटियां ख़ून रोने लगी
बन के आंसू हिमाला पिघलने लगा
ज़ाफ़रानों के खेतों में शोले उगे
और फ़िरदौसे-कशमीर जलने लगा

अपनी मंज़िल की पहली झलक देख कर
अनगिनत क़ाफ़िले गर्द में खो गये
हीर रांझा का पंजाब बांटा गया
हीर रांझा सिसक कर अलग हो गये

नफ़रतों की सियासत चला दी गई
सोई हैवानियत फिर जगा दी गई
टुकड़े–टुकड़े हुआ जिस्म बंगाल का
ये बग़ावत की उसको सज़ा दी गई

जिनकी आंखों में है प्यार की चांदनी
वो ग़मों के अंधेरे से डरते नहीं
जिनके सीने में है शोलए ज़िन्दगी
मौत के मारने से वो मरते नहीं

क़ता

एक सहरा दुःखों का मिला राह में
दर्द–ओ–ग़म से भरा एक जंगल मिला
कितना आज़ाद है आज अपना वतन
इतनी क़ुर्बानियां देके ये फल मिला

ख़िज़ां

गुलशन–गुलशन सन्नाटा है, सूनी–सूनी हर डाली है
मसली–मसली सी कलियां हैं रौंदी–रौंदी हरियाली है

हर एक रविश उजड़ी–उजड़ी है जैसे हो सुबह तवायफ़ की
हर शाख़े गुलइक बेवा के हाथों की तरह से ख़ाली है

हर सुबह को ये शामे चमन याद रहेगी
ये वक़्त के माथे की शिकन याद रहेगी

ये दिन भी किसी तरह गुज़र जायेंगे लेकिन
ये बेरुख़ी–ए–अहले वतन याद रहेगी

क़त्ल नाहक

लाश पे तेरी अश्क बहा के
आगे चल दिये झोंके हवा के
भटका हुआ था कोई बच्चा
ले गयी चिड़िया संग उड़ा के

क़तआत

हयात अपनी ग़मों से चूर क्यों है
कोई जाबिर कोई मजबूर क्यों है
यह माना है यही दस्तूर–ए–दुनिया
मगर दुनिया का ये दस्तूर क्यों है

□□□

फूलों को खिलाने का जतन करते रहेंगे
धरती को लहू देके चमन करते रहेंगे
इन्सान को हक़ जीने का जब तक न मिलेगा
हम तज़किर–ए–दार–ओ–रसन करते रहेंगे

□□□

जब वो मेरे क़रीब होता है
हर शनासा रक़ीब होता है
हुस्न मिलता है मोल भी 'वाक़िफ़'
प्यार किसको नसीब होता है

□□□

शेर

आवाज़ दी गुनह ने हवस ने शबाब ने
मैने किसी को मुड़ के न देखा तेरे बगैर

□□□

ग़ज़ल

सब नहीं बिके ज़मीर शहर में
हैं अभी कई फ़क़ीर शहर में

शोर ने उन्हें भी क़त्ल कर दिया
गा रहे थे कुछ 'कबीर' शहर में

अब ग़ुरूर की लड़ाई देखिए
हो चुके बहुत अमीर शहर में

दुशमनों ने कर दिया हैं हमें जुदा
हर सड़क बनी लकीर शहर में

बे उसूल बेनिशान बेख़ता
चल रहे हैं कैसे तीर शहर में

गांव शायद अब न देख पाएंगे
ज़िन्दगी हुई असीर शहर में

अजीब हैं तेरे खेल मालिक कहीं अंधेरा कहीं उजाला
किसी को दुःख देके ज़िन्दगी दी किसी को सुख दे के मार डाला

मांझी (शैडो प्ले स्टेज के लिए)

एक आवाज़ :-

उस पार न जा मांझी उस पार अन्धेरा है
हैं छाए हुए बादल डूबे हुए तारे हैं
बिफ़रे हुए तूफ़ां हैं उमड़े हुए धारे हैं
बढ़ती हुई मौजें हैं चढ़ता हुआ धारा है
उस पार न जा मांझी उस पार अन्धेरा है

तूफ़ान में किशती है और दूर किनारा है
घनघोर घटाओं में ये एक सितारा है
क्या बात है रह रह कर दिल मेरा धड़कता है
उस पार न जा मांझी उस पार अन्धेरा है
पुरशोर हवाओं पर तूफ़ां की सवारी है
तक़दीर की एक ठोकर तदबीर पे भारी है
सोई हुई किशती है जागा हुआ दरिया है
उस पर न जा मांझी उस पार अंधेरा है

दूसरी आवाज़ :-

उस पार तो जाना है उस पार तो जाऊँगा
बढ़ते हुआ तूफ़ां है चढ़ता हुआ धारा है
क़ूवत है इरादे की हिम्मत का सहारा है
यह फ़र्ज़ है मैं इससे दामन न बचाऊँगा
उस पार तो जाना है उस पार तो जाऊँगा
घनघोर घटाओं की परवा भी नहीं मुझको
जिस सिम्त अन्धेरा है जाना है वहीं मुझको
धारों के सहारे से मैं राह बनाऊँगा
उस पार तो जाना है उस पार तो जाऊँगा

दरिया के तलातुम से मैं डर भी नहीं सकता
साहिल पे बिना पहुंचे मैं मर भी नहीं सकता
मैं डूब के उभरूंगा मैं डूब के जाऊँगा
उस पार तो जाना है उस पार तो जाऊँगा
तूफ़ाने हवादिस में हो मेरा सफ़ीना तुम
मैं लौट के आऊँगा मेरे लिए जीना तुम
मैं तुमसे अलग होकर दुनिया न बसाऊँगा
उस पार तो जाना है उस पार तो जाऊँगा
दुनिया से न तुम डरना दुनिया से न घबराना
तुम मेरी मुहब्बत में बे मौत न मर जाना
मैं तारों में चमकूंगा मैं ख्वाबों में आऊँगा
उस पार तो जाना है उस पार तो जाऊँगा

पुनर्मिलन

आज उसे फिर देखा मैने
जाग उठीं फिर सोई यादें
अरमानों ने ली अंगड़ाई

धीमे बहते हुए दरिया में
तूफ़ानों ने ली अंगड़ाई

कितनी मधुर है दिल की धड़कन
जैसे बजती हो शहनाई

फिर जल उठे ख़ून में दीपक
रग रग में बिजली लहराई

आज उसे फिर देखा मैंने
उसने कितने भोले पन से
आखों से आखों को चूमा

फिर मेरी नज़रों के आगे
बीता हुआ ज़माना घूमा

इक लम्हा में उसकी नज़र ने
कितने शिकवे कर डाले हैं

नाजुक लब यूं कांप रहे थे
जैसे कुछ कहने वाले हैं

आज उसे फिर देखा मैंने

जाग रही है दिल की धड़कन
सन्नाटा पर तोल रहा है

नग़मा नग़मा है ख़ामोशी
दूर पपीहा बोल रहा है

फिर उसकी मासूम आंखों ने
नाज़ुक सा पैग़ाम दिया है
आज उसे फिर देखा मैंने

यूं टपके आंखों से आंसू
जैसे शाख़ से फूल गिरे हों

जैसे इस आकाश के तारे
इक–इक करके टूट रहे हों
आज उसे फिर देखा मैंने

क़तआत

रूह अफ़सुरद–ओ–मलूल न थी
मेरे चेहरे पे ग़म की धूल न थी
तुम भी जब ज़िन्दगी में शामिल थे
ज़िन्दगी इतनी बे उसूल न थी

□□□

इस अंन्धेरे को जगमगा लेता
कुछ ख़ुशी के दिये जला लेता
काश़ तुम एक बार आ जाते
एक बार और मुस्कुरा लेता

□□□

दिल जुदाई के ज़ख़्म खाए हुए
होंठ फिर भी हैं मुस्कुराए हुए
मौत की वादियों में बैठा हूँ
ज़िन्दगी के दिए जलाए हुए

□□□

हसंते चेहरे मलूल मिलते हैं
अब तो काग़ज़ के फूल मिलते हैं
ज़िन्दगी अब कहीं नहीं मिलती
ज़िन्दगी के उसूल मिलते हैं

□□□

ग़ज़ल

न जाने कौन सी मंज़िल में किस मुक़ाम पे हूँ
न एतबारे–ख़िरद है न एतमादे जुनूं

कुछ ऐसे ज़ख़्म दिए हैं फ़रेब–ए–दुनिया ने
तुम्हारा प्यार भी शायद न दे सकेगा सुकूं

ख़फ़ा न हो ये शिकायत नहीं है मेरे दोस्त
कहूं न तुमसे तो फिर दिल का हाल किससे कहूं

तेरा जमाल उजाला है मेरी हस्ती का
तेरी निगाह ने तोड़े उदासियों के फ़ुसूं

ये ज़िन्दगी तो कोई ज़िन्दगी नहीं 'वाकिफ़'
न जुस्तुजू न इरादे न हौसला न जुनूं

ग़ज़ल

ज़िन्दगी का इरादा किया
जाइए हमने वादा किया

ख़ामुशी से जुदा हो गये
प्यार हमने ज़ियादा किया

कोई बदला न कोई गिला
न कोई हमने वादा किया

इश्क़ में जाँ. गंवाई नहीं
इश्क़ से इस्तेफ़ादा किया

इतने ग़म ज़िन्दगी में न थे
हमने ग़म को ज़ियादा किया

दोस्तों जंग वो चीज़ है
जिसने आहन बुरादा किया

तवायफ़ का ख़त

कोई रहबर, कोई साथी, कोई अपना न मिला
मैं वह कश्ती हूँ जिसे किनारा न मिला

ले लिया अपनी जवानी का सहारा मैंने
जब मुझे क़ौम के हाथों का सहारा न मिला

होके मजबूर जहन्नम को बसाया मैंने
जब मुझे मन्दिरो मस्जिद में ठिकाना न मिला

कल हिक़ारत से जो कहते थे भिखारन मुझको
आज कहते हैं कि गुलशन में नया फूल खिला

कोई समझा न मेरी रूह की ख़ामोश पुकार
सब समझते रहे चलता हुआ सिक्का मुझको

चन्द लम्हे तो गुज़र जायेंगे अच्छे ख़ासे
जिसने देखा इसी अन्दाज़ से देखा मुझको

खेलती है मेरी रग–रग से ये पापी दुनिया
देके कागज़ के खिलौने मुझे बहलाती है

मेरी मजरूह जवानी की शिकस्ता कश्ती
कितने बिफरे हुए तूफ़ानों से टकराती है

मेरी आग़ोश को फ़िरदौस समझने वालो
तुमको मालूम है कि मैं किस तरह से जीती हूं

चन्द चांदी के खनकते हुए सिक्कों के तले
रात भर अपनी जवानी का लहू पीती हूं

गन्दी नाली में उसे फेंक दिया जायेगा
वह कली जो अभी मासूम है बे परवा है

मेरी बच्ची, मेरी बच्ची भी तवायफ़ होगी
सांप की तरह ये एहसास मुझे डसता है

कल किसी क़ौम के ख़ादिम ने सहारा न दिया
आज किस मुंह से कहते हो कि बदकार हूं मैं

मैं तुम्हारे ही तो किरदार का आइना हूं
कौन कहता है कि पापी हूं गुनहगार हूं मैं

क़ता

नग़म–ए–दिल बे असर, साज़े जुनूं बेजोश है
ज़िन्दगी की सादगी दौलत से हम आग़ोश है
हुस्न महवे रक़्स है अहले हवस की बज़्म में
इश्क़ इक हारे जुआरी की तरह ख़ामोश है

हर खाना अच्छा खाना नहीं है
हर गाना अच्छा गाना नहीं है

हर शायरी अच्छी शायरी नहीं है
हर दोस्ती अच्छी दोस्ती नहीं है

हर राहत अच्छी राहत नहीं है
हर चाहत अच्छी चाहत नहीं है

हर ख़्वाहिश अच्छी ख़्वाहिश नहीं है
हर कोशिश सच्ची कोशश नहीं है

हर बस्ती अच्छी बस्ती नहीं है
हर हस्ती अच्छी हस्ती नहीं है

हर ज़िन्दगी अच्छी ज़िन्दगी नहीं है
हर दोस्ती अच्छी दोस्ती नहीं है

है आग भी सिर्फ़ रोशनी नहीं है
हर ख़ुशी अच्छी ख़ुशी नहीं है

ग़ज़ल

कैसी जादूगरी हो गयी
सारी धरती हरी हो गई

धूप में जो हुई थी सती
वह ज़मीं तो परी हो गयी

झोंके नग़मे सुनाने लगे
ये हवा बांसुरी हो गयी

कौन जाने पवन के सिवा
क्यों घटा बावरी हो गयी

घिर के आयी जो काली घटा
दोपहर सांवरी हो गयी

रुत ने मन को मधुर कर दिया
फिर से वह माधुरी हो गयी

उस तरफ़ उड़ चलीं पांखियां
जिस तरफ़ रहबरी हो गयी

देखो 'वाक़िफ़' नई कोपलें
डाली-डाली हरी हो गयी

ग़ज़ल

यहां से दूर जाने का इरादा कर लिया मैंने
किसी के वास्ते यह भी गवारा कर लिया मैंने

कहीं ऐसा न हो वह ज़िन्दगी भी तल्ख़ हो जाए
यही तो सोच कर उनसे किनारा कर लिया मैंने

बिछड़ते वक़्त उनकी हर ख़ुशी मंज़ूर थी मुझको
मैं उनको भूल जाऊँगा ये वादा कर लिया मैंने

मेरी ख़ुद्दार फ़ितरत झुक गई दुनिया के क़दमों पर
तुम्हारे वासते ये भी गवारा कर लिया मैंने

हज़ारों बार दुनिया ने मुझे धोके दिए 'वाक़िफ़'
हज़ारों बार दुनिया पर भरोसा कर लिया मैंने

एक तेरा ही ग़म नहीं ऐ दोस्त
और भी दुःख दिए हैं दुनिया ने

मैं मुस्कुराता रहा

ज़िन्दगी ख़ून रोती रही
और मैं मुस्कुराता रहा
दिल के टूटे हुए साज़ पर
प्यार के गीत गाता रहा
एक नई ज़िन्दगी के लिए
अपना सब कुछ लुटाता रहा
ज़िन्दगी की कठिन राह में
हर क़दम डगमगाता रहा
हर क़दम पर तसव्वुर तेरा
मेरी हिम्मत बढ़ाता रहा
और मैं मुस्कुराता रहा

मुझको कांटों के सहरा में थी
प्यार के फूल की जुस्तुजू
ज़िन्दगी की कड़ी धूप में
इक घनी छांव की आरज़ू
यकबयक तुझसे नज़रें मिलीं
तूने शरमा के देखा मुझे
जब बढ़ा मैं तेरी चाह में
कितने कांटों ने रोका मुझे
जब क़दम और आगे बढ़े
तेरी नज़रों ने टोका मुझे
तू मेरे प्यार का फूल है
हो गया था ये धोका मुझे
दिल यूंही धोके खता रहा
और मैं मुस्कुराता रहा

हमसफ़र क़ाफ़िले, रहनुमा
वक़्त की गर्द में खो गये
मंजिलें धूल में छुप गईं
राहबर राहज़न हो गये
नफ़रतों की सियह गर्द में
चलने वालों के दम घुट गये
मेरे साथी मेरे हमसफ़र
जाने किस मोड़ पर छुट गए
फिर भी मैं मुस्कुराता रहा
प्यार के गीत गाता रहा
और मैं मुस्कुराता रहा

ग़ज़ल

ज़मीं बदले हज़ारों करवटें या आसमां बदले
मगर ये ग़ैर मुमकिन है मेरा अज़्मे जवां बदले

मेरी टूटी हुई किश्ती पे हसंते हो किनारे से
कहीं ऐसा न हो तूफ़ान का रुख़ नागहां बदले

रहेंगे हम यहीं सारा चमन है आशियां अपना
जो मायूसे–अमल हो वो चमन से आशियां बदले

मैं डरता हूं मुहब्बत का सहारा भी न छिन जाए
कहीं ऐसा न हो तेरी नज़र भी नागहां बदले

हुईं हैं कुछ न कुछ तब्दीलियां दस्तूर–ए–गुलशन में
मगर जिनको बदलना चाहिए था वो कहां बदले

हमारे ख़ून से शायद ख़िज़ां की प्यास बुझ जाए
हमारे बाद मुमकिन है कि रंगे–गुलसितां बदले

क़ता

सुना करता हूँ अपनी ही कहानी
हवाओं और सितारों के ज़ुबानी
जब उनकी याद कहती है जागो
वही तो रात होती है सुहानी

बरस पड़ो

बरस पड़ो घनघोर घटाओ
ये धरती ही मां है तुम्हारी
धरती की आग़ोश में आओ
बरस पड़ो घनघोर घटाओ
प्यासी धरती सिसक रही है
फिर भी तुम ख़ामोश खड़े हो
धूल हुई जाती है दुनिया
जाने तुम क्या सोच रहे हो
तालाबों की सूखी आँखें
कितने प्यार से देख रही हैं
झुके हुए सर पौधों के
कंवल की बांहे सूख चली हैं
पत्थर के दिल पिघल रहे हैं
आँखों में आंसू भर लाओ
बरस पड़ो घनघोर घटाओ
ख़ाली हैं झीलों के प्याले
दरियाओं के मुंह उतरे हैं
सूख गई धरती की छाती
खेतों में हल रुके हुए हैं
बन्दूकें बम टैंक धमाके
एक ही रेले में बह जाएं
धरती फिर बन जाए सुहागन
सिर्फ़ धड़कते दिल रह जाएं
जल थल हो जाए ये दुनिया
प्रेम का रस बरसा जाओ
बरस पड़ो घनघोर घटाओ

क़तआत

अक़्ल को वहम पर निसार न कर
ज़िक्र–ए–तक़दीर बार–बार न कर
अपनी खेती ख़ुद अपने हाथ से सींच
सिर्फ़ बादल का इंन्तेज़ार न कर

□□□

तुमको अपनी नजात का ग़म है।
ये भी अपनी ही ज़ात का ग़म है
उसकी हिम्मत को देखता हूं मैं
जिसे कुल कायनात का ग़म है।

□□□

इश्क़ की बेचारगी जाती रही
हर ख़लिश यकबारगी जाती रही
बन गई कैफ़–ए–मुसलसल उनकी याद
ज़हन की आवारगी जाती रही

□□□

यक़ीं ये है कि तुमको पा गया हूं मैं
गुमाँ ये है कि तुमसे दूर हूं मैं
अब एहसासे ग़मे दिल भी नहीं है
मुहब्बत के नशे में चूर हूं मैं

□□□

एक ही ग़म

इनफ़रादी नहीं हयात का ग़म
ये वो ग़म है जो हम सभी का है
ये वो ग़म है जो सारी बस्ती में
इक धुएं की तरह से फैला है

है वही प्यास सब के होंटों पर
वही टूटे हुए से पैमाने
एक ही दर्द सबके दिल में है
चाहे अपने हों चाहे बेगाने

रंगे सागर जुदा–जुदा है तो क्या
एक ही ज़हर सबके जाम में है
सबके घर में वही अन्धेरा है
एक ही रंग सबकी शाम में है

हैं वही ज़ख़्म सबके सीने में
हर जबीं पर वही स्याह लकीर
इन लकीरों को पढ़ रहा हूं मैं
एक ही बात एक ही तहरीर

खोगया इश्क़ की नज़र का वक़ार
लुट गया हुस्न का कुंवारा पन
चांदनी छन रही है पेड़ों से
फटे कपड़ों से झाँकते हैं बदन

ग़ैर महसूस सी है एक ज़ंजीर
जिसने हम सबको बांध रखा है
जितनी दस्तूर की किताबें हैं
इनका हर लफ़्ज एक धोका है

एक तेरा ही ग़म नहीं ऐ दोस्त
और भी दुःख दिये हैं दुनिया ने

ग़ज़ल

दुखते हैं दिल के घाव मेरा जी उदास है
तुम आ सको तो आओ मेरा जी उदास है

अहले चमन हंसो न मेरा हाल देखकर
कलियो न मुस्कुराओ मेरा जी उदास है

अब दूर से फ़रेब–ए–तसव्वुर न दो मुझे
मेरे क़रीब आओ मेरा जी उदास है

कुछ लम्हे और मेरी मुहब्बत को बख़्श दो
कुछ देर ठहर जाओ मेरा जी उदास है

तसकीन देने वालो मेरी जान छोड़ दो
तुम सब यहां से जाओ मेरा जी उदास है

"वाकिफ़" ये शेरो नग़मा भी मरहम से कम नहीं
कोई ग़ज़ल सुनाओ मेरा जी उदास है।

क़ता

नफ़रत सिखा रहे हैं वहशत बढ़ा रहे हैं
किस सिम्त ज़िन्दगी को ये लेके जा रहे हैं
घर के दिये बुझा कर ये लोग सोचते हैं
आकांश पर सितारे क्यों जगमगा रहे हैं

ग़ज़ल

ख़ुद ही उनसे दूर हुए हैं
हम कितने मजबूर हुए हैं

आज हक़ीक़त से टकराकर
नाज़ुक सपने चूर हुए हैं

जाग उठी मेरी ख़ुद्दारी
जब से वो मग़रूर हुए हैं

मंज़िल दूर नहीं मंज़िल से
चलने वाले दूर हुए हैं

कौन करे अन्दाज़-ए-मस्ती
हम तो नशे में चूर हुए हैं

'वाक़िफ़' मेरी शामे-ग़म है
तारे क्यों बे नूर हुए हैं

ख़ुशआमदीद

यह कौन आया है मेरी अन्धेरी दुनिया में
यह रोशनी यह मुहब्बत का माहताब लिए

क़दम–क़दम पे झिझकती हुई सी बेताबी
कभी सुकून कभी एक इज़तराब लिए

अजीब रंग है मासूमियत का आंखों में
न इलतफ़ात लिए हैं न इज्तनाब लिए

बुझे–बुझे हुए दिल में उतर गई वह नज़र
बहुत हसीन, बहुत ही हसीन ख़्वाब लिए

नफ़स–नफ़स में तमन्ना की मस्त–मस्त महक
नज़र–नज़र में छलकती हुई श़राब लिए

क़दम हैं जज़्बए–बेबाक के नशे में चूर
निगाहे शौक़ है एक अज़्म–ए–कामयाब लिए

किस एतेमाद से उट्ठीं झुकी हुई नज़रें
मेरे तमाम सवालात का जवाब लिए

मन क़ाहे घबराए

मन काहे घबराए
न जाने मन काहे घबराए
सूनी रात घना अंधियारा काले बादल छाए
पवन झकोरा छुए दुःखी दिल कांप–कांप रह जाए
दर्द भरी बोझल आंखों में आस की लौथर्राये
मन काहे घबराए
चांदनी रात के आंचल पर ये धुधंले–धुंधले साए
जब यादों की परियां जागीं नींद कहां से आए
हर आहट पर चौंक उठे दिल, उलझन बढ़ती जाए
मन काहे घबराए
जगमग–जगमग चन्दा दर्पन झिलमिल झिलमिल तारे
धरती पर उजियारा मन में बढ़ते हुए अंधियारे
तारा ख़ुद ही भटक रहा है वह क्याराह दिखाए
मन काहे घबराए
ग़म की रात भी कट जाएगी हिम्मत छोड़ न देना
प्यास से घबरा कर जीवन का प्याला तोड़ न देना
तेज़ हवाओं में आशा का दीप न बुझने पाए
मन काहे घबराए

ग़ज़ल

गुल हैं और शाख़–ए–गुल पे बार हैं हम
जाने किस बाग़ की बहार हैं हम

बाग़बां तू ही फ़ैसला कर दे
क्या कहें फूल हैं कि ख़ार हैं हम

रंग हो, शायरी हो, नग़मा हो
अपने ही ख़ूं से लालाज़ार हैं हम

हाल–ए–दिल कह रहे हैं ग़ैरों से
इन दिनों कितने बेक़रार हैं हम

मय भला क्या शऊर छीनेगी
ज़हर–ए–ग़म पी के होशियार हैं हम

इस तरह हमको ख़ाक में न मिला
ए वतन तेरे शाहकार हैं हम

अपना साहिल कहीं नहीं 'वाक़िफ़'
आज भी मौज–ए–बेक़रार हैं हम

ग़ज़ल

मौसमे ग़म को ख़ुशगवार करो
जज़्बए–दिल को होशियार करो

ज़िन्दगी एक ख़्वाब–ए–तल्ख़ सही
इसकी ताबीर ख़ुशगवार करो

ज़ाहिरी ज़ख़्म देखने वालो
दिल के ज़ख़्मों को भी शुमार करो

यह तग़ाफ़ुल तो कोई बात नहीं
और भरपूर कोई वार करो

उसकी मजबूर बेवफ़ाई पर
जी में आता है और प्यार करो

आएगा मोड़ भी जुदाई का
चाहे जो राह अख़्तियार करो

मुजरिमे–इश्क़ है ये 'वाकिफ़' भी
चलो इसको भी संगसार करो

एहसास के साये

यह रात का गहरा सन्नाटा, मैं क्या जाने किस सोच में हूं

आकाश के नीले सागर में हर तारा एक पहेली है
यह चांद भी कितना धुधंला है यह चांदनी कितनी मैली है
एक बेवा की चादर की तरह सारी धरती पर फैली है

यह रात का गहरा सन्नाटा मैं क्या जाने किस सोच में हूं

यह रात की बोझल पल्कों पर बुझते हुए तारों के आंसू
वह दूर उफ़क़ के माथे पर बहता हुआ शामेग़म का लहू
आते हुए लमहों की आहट जाते हुए लमहों की ख़ुशबू

सर्गोशी करती नर्म हवा, मैं क्या जाने किस सोच में हूं

यह मेरे वतन की ख़ाक, जहां सर अपना झुकाते हैं बादल
यह खेत यह नदियां ये झीलें ये आम के बाग़ और ये जंगल
फूलों से लदी शादाब ज़मीं जैसे किसी दुल्हन का आंचल

लेकिन ये ख़जाना है किसका मैं क्या जाने किस सोच में हूं

यह धुधंली धुधंली सी गलिंया यह सूनी–सूनी सी राहें
टूटे–फूटे तारीकमकां ये ग़ुबर्त की जल्वा गाहें
यह पेड़ की दो सूखी शाखें जैसे किसी मुफ़लिस की बाहें

यह दुनिया है अपनी दुनियां मैं क्या जाने किस सोच में हूं

ज़हनों पे जेहालत की मोहरें यह क़ौमों की फ़िर्क़ाबन्दी
मासूम मुहब्बत पर क़ैदें, दिल की धड़कन पर पाबन्दी
तन के उजले मन के मैले सुन्दर मुखड़े रुहें गन्दी

तारीक नज़र ज़हरीली फ़ज़ा मैं क्या जाने किस सोच में हूं

यह नींद के मीठे सागर में लहराते हुए यादों के कंवल
अशकों की तरह लरज़ां लरज़ां पल्कों की तरह बोझल बोझल
सपनों की तरह नाज़ुक नाज़ुक मौजों की ररह बेकल बेकल

यह दर्द में डूबी दिल की सदा मैं क्या जाने किस सोच में हूं

ग़ज़ल

मुहब्बत को अगर जाना नहीं है
उसे क्या ख़ुद को पहचाना नहीं है

बज़ाहिर मुझसे बेगाना है लेकिन
वो मेरे ग़म से बेगाना नहीं है

मुहब्बत ज़िन्दगी ही ज़िन्दगी है
मुहब्बत घुट के मर जाना नहीं है

ख़बर लाना है मौजेतहनशीं की
हमें साहिल से टकराना नहीं है

बदलता है ज़माना रफ़ता–रफ़ता
कली का फूल बन जाना नहीं है

अभी क्या जाने कितने गुल खिलेंगे
ज़मी गुलशन है, वीराना नहीं है

ख़ुदा को किस तरह पहचानलूं मैं
अभी दुनिया को पहचाना नहीं है

जहाने होश को देखा है 'वाकिफ़'
हमें अब होश में आना नहीं है

ग़ज़ल

तुम्हारी याद का दिल में सुरूर होता है
तो बिन पिए मेरे चेहरे पे नूर होता है

मैं तुझको देखके जब देखता हूं दुनिया को
मेरी निगाह में कितना ग़ुरूर होता है

सियाह दिल में सितारे उतार देती है
वो आंख जिसमें मुहब्बत का नूर होता है

ये रस्म है उसे दीवाना कहते आए हैं
जो आदमी कि ज़रा बाशऊर होता है

किसी के पास नहीं है एलाज–ए–संगदिली
ये रोग सिर्फ़ मुहब्बत से दूर होता है

तू बदगुमां न हो 'वाक़िफ़' की बादानोशी से
कभी–कभी वो बहुत ग़म से चूर होता है

इसी में पर्दा पोशी है मियां अपनी जिहालत की
जो कुछ हुशियार हैं उनको ही दीवाना कहे जाओ

ग़ज़ल

ग़म–ए–दिल से ग़म–ए–दिलदार तक आ पहुंचे हैं
लोग अब इश्क़ के मेयार तक आ पहुंचे हैं

तेरी ख़ातिर ग़म–ए–दुनिया से मुहब्बत की है
तेरे ग़म में रसन–ओ–दार तक आ पहुंचे हैं

इम्तेहां देना है अब इश्क़ की ख़ुद्दारी का
ग़म के शोले तेरे रुख़सार तक आ पहुंचे हैं

आज है ज़ुल्म के हाथों में भी मज़हब की सिपर
हम भी एक फ़ैसला कुन वार तक आ पहुंचे हैं

हम तो निकले थे मुहब्बत की तमन्ना लेकर
जाने कैसे रसन–ओ–दार तक आ पहुंचे हैं

काम आए मेरे आंसू मेरे नग़मे 'वाक़िफ़'
अहल–ए–गम जुरअतें इज़्हार तक आ पहुंचे हैं

नमूदे ज़िन्दगी
(पौधे का तसव्वुर हिन्दी से)

धुधंला–धुधंला जहां का हर मन्ज़र
एक "अन्जान बोझ" हर शै पर

हर तरफ़ इक उदास सन्नाटा
हर तरफ़ इक अथाह ख़ामोशी
क़तरे–क़तरे में एक ठहराव
ज़र्रे–ज़र्रे में एक बेहोशी

ये ज़मीं एक ऐसा सहरा थी
जिसमें गुलशन कोई न बाग़ कोई
आफ़ताब इस तरह निकलता था
जैसे बुझता हुआ चराग़ कोई

घिर के आते थे रोज़ ही बादल
पर बरसते न थे कभी जम के
ये सितारे उदास–उदास से थे
रक़्स करते भी थे तो थम–थम के

इक नयी जोत रोज़ उभरती रही
इक नयी जोत रोज़ मरती रही
धीरे–धीरे ये बेक़रार ज़मीं
रक़्स–ए–एहसास तेज़ करती रही

हर तरफ़ थी फ़ना की तारीकी
हर जगह मौत की हुकूमत थी
और दुनिया को इस अन्धेरे में
इक नए नूर की ज़रूरत थी

इसमें सब कुछ था और कुछ भी न था
ऐसा वीराना थी हमारी ज़मीं
सुनने वाला न था कोई इसका
ऐसा अफ़साना थी हमारी ज़मीं

चांद तारों में रोशनी आई
आबशारों में ज़िन्दगी आई
एक नग़मा बिखर गया हर सू
जैसे हर शै में जान सी आई

एक अन्जान बोझ हटने लगा
ये हवा जैसे गीत गाने लगी
ज़िन्दगी बादलों के सीने में
बिजली बन–बन के मुस्कुराने लगी

राग पैदा हुए फ़ज़ाओं में
रात पैग़ाम–ए–सुबह देने लगी
यूं हवाओं में आगई तेज़ी
ज़िन्दगी जैसे सांस लेने लगी

क़ूवते ज़िन्दगी ने उकता कर
चीर डाली ज़मीन की छाती
एक कोंपल इसी जगह उभरी
मुस्कुराती, लजाती, इठलाती

ये तबस्सुम वो है जो पहले पहल
ज़िन्दगी के लबों पे आया था
एक नाज़ुक सा नर्म सा पौदा
अपनी मंज़िल की सिम्त बढ़ने लगा

दिन ब दिन इस हसीन पौदे में
ज़िन्दगी अपना रंग भरती रही
और फ़स्ले ख़िज़ां की सूरत में
मौत भी अपना काम करती रही

वक़्त के हाथ से बिखरती थीं
पत्तियां ज़र्द हो के मरती थीं
रोज़ आती थी एक हसीन बहार
सैकड़ों कोंपलें उभरती थीं

वह नज़ारे जो ख़्वाब थे कल तक
उन नज़ारों को छू रही हैं आज
दस्ते इन्सां की शकल में शाख़ें
चांद तारों को छू रही हैं आज

ऐसी मंज़िल में भी रवां ये हस्ती
जिस जगह कोई हमसफ़र भी नहीं
उस बुलन्दी पे भी ये रक़सां है
जिस जगह मौत का गुज़र भी नहीं

चमक उठी हर एक शै देखो
हुस्ने आलम की आमद आमद है
जिसकी ख़ातिर बनी है ये दुनिया
उसी आदम की आमद आमद है

जीत का जुलूस

जीने की तमन्नाएं लेकर दुःख दर्द के मारे जागे हैं

ठहरी हुई मौजें मचली हैं सोये हुए धारे जागे हैं
तूफ़ां के थपेड़े खा–खा कर ख़ामोश किनारे जागे हैं

हम अपने हाथों से अपनी तक़दीर बनाने निकले हैं
मेहनत के लहू से एक नई तस्वीर बनाने निकले हैं

तुम जिसको राख समझते थे उसमें अंगारे जागे हैं

दुनिया से छुपाओगे कब तक वो ज़ुल्म जो हमने झेले हैं
तुम ताक़त पर इतराते हो हम अपनी जान पे खेले हैं

जिन आंखों में कल तक आंसू थे आज उनमें शरारे जागे हैं

हम अपनी मेहनत से बादल बन कर मोती बरसाते हैं
जीते हैं औरों की ख़ातिर औरों के लिए मर जाते हैं

अब अपने सहारे उठ्ठे हैं अब अपने सहारे जागे हैं
मायूसी की तारीकी में उम्मीद के तारे जागे हैं

ग़ज़ल

दिलों के ज़ख़्मों का यारो कोई इलाज नहीं
कि बस्तियों में मुहब्बत का अब रिवाज नहीं

तअस्सुबात को झुठलाइये हज़ार मगर
जो बात कल थी नज़र में वो बात आज नहीं

वही हैं पर्दए जम्हूरियत में आज भी क़ातिल
ये और बात है अब उनके सर पे ताज नहीं

तमाम फ़लसफ़ए कायनात देख लिए
किसी के पास मेरे दर्द का इलाज नहीं

उठो कि ज़ुल्म के दामन की धज्जियाँ कर दें
हमारे वास्ते अब कोई काम काज नहीं

वतन को छोड़ के जाएं भी तो कहां 'वाकिफ़'
है कौन शहर जहां क़ातिलों का राज नहीं

हुसैन

गुरूर टूट गया कोई मरतबा न मिला
ज़फा के बाद भी कुछ हासिले जफ़ा न मिला
सरे हुसैन मिला तो यज़ीद को लेकिन
शिकस्त ये है कि वह सर झुका हुआ न मिला

करबला

क़ाफ़िले वालो वो मंज़िल है नज़र के सामने
इम्तेहाने जज़्ब–ए–दिल है नज़र के सामने

शाम का लश्कर अन्धेरे की तरह फैला हुआ
अब न दरिया है, न साहिल है नज़र के सामने

मुतमइन चेहरों पे है सबर–ओ–रज़ा की रोशनी
ख़ौफ है दिल में न मुश्किल है नज़र के सामने

इम्तेहां में सुर्ख़ुरू हैं ये शहीदाने वफ़ा
देख लो अन्जाम–ए–बातिल है नज़र के सामने

ग़र्क होकर भी लहू में ज़िन्दगी डूबी नहीं
उम्र लाफ़ानी की मंज़िल है नज़र के सामने

सारे रंजो–ग़म का हासिल है नज़र के सामने
अब न ख़ंजर है न क़ातिल है नज़र के सामने

क़तआत

जज़्बए आज़ादी वजहे सरगरानी तो नहीं
इसके परदे में जुनूने–हुक्मरानी तो नहीं
दामने–तारीख़ से ये दाग़ मिट सकते नहीं
ख़ून है ये आदमी का ख़ून पानी तो नहीं

□□□

रात की शाख़ पे मुरझाए हुए तारों के फूल
इक नई सुबहे तमन्ना का पता देते हैं
जब भी कम होती है रंगी–निए तारीख़–ए–हयात
अहले दिल अपना लहू इसमें मिला देते हैं

□□□

हर क़दम पे गिर–गिर कर आदमी संभलता है
आरज़ू की राहों पे और तेज़ चलता है
जब हयात सीने पर कोई ज़ख़्म खाती है
मौत के अन्धेरे में इक चराग़ जलता है

□□□

वो कर रहे हैं यहां फ़ैसले मुक़द्दर के
हम इन्तिज़ार में बैंठे हैं सुबहे महशर के

□□□

एशिया जाग उठा

एशिया जाग उठा एशिया जाग उठा

देख मशरिक़ की तरफ़ दीद–ए–पुर आब उठा
राख के ढेर से इक शोलए बेताब उठा
नग़मे बेताब हैं हर साज में मिजराब उठा
एशिया जाग उठा

ज़ुल्म की रात में इक सुबहे यक़ीं जाग उठी
ख़ुश्बू–ए–दामन–ए–फ़िरदौसे बरीं जाग उठी
एशिया जाग उठा तक़दीरें ज़मीं जाग उठी
एशिया जाग उठा

अहले दिल जाग उठे अहले–ए–नज़र से कहदो
चल पड़े क़ाफ़िले हर राहे गुज़र से कह दो
नील में ग़र्क़ हुई रात सहर से कह दो
एशिया जाग उठा

ये लहू मिस्र का सुर्ख़ी है फ़साने के लिए
नहर बेचैन है तूफ़ान उठाने के लिए
मैंजें बेताब हैं फ़िरऔन को पाने के लिए
एशिया जाग उठा

दौलत की बस्ती

ये दौलत की बस्ती है यहां हर शै की तिजारत होती है
जो चीज़ मुनाफ़ा दे जाए उस चीज़ की क़ीमत होती है

आंखों की शराबें बिकती हैं बोसों की हरारत बिकती है
शीरीनी–ए–लब, गर्मी–ए–नज़र, सरशारी–ए–लज़्ज़त बिकती है
तहज़ीब की जल्वागाहों में तहज़ीब की अस्मत बिकती है

किरदार की पस्ती में दौलत मेयार–ए–शराफ़त होती है
यहां हर शै की तिजारत होती है

रातों के अन्धेरे में कितने महताबे बदन बिक जाते हैं
मासूम आंचल बिक जाते हैं उजले दामन बिक जाते हैं
तन के कपड़े बिक जाते हैं मुर्दों के कफ़न बिक जाते हैं

इस दुनिया में जीने के लिए इसकी भी ज़रूरत होती है
यहां हर शै की तिजारत होती है

यह दुनिया है धन वालों की हर चीज़ यहां बिक जाती है
ख़ुद्दारों के माथे की शिकन, अबरू की कमां बिक जाती है
बिकता है क़लम सहाफ़ी कालीडर की ज़बां बिक जाती है

उस जेब में सब कुछ होता है जिस जेब में दौलत होती है
यहां हर शैकी तिजारत होती है

मिट्टी के खिलौनों से लेकर चलते फिरते इंसानों तक
एक रेत के नाज़ुक ज़र्रे से सोने–चांदी की कानों तक
ज़न्जीर है सौदेबाज़ी की बाज़ार से क़ब्रस्तानों तक

ये सोच के दिल घबराता है ये देख के वहशत होती है
ये दौलत की बस्ती है यहां हर शैकी तिजारत होती है

ज़िन्दगी की शहज़ादी

ज़िन्दगी की हसीन शहज़ादी
अम्न और जंग के दोराहे पर
आज कितनी उदास बैठी है
बेयक़ीनी के इस अन्धेरे में
लेके जीने की आस बैठी है
जैसे मासूम सी कोई लड़की
अपने महबूब से जुदा होकर
शहर के रास्तों में खो जाए
किसको आवाज़ दे किधर जाए
सर पे छाये हैं ज़हर के बादल
और ज़मीं पर बमों के अंगारे
इल्म–ओ–अदराक के समन्दर से
फूट निकले हैं मौत के धारे

ज़िन्दगी की हसीन शहज़ादी
सोचती है कि मुझको फ़ितरत ने
किस क़दर दुःख उठा के पाला है
रहनुमाओं ने मेरी किशती को
कितने तूफ़ानों में संभाला है
ज़िन्दगी के अज़ीम राहनुमा
खो गये मौत के अन्धेरे में
लौट कर अब वो आ नहीं सकते

जिन्दगी से जो दूर हो जाएं
जिन्दगी को बचा नहीं सकते
लेकिन उनके उसूल ज़िन्दा हैं

एटमी बम की मशअलें लेकर
बढ रहा है हुजूम अहले हवस
दोस्तो जिन्दगी की जान बचाओ
हीरोशमा न बन सके धरती
फिर से ताज़ा न हों हयात के घाव
जिन्दगी की हसीन शहजादी
अम्न और जंग के दोराहे पर
आज कितनी उदास बैठी है

अंधेरी रात

दिल का लहू कुछ काम में लाओ रात अंधेरी है
बस्ती बस्ती दीप जलाओ रात अंधेरी है

प्यार की कोई शमा जलाओ रात अंधेरी है
ज़ोहरा जबीनो राह दिखाओ रात अंधेरी है

मंज़िल मंज़िल रूप के डाकू घात लगाए हैं
तन्हा तुम इस राह न जाओ रात अंधेरी है

कल के लिए कुछ सपनों की कलियां चुन कर रख लें
आओ गले लग कर सो जाओ रात अंधेरी है

सब तो नहीं हैं अपने दुशमन जाने किसको लग जाए
सोंच समझ कर तीर चलाओ रात अंधेरी है

तूफ़ानों का ज़ोर घटाघनघोर, ये टूटी नाव
'वाकिफ़' आज यहीं रुक जाओ रात अंधेरी है

दिल का लहू

तेरी आंखों में तमन्ना है मेरी चाहत की
तेरे महके हुए होठों पे मेरी प्यास भी है
तेरे दिल में मेरे एहसास की धड़कन है मगर
मेरे दिल में तेरी मजबूरी का एहसास भी है

जानता हूं कि तेरे बढ़ते हुए क़दमों में
सालहा साल की डाली हुई ज़ंजीरें हैं
तेरे होठों पे मुहब्बत का तबस्सुम है मगर
इस तबस्सुम में ग़मो दर्द की तहरीरें हैं

दिल की ये आग कभी सर्द नहीं हो सकती
हसरतें फूटती रहती हैं शरारों की तरह
कितनी चीख़ें मैं सुना करता हूं सन्नाटे में
कितने दिल टूटते रहते हैं सितारों की तरह

तेरी मजबूरी को समझूंगा ज़माने का सितम
प्यार में जज़्बए नफ़रत न उभरने दूंगा
अपनी नाकाम मुहब्बत की क़सम खाता हूं
मैं मुहब्बत की तमन्ना को न मरने दूंगा

फिर किसी मोड़ पे मिल जाएंगे टूटे हुए दिल
दूर हैं मारकए इश्क केसर होने तक
शमा उम्मीद की आंखों में जलाए रखना
शमा हर रंग में जलती है सहर होने तक

नज़्म
चांदनी रात

यह सुहाना समां ये तन्हाई
यह ख़मोशी ये जागते जज़्बात
जैसे मरियम का दामन–ए–मासूम
कैसी निखरी हुई है चांदनी रात

क्यूं नदी के किनारे बैठा हूं
किन ख़्यालों में खो गया हूं मैं
इसका एहसास भी नहीं बाक़ी
जागता हूं कि सो गया हूं मैं

साफ़ पानी पे अक्स तारों का
एक नया आसमां सजाए हुए
या किसी जल परी के दामन पर
लाखों हीरे हैं जगमगाए हुए

नर्मो नाज़ुक महकते फूलों पर
जैसे हल्की सी शबनमी चादर
मुस्कुराती हैं कितनी तस्वीरें
हो के यादों के आसुओं में तर

जगमगाते हैं रेत के ज़र्रें
चांदनी रात की शराब पिए
और मैं तन्हा उदास बैठा हूं
इक जुदाई का दर्द दिल में लिए

देखता होगा तू उसे ऐ चांद
मेरी आंखें जिसे तरसती हैं
दिल के दामन पे याद की बूंदें
आँसुओं की तरह बरसती हैं

सो रहे हैं तमाम नज़्ज़ारे
मैं हूं और मेरी बेक़रारी है
जाने कितनों की हैसुहाग की रात
और कितनों पे रात भारी है

क़ता

यह कायनात के गम भी तुझे भुला न सके
'क़दम भटक के भी मंज़िल से दूर जा न सके
मैं आसमान का टूटा हुआ सितारा नहीं
कि टूट जाए तो अपनी जगह फिर आ न सके

ख़त का जवाब

तेरी तमन्ना ने मेरी वीरान ज़िन्दगी की
हर आरज़ू को हसीं बनाया
तेरी मुहब्बत की आरज़ू में
वो सरखुशी थी
कि मैं दुःखों में भी मुस्कुराया
हयात के आइने में जानां कहीं-कहीं तेरी चांदनी है
कहीं-कहीं मेरे ग़म का साया
लहू में जो शमा जल रही है उसे मैं कैसे बुझा सकूंगा
मेरे ख़्यालों की शाहज़ादी तुझे मैं कैसे भुला सकूंगा
तेरी मुहब्बत ने ज़िन्दगी की उदास राहों में
आरज़ू के दिये जलाए
तेरी निगाहों ने दिल की सुनसान वादियों में
मसर्रतों के चमन खिलाए
सुकूत-ए-ग़म की उदासियों में लरज़ रहे हैं
तेरे तबस्सुम के नर्म साए
मगर ग़मे ज़िन्दगी के शोलों से कैसे दामन बचा सकूंगा
तुझे मैं कैसे भुला सकूंगा
तेरे तसव्वुर की नर्म कलियों से ज़िन्दगी की
उदास रातें महक रही हैं

ये गुन्च–ओ–गुल ये चांद तारे
तुझे न पाकर
मेरी निगाहें बहक रही हैं
गुलाब की शाख़ झूमती है
तो मैं समझता हूं
तेरी बाहें लचक रही हैं
बहुत हसीं है तेरा तसव्वुर मगर तुझे कैसे पा सकूंगा
तुझे मैं कैसे भुला सकूंगा
तेरे लिए इस हयात की तल्ख़ साअतों को
शराब की तरह से पिया है
तेरी मुहब्बत ने ज़िन्दगी के कठिन सफ़र में
क़दम–क़दम पर मुझे नया हौसला दिया है
थकन से जब चूर हो गया हूं तो मुझ को तूने
बड़ी मुहब्बत से अपनी बाहों में ले लिया है
तुझे भुला कर मैं ज़िन्दगी की मसरतों को न पा सकूंगा
तुझे मैं कैसे भुला सकूंगा

ग़ज़ल

ग़मे जहां के समन्दर को जो खंगालते हैं
नए ख़याल के मोती वही निकालते हैं

हमीं उठाते हैं तूफ़ाने–ए–इन्क़लाब यहां
हमीं सफ़ीनए–तामीर को संभालते हैं

चराग़–ए–मंज़िल–ए–नौ है हमारी गुमराही
कि राह भूल के राहें नई निकालते हैं

उन्हीं के दम से है रंगीनियाँ गुलिस्तां की
भरी ख़िज़ां में जो अपना लहू उछालते हैं

निबाहते हैं किसी तरह वज़ादारिए ग़म
कि दिल के दर्द को गीतों की लय में ढालते हैं

तारीक नगर

यह जगमगाता हुआ शहर ये हसीं बाज़ार
तवायफ़ों की तरह जिस्म को सजाये हुए
बुझा–बुझा सा तबस्सुम थकी–थकी सी हंसी
हर आदमी है किसी ज़ख़्म को छुपाये हुए

ये क़ुमक़ुमों के दमकते हुए हसीं रुख़्सार
ख़्याल आता है मुफ़लिस के ज़र्द चेहरे का
यहां तो चांद में वो हुस्न भी नहीं मिलता
न जाने अक्स है ये किसके सर्द चेहरे का

उदास–उदास उजाले में ऊघंती गलियां
ये खोलियां हैं कि क़ब्रें हैं ग़म के मारों की
वहां पे चांद सितारों की बात क्या कीजे
चमक भी जा नहीं सकती जहां सितारों की

हर एक चीज़ हसीं है सजी दुकानों की
हर एक चीज़ मगर देखने ही वाली है
न जाने जेब में क्यूं हाथ डाल देता हूं
मैं जानता हूं कि मुद्दत से जेब ख़ाली है

दिलों में ज़हर निगाहों में ज़हर बात में ज़हर
न जाने ज़हर में किसने बुझा के छोड़ दिया
हवस की आग जलाई बुझा के दिल के चराग़
कि जिन्दगी को अंधेरे में लाके छोड़ दिया

कहीं भी रूह को आसूदगी नहीं मिलती
कि रोशनी में हैं और रोशनी नहीं मिलती
ये शहर–ए–संग है पेड़ों की नर्म छांव कहां
न जाने छूट गया मुझसे मेरा गांव कहां

क़ता

ज़हर पीता हूं बनामे मैकशी तेरे बग़ैर
बेक़रारी बन गई आवारगी तेरे बग़ैर
मैं हूं तनहा और झूठे ग़म ग़ुसारों का हुजूम
इक तमाशा बन गई है ज़िन्दगी तेरे बग़ैर

दर्दे तन्हाई

दिल में यूं दर्द की बिजली कभी लहराई न थी।
दोस्त इस तरह तेरी याद कभी आई न थी।।

इससे पहले भी यही मौसमे ग़म था लेकिन।
इतनी घनघोर घटा दिल पर कभी छाई न थी।।

इतनी तारीक न थीं जीने की राहें पहले।
यूं कभी तर्क–ए–तमन्ना की क़सम खाई न थी।।

ज़िन्दगी पहले कभी ग़म की कठिन राहों में।
मौत से आंख मिलाते हुए शर्माई न थी।।

इतनी बेताबी से तुझको न पुकारा था कभी।
इतनी शिद्दत से तेरी याद कभी आई न थी।।

इतना भरपूर न था तेरी मुहब्बत का ख़्याल।
इतनी वीरान–ओ–गरांबार ये तन्हाई न थी।।

अपने हाथों से न तोड़ा था कभी साग़र–ए–मय।
हां तबीयत कभी इस तरह से घबराई न थी।।

हम समझते थे समन्दर से मिलेगें मोती।
दिल की कश्ती किसी चट्टान से टकराई न थी।।

ग़ज़ल

कौन से देस किस नगर जाएं
ग़म के मारे हुए किधर जाएं

उसकी महफ़िल का रंग देख चुके
अब वहां किस उमीद पर जाएं

रोज़ एक चोट दिल पे लगती है
किस तरह दिल के ज़ख़्म भर जाएं

काश यादों की फूटती कलियां
पत्तियों की तरह बिखर जाएं

छू के इक बार तेरी ज़ुल्फ़ों को
मिस्ल-ए-मौजे-सबा गुज़र जाएं

ये ज़मीं तेरी आसमां तेरा
हम कहां तुझसे रुठ कर जाएं

शेर

मैं लाख दूर जाऊं ग़म का शिकार होकर
आऊंगा पास तेरे फिर बेक़रार होकर

मजाज़

तारीकी से लड़ते–लड़ते एक सितारा टूट गया
एक तबस्सुम, एक तरन्नुम, एक इशारा टूट गया
ख़ुद अपने एहसास की शिद्दत से अंगारा टूट गया

तारीकी से लड़ते–लड़ते एक सितारा टूट गया

बज़्म–ए–तरब की बेकैफ़ी से मुतरिब का दिल टूट गया
तल्ख़ हक़ीक़त के पत्थर पर साज़े तमन्ना टूट गया
लय का शोला सर्द हुआ नग़्मे का मुक़द्दर फूट गया
तारीकी से लड़ते–लड़ते एक सितारा टूट गया

ये किसके ग़म की ख़ुशबू है ठन्डी–ठन्डी सांसों में
आंसू बन के डोल रहा है कौन हमारी आंखों में
किसके क़दमों की है आहट सूनी–सूनी आंखों में
तारीकी से लड़ते–लड़ते एक सितारा टूट गया

हंस–हंस कर ये ज़हर–ए–हक़ीक़त पीना कितना मुश्किल है
इस दिल के नाज़ुक ज़ख़्मों को सीना कितना मुश्किल है
दुनियां में हस्सास दिलों का जीना कितना मुश्किल है
तारीकी से लड़ते–लड़ते एक सितारा टूट गया
ख़ुद अपने एहसास की शिद्दत से अंगारा टूट गया

मेरा आँगन

मेरे वतन, मेरे प्यारे वतन ग़रीब वतन
कहीं भी जाऊँ मैं तुझको भुला नहीं सकता
जो हासिदों ने लगाए हैं जख़्म इस दिल पर
तेरे सिवा मैं किसी और को दिखा नहीं सकता

खिज़ां की धूप हो या छांव हो बहारों की
तेरे तमाम नज़ारों से प्यार है मुझको
मैं जाने वाली बहारों का ग़म नहीं करता
कि आने वाली बहारों से प्यार है मुझको

"सई नदी" मैं तुझे कैसे भूल सकता हूं
मेरी नज़र में तेरा हुस्न जावेदानी है
मेरे लहू में रवानी है तेरी मौजों की
तेरे शबाब का धारा मेरी जवानी है

क़दम में है तेरी रफ़तारे ख़ास का अन्दाज़
निगाह में तेरी ख़ुद्दारियों का पानी है
इक–एक रेत के ज़र्रे में धड़कनें दिल की
हर एक मौज मेरी गुमशुदा कहानी है

तेरी मिठास तेरे प्यार की निशानी है
तू इन हरे भरे खेतों की रूप रानी है

हज़ार शक्ल बदलती है मौत राहों में
जहां में ग़म हैं बहुत ज़िन्दगी अकेली है
ये राज़ तूने बताया कि ज़िन्दगी क्या है
इक एक मौज तेरी मेरे साथ खेली है

नदी किनारे वो जंगल वो सब्ज़ आम के बाग़
जहां बहार की शहज़ादियां उतरती हैं
कभी–कभी तेरे आंचल की नर्म ख़ुशबुएं
उदास दिल को बहुत बेक़रार करती हैं

इसी की गोद में खेला है बचपना मेरा
इन्हीं फ़ज़ाओं में परियों की जुस्तुजू की है
इसी की धूल में मैंने सितारे ढूंढ़े हैं
यहीं से चांद को छूने की आरज़ू की है

इसी चमन में खिलाए हैं आरज़ू के गुलाब
इसी ज़मीन पर आंसू बहाए हैं क्या–क्या
बहक–बहक के चले हैं जुनूं की राहों पर
संभल–सभंल के क़दम डगमगाए हैं क्या–क्या

नदी किनारे सितारों की नर्म छांव तले
किसी की आंख ने जादू जगाए हैं क्या–क्या
मेरे लिए, मेरी तारीक ज़िन्दगी के लिए
चिराग़ उसकी नज़र ने जलाए हैं क्या–क्या

सई नदी को ये तारीख़ याद हो कि न हो
इसी ज़मीं पे बहा है लहू किसानों का
इसी ज़मीन पे अंग्रेज़ की निगाहों ने
जलाल देखा है बिफ़रे हुए जवानों का
यहां भी उट्ठी थी एक मौज–ए–जंग–ए–आज़ादी
इसी ज़मीं पे गिरा ताज हुकमरानों का

इन्हीं फ़ज़ाओं में चमकी है तेग़ राना की
इसी ज़मीं पे लहू के गुलाब जागे हैं
दुल्हन की तरह सजाया हैं 'इन्दिरा' ने इसे
इसी ज़मीन पे 'नेहरू' के ख़्वाब जागे हैं

यहीं तो जन्म लिया है 'मलिक मुहम्मद' ने
इसे फक़ीरों ने सोज़ो–गुदाज़ बख़्शा है
'नईम अता' ने अता की है आशिक़ी अपनी
'अली मिंया' ने इसे शर्फ़–ओ–नाज़ बख़्शा है

मेरे वतन मेरे प्यारे वतन मेरे ग़रीब वतन

सावन

पपीहा गीत गाता है घटा छागल बजाती है
हवा किस प्यार से सोये दिलों को गुदगुदाती है

अचानक इस तरह बिजली चमक कर डूब जाती है
कि जैसे लाज के घूंघट में दुल्हन मुस्कुराती है

जवानी नाचती है दिल की धड़कन के इशारों पर
मुहब्बत आरज़ू बन कर लहू में गुनगुनाती है

नदी की शोख़ मौजें राज़दारे–हुस्ने–फ़ितरत हैं
अंधेरे मुंह यहीं मौसम की शहज़ादी नहाती है

ये पुर्वा जाने किसकी याद की ख़ुशबू से बोझल है
फ़ज़ा क्या जाने किसके ग़म को आइना दिखाती है

न जाने क्यों उसे आवाज़ पर आवाज़ देता हूं
समझता हूं मेरी आवाज़ थक कर लौट आती है

अहदे वफ़ा

(अज़ीज़ दोस्त 'अनवार' अहमद की शादी पर)

होने वाला है कोई अहदे वफ़ा आज की रात
मुस्कुराता है मुहब्बत का ख़ुदा आज की रात

देख सेहरे का कोई गुल न बिखरने पाए
ज़रा आहिस्ता चल ऐ बाद–ए–सबा आज की रात

टूटने वाला है जादू शब–ए–तन्हाई का
जलने वाली है कोई शमए वफ़ा आज की रात

राहें रौशन हुई जाती हैं तेरी आंखों से
चांदनी बनके छलकती है हया आज की रात

दश्ते–ज़ुल्मत में सिकन्दर भी जिसे पा न सका
तेरी आंखों में है वो आब–ए–बक़ा आज की रात

तिश्नगी प्यार की ख़ुशबू से नहा जाएगी
खुल के बरसेगी मुहब्बत की घटा आज की रात

खुल गये हुस्न के महके हुए गेसू 'वाक़िफ़'
पड़ गई पांव में ज़ंजीर–ए–वफ़ा आज की रात

ग़ज़ल

ये सन्नाटा इक नग़्मा है मस्त हवा कुछ गाती है
बिखरीं है यादों की ज़ुल्फ़ें रात महकती जाती है

शमएं सी जलती जाती हैं दिल की सूनी राहों पर
आज किसी के खोए हुए क़दमों की आहट आती है

चांद की मतवाली सहबा है रात की काली आंखों में
जितना ही पीता जाता हूं प्यास मचलती जाती है

रह–रह कर दिल डूब रहा है तन्हाई के सागर में
लहरों पर तस्वीर किसी की बनती है मिट जाती है

यारो जिस दुनिया को भुलाने की ख़ातिर हम आते हैं
मैख़ाने में और भी ज़्यादा वह दुनिया याद आती है

'वाक़िफ़' हम दीवाने हैं, दीवाने जीना क्या जानें
बस इतना मालूम है हमको उम्र गुज़रती जाती है

क़ता

एक ही रात कितनी बड़ी है
और भी उम्रसारी पड़ी है
क्या पता बह गया कितना पानी
ये नदी तो वहीं पर खड़ी है

ग़ज़ल

यह दुनिया बड़ी ख़ूबसूरत है यारो
मुझे ज़िन्दगी से मुहब्बत है यारो

धरा क्या है इन पत्थरों के महल में
मेरा मैकदा फिर ग़नीमत है यारो

ख़ुदी को बचा कर फ़क़ीरी में ख़ुश हूं
यही सरख़ुशी मेरी दौलत है यारो

बदलते चलो सूरतें ज़िन्दगी की
यही एक जीने की सूरत है यारो

न दो बेवफ़ाई का इल्ज़ाम उसको
उसे भी किसी से मुहब्बत है यारो

धड़कते हैं दिल भीग जाती हैं आंखें
यही मेरे शेरों की क़ीमत है यारो

जहां लोग 'वाक़िफ़' हैं दिल की सदा से
वहां तक हमारी हुकूमत है यारो

ग़ज़ल

कुछ इस अदा से उदासी में तेरी याद आयी
गुज़र गयी है दबे पाँव शाम–ए–तन्हाई

तेरी नज़र से दिलों के चराग जल उठे
इन्हीं चराग़ों से दुनिया ने रोशनी पायी

तेरे सुकूत पे थीं बदगुमानियाँ क्या–क्या
तुझे क़रीब से देखा तो आँख भर आयी

शराब कहते रहे आँसुओं को अहले हवस
कोई समझ न सका चश्म–ए–नम की गहराई

जहाँ भी छाँव मिली दिल बहुत उदास हुआ
जहाँ सुकून मिला और तेरी याद आयी

हम अहले दर्द, कहाँ जायें तेरे कूचे से
वहीं मरेंगे जहाँ हमने ज़िन्दगी पायी

ये मैकदा भी न होता तो सोचिये 'वाक़िफ़'
कहाँ गुज़ारते हम ज़िन्दगी की तन्हाई

गज़ल

ज़िन्दी का वक़ार कम न करो
ग़म से घबरा के सर को ख़म न करो

चन्द लमहात की ख़ुशी के लिए
रायगाँ आबरूए-ग़म न करो

ख़ुद को देकर फ़रेब-ए-ख़ुद्दारी
हुस्न की रूह पर सितम न करो

चाहे जितने फ़रेब खाओ मगर
दिल की मासूमियत को कम न करो

मेरा हक़ है मैं ख़ुद ही ले लूंगा
तुम मेरे हाल पर करम न करो

ग़म का एहसास और बढ़ता है
तुम मेरी ज़िन्दगी का ग़म न करो

ग़ज़ल

उन निगाहों का इख़्तियार गया
आज मैं पी के होशियार गया

उसकी नीची निगाह क्या जाने
कौन महफ़िल से बेक़रार गया

अपनी मजबूरियों को क्या कीजे
मैं उसे जीत कर भी हार गया

वो तेरे ग़म का एक आंसू था
जो मेरी ज़िन्दगी संवार गया

रहज़नी का तो ग़म नहीं लेकिन
रहबरों का जो एतबार गया

शेर क्या ज़िन्दगी के नश्तर थे
मैं दिलों में जिन्हे उतार गया

टूट कर जाम–ए–आरज़ू 'वाक़िफ़'
दिल की हर तिश्नगी उभार गया

ग़ज़ल

ग़म नहीं है जो ग़म ज़ियादा है
सीनए–ज़िन्दगी कुशादा है

कोई मंज़िल न कोई जादा है
हर क़दम इक नया इरादा है

अपनी अपनी निगाह होती है
हुस्न रंगीन है न सादा है

अब कशिश क्या है ज़िन्दगी के लिए
एक उम्मीद उसका वादा है

ग़म नहीं कारवां के छुटने का
मेरी मंज़िल मेरा इरादा है

जो तेरे रूख़ को कर गई रंगीं
वो मेरी इक निगाहे सादा है

और मिक़दार कम करो 'वाकिफ़'
ज़िन्दगी कम है मय ज़ियादा है

माहौल

अजब माहौल है इस ज़िन्दगी का
अजब दुनिया है इस दुनिया के अन्दर

कहीं कलियां खिलाती हैं हवाएं
कहीं चलती हैं फूलों को कुचल कर

कहीं रौशन हैं राहें ज़िन्दगी की
कहीं गिरती है बिजली आग बन कर

कोई ग़म हो किसी की ज़िन्दगी का
मेरे दिल में उतर जाता है नश्तर

हवस की सेज पर मासूम कलियां
मोहब्बत के लिए राहों के पत्थर

जो पी लेते हैं फूलों के लहू को
गुलों का ताज है उनके ही सर पर

किसी के पेट में सोने की कानें
किसी के पेट में फ़ाक़ों के ख़ंजर

यही इंसान गौतम और ईसा
यही इंसान हैवानों से बदतर

अरे ये तिश्नगी की इन्तेहा है
जिये इंसान अपना ख़ून पीकर

जो रहबर हैं भटक जाते हैं राहें
जो रहज़न हैं वो बन जाते हैं रहबर

किसी सूरत से बदलो ज़िन्दगी को
ये तीशा है वो ज़ुल्म–ए–कोह पैकर

क़ता

बस मुर्दा शहन्शाहों के गुन गाते हैं
माहौल के तूफ़ानों से घबराते हैं
हालात के जो वार नहीं सह सकते
माज़ी के अंधेरे में पलट जाते हैं

ऐ हुस्न बता

ये रूप ये बिजली ये अदा किसके लिए है
ए हुस्न तेरा हुस्न बता किसके लिए है

किसकी शब–ए–तारीक पे बरसेगी ये ख़ुशबू
महकी हुई ज़ुल्फ़ों की घटा किसके लिए है

है किसके सहारे की तमन्ना में जवानी
चलने में लचकने की अदा किसके लिए है

किसके लिए बेताब है धड़कन तेरे दिल की
इस साज़े–मुहब्बत की सदा किसके लिए है

बेचैन हैं किसके लिए जागी हुई आंखें
ये जलती हुई शम्मे–वफ़ा किसके लिए है

किसके लिए ग़मगीन हैं मासूम निगाहें
ये कापंते होठों पे दुआ किसके लिए है

ये फूल ये तारे ये हवाएं ये घटाएं
सब तेरे लिए हैं तू बता किसके लिए है

हम भी इसी महफ़िल में हैं और ग़ैर भी 'वाकिफ़'
क्या जाने इन आंखों में हया किसके लिए है

रुबाइयां

हर शै पे अंधेरे ने क़बा डाली है
सुन्सान है दिल जाम–ए–नज़र ख़ाली है
ऐ काश कहीं कोई किरन मिल जाए
बरसात की यह रात बहुत काली है

□□□

कुछ और ख़लिश दिल की उभर जाती है
सन्नाटे में आवाज़ बिखर जाती है
बेताबी से जब तुझको सदा देता हूं
ये जाती हुई रात ठहर जाती है

□□□

आ जा कि मेरी बात चली जाएगी
ख़ुश्बू की तरह रात चली जाएगी
रह जाएंगी फिर प्यासी की प्यासी आंखें
कि रूठ के बरसात चली जाएगी

□□□

तारीकी में एक नूरसा लहराया है
आंगन की उदासी में यह कौन आया है
आकाश से तुम ख़ुद ही उतर आई हो
या मेरे तसव्वुर का हसीं साया है

□□□

होली

बचपन के कई रंग मिले राहों में
अपनों से न मिलने के गिले राहों में
धरती पर उतर आये बहारों के क़दम
वह रंग चला फूल खिले राहों में

शादाब बदन फूलों की डाली जैसे
रुख़सार हैं सिन्दूर की प्याली जैसे
ये रंग में डूबे हुए प्यारे मुखड़े
पानी में घुली शाम की लाली जैसे

है छाये हुए यादों के बादल कल से
सोया हूं न जागा हूं मैं इक पल कल से
देखा है उसे मैंने कयी साल के बाद
दिल में है अजब तरह की हलचल कल से

ग़ज़ल

आप क्या हैं ये बताया तो बुरा मान गये
मैंने आईना दिखाया तो बुरा मान गये

चांद तारों से सजाते हैं जो अपनी महफ़िल
एक दिया हमने जलाया तो बुरा मान गये

ख़ुद इशारा भी किया ख़ुद ही सहारा भी दिया
जो क़दम मैंने बढ़ाया तो बुरा मान गये

मेरी तस्वीर बनाते हैं ख़्यालों में मगर
आज मैं सामने आया तो बुरा मान गये

ख़ुद ही मग़रूर थे वह हुस्न पे अपने 'वाकिफ़'
जब कोई पास न आया तो बुरा मान गये

शेर

उनकी फ़ितरत कि पशेमां हैं सितम पर अपने
मेरी आदत कि मुझे कोई सितम याद नहीं

ग़ज़ल

प्यार की निगाहों का कैफ़ जावेदानी है
हर नशे में तल्ख़ी है हर निशात फ़ानी है

ज़िन्दगी का हासिल है आरज़ू जवानी की
और आरज़ू तेरी हासिले जवानी है

इक नई तमन्ना है ज़िन्दगी का हर लमहा
दिल की आरज़ुओं में मौत की रवानी है

चारागर भी हैरां हैं फ़ितरते मुहब्बत पर
मेरी बेक़रारी में रंग–ए–शादमानी है

ज़िन्दगी का हासिल है ज़िन्दगी की जौलानी
ज़िन्दगी की यकरंगी मौतकी निशानी है

कल सहर के मुखड़े पर रात की सियाही थी
अब सहर की आंखों में रात की गरानी है

ख़ून–ए–दिल से है 'वाक़िफ़' रंग–ए–दास्तां वरना
हुस्न भी कहानी है इश्क भी कहानी है

□□□

आरज़ुओं के साथ–साथ चले
ज़िन्दगी इतनी तेज़ गाम नहीं

□□□

ग़ज़ल

तेरे लिए इस दिल में भी अरमान बहुत हैं
अफ़सोस कि हम बेसर–ओ–सामान बहुत हैं

ये दिल की उदासी ये निगाहों का भटकना
हम तुझसे जुदा हो के पशेमान बहुत हैं

तन्हाई की शमएं हैं तेरे प्यार की यादें
ए जान–ए–तग़ाफुल तेरे एहसान बहुत हैं

कुछ तेरे तबस्सुम ही पे मौक़ूफ़ नहीं है
ए दोस्त ग़मे–इश्क़ के उन्वान बहुत हैं

इस अक़्ल ने दुनिया को संवारा तो है लेकिन
दुनिया पे मुहब्बत के भी एहसान बहुत हैं

हमवार किया है जिन्हें मुश्किल तलबी ने
मंज़िल की वही राहें अब आसान बहुत हैं

एहसास तो किरदार का आईना हैं 'वाक़िफ़'
इंसान अगर ख़ुद हो तो इंसान बहुत हैं

ग़ज़ल

लहू–लहू सा दिले–दाग़दार ले के चले
चमन से तोहफ़ए–फ़स्ले–बहार ले के चले

कहीं तो दिल को मिलेगा क़रार अहल–ए–जुनूं
चलो जहां भी दिले–बेक़रार ले के चले

सुना है हुस्न की महफ़िल में प्यार बिकता है
कहो कि इश्क़ भी दामन के तार ले के चले

रुके तो साया–ए–अब्रे–बहार बन के रुके
चले तो गर्दिशे–लैलो–नहार ले के चले

वतन की राह में सब कुछ लुटा दिया हमने
हमीं को अहल–ए–वतन सूए दार ले के चले

ग़ज़ल

तारीक है ये राहगुज़र जागते रहो
अहल–ए–शऊर–ओ–अहल–ए–नज़र जागते रहो

छोड़ो भी रहज़नों के फ़रेबों का तज़किरा
बदली है रहबरों की नज़र जागते रहो

इस क़ाफ़िला के साथ कई राहज़न भी हैं
क्या जाने लेके जाएं किधर जागते रहो

दरिया का ये सुकूं भी कहीं आरज़ी न हो
तूफ़ान की है किसको ख़बर जागते रहो

ख़्वाबों की वादियों से गुज़रता है क़ाफ़िला
हर शै है एक फ़रेब–ए–नज़र जागते रहो

वो दूर पर झलकती है मंज़िल की रोशनी
बस ख़त्म हो रहा है सफ़र जागते रहो

तारीकियां समेट के वह जा रही है रात
'वाक़िफ़' वह आ रही है सहर जागते रहो

इतनी गहरी किसकी नज़र है

दिल का हाल कोई क्या जाने इतनी गहरी किसकी नज़र है
कहने को ग़मख़्वार बहुत हैं किसके ग़म की किसको ख़बर है

अपना–अपना ज़ौक़–ए–तलब है अपनी–अपनी फ़िक्र–ओ–नज़र है
हर मंज़िल अंजाम–ए–सफ़र है हर मंज़िल आग़ाज–ए–सफ़र है

ज़ोरों पर है ज़ुल्म खिज़ां का जब से बहार आने की ख़बर है
बर्क़ नशेमन ढूंढ़ रही है फूलों पर गुलचीं की नज़र है

सारा गुलशन महक रहा है सारा गुलशन दहक रहा है
हम यूंही दीवाने नहीं हैं मौसम ही दीवानागर है

मुल्ला अब ग़म के मारों को अपनी दवा भी कर लेने दे
इक मुद्दत से देख रहे हैं तेरी दुआ में कितना असर है

तुझसे बिछड़ कर मैं क्या जाने किस रस्ते पर आ निकला हूं
हद्देनज़र तक है तारीकी हद्दे नज़र तक गर्दे सफ़र है

क्या कहता है ये सन्नाटा ये साहिल वाले क्या जानें
मैं जिसकी आहट सुनता हूं उस तूफ़ां की किसको ख़बर है

दैर–ओ–हरम से उकता कर हम मैख़ाने में आए थे 'वाक़िफ़'
आओ चलें इस मैख़ाने से ये भी उन्हीं लोगों का घर है

ग़ज़ल

यूं आयी तेरी याद शबेग़म सँवर गयी
इक चाँदनी तमाम फ़ज़ा में बिखर गयी

तारीकियों में जैसे चमकती हुई किरन
रौशन निगाह यूँ मेरे दिल में उतर गयी

तुझको ख़बर नहीं तेरी मासूम सी नज़र
बे रंग ज़िन्दगी में नया रंग भर गयी

काँटे बिछे हुए थे मुहब्बत की राह में
मेरी नज़र गयी न तुम्हारी नज़र गयी

कितने ही दिल फ़रेब फ़साने उभर गये
इन्सान की निगाह जहाँ पर ठहर गयी

इससे कहीं बुलन्द मुक़ामे हयात है
सिर्फ़ एक माहताब पे तेरी नज़र गयी

उम्मीद–ए–इन्क़लाब भी कितनी हसीन थी
कुछ ज़िन्दगी इसी के सहारे गुज़र गयी

'वाक़िफ़' जमाले यार को भी आज़मा लिया
ये चाँदनी भी दे के फ़रेबे सहर गयी

हिन्दोस्तां हमारा

इन्सानियत का ज़ज़्बा है रहनुमा हमारा
सबसे जुड़ा हुआ है ये सिलसिला हमारा

बढ़ता रहेगा यूंही ये क़ाफ़िला हमारा
हम रहनुमा हैं इसके ये रहनुमा हमारा

अम्न और शान्ती में दुनिया की ज़िन्दगी है
मंज़िल है ये हमारी ये रास्ता हमारा

नफ़रत को दूर कर दो हर दिल में नूर भर दो
जो है ख़ुदा तुम्हारा वो है ख़ुदा हमारा

दिल प्यार का दिया है ये एक आईना है
देखो न टूट जाए ये आईना हमारा

संगीत, प्यार, गंगा ये ताज, ये हिमाला
हमसे अगर है मिलना ये है पता हमारा

गज़ल

नए–नए तजुर्बे हमारे नए उसूलों में ढल रहे हैं
हमें बदलती है ज़िन्दगी हम भी ज़िन्दगी को बदल रहे हैं

निगाह से फूटती हैं किरनें दिलों से चश्में उबल रहे हैं
जो टूटता है कोई सितारा हज़ार सूरज निकल रहे हैं

जो तुमपे गुज़री जो हमपे गुज़री वही हक़ीक़त वही कहानी
जो पढ़ चुके हो वही ड्रामा है सिर्फ़ चेहरे बदल रहे हैं

न कोई जलवा न चश्म–ए–बीना न बैत–ए–अक़दस न तूर–ए–सीना
कहीं–कहीं बस बदन हमारे चराग़ की तरह जल रहे हैं

हैं रहबरों की वही अदाएं न पीछे जाएं न आगे आएं
खड़े हैं सदियों से राह रोके न हट रहे हैं न चल रहे हैं

क़तआत

झगड़े करा रहे हैं तकरार कर रहे हैं
अपने लिए एलेक्शन तैयार कर रहे हैं
ख़ुद अपनी ज़िन्दगी से बेज़ार हो चुके हैं
औरों को ज़िन्दगी से बेज़ार कर रहे हैं

लिए जो कागज़ी फूलों के झूठे हार बैठे हैं
वो क्या जानें कि हम दिल में लिए गुलज़ार बैठे हैं
अभी मरने की ख़्वाहिश है न फ़ुर्सत है हमें 'वाकिफ़'
वो जश्ने ग़म मनाने के लिए तैयार बैठे हैं

रंग-रंग ज़िन्दगी

ये लोग रंग–रंग के, ये रंग–रंग ज़िन्दगी
नई बहार ज़िन्दगी, नई उमंग ज़िन्दगी
ये रंग–रंग की ज़मीं, ये रंग–रंग का जहां
ये रंग–रंग का समां, ये रंग–रंग आसमां
ये मौसमों के क़ाफ़िले, ये बादलों के कारवां
कोई इधर कोई उधर, कोई यहां कोई वहां
लहर–लहर के साथ में हवा तरंग ज़िन्दगी
ये लोग रंग–रंग के, ये रंग रंग ज़िन्दगी

ये फूल रंग–रंग के, सुगन्ध रंग–रंग की
ये रूप रंग–रंग के, पसन्द रंग–रंग की
ख़्याल रंग–रंग के, ये ख़्वाब रंग–रंग के
सवाल रंग–रंग के, जवाब रंग–रंग के
वही हवा, वही फ़ज़ा, नई पतंग ज़िन्दगी
ये लोग रंग–रंग के ये रंग–रंग ज़िन्दगी

ये ज़िन्दगी का रूप है, ये ज़िन्दगी का रंग है
कभी ग़मी का रंग है कभी ख़ुशी का रंग है
वो तीरगी का रंग है ये चांदनी का रंग है
हर एक रंग से हसीन सादगी का रंग है
रवां दवां है सादगी से मेरे संग ज़िन्दगी
ये लोग रंग रंग के ये रंग रंग ज़िन्दगी

गुल का इन्तेक़ाल

(अजीज़ दोस्त ज़की अहमद की वालदा के इन्तेक़ाल पर)

क्या ख़बर गर्दिश में हैं कब से ये दिन ये माहो साल
और हम नीले समन्दर में हैं मौजों की मिसाल

इस जहाने रंगो बू की ज़िन्दगी महदूद है
"हर कमाले रा उरूजो हर उरूजे रा ज़वाल"

रूह जिसकी मुतमईन है हो गया वो कामयाब
जिसके बच्चे भी सआदतमन्द हैं वो है निहाल

बेग़रज़ क़ुर्बानियां बेलौस ख़िदमत की मिसाल
मां ! कहां दुनियां में है ? तेरी मुहब्बत की मिसाल

बावफ़ा थीं नेक थीं तुम थीं कनीज़े फ़ात्मा
अपने शौहर के लिए सच्ची रिफ़ाक़त की मिसाल

चुपके–चुपके बह रहे हैं अश्के ग़म 'मख़्दूम' के
आज यादों के चराग़ों से चमक उट्ठे ख़्याल

जिनसे ढ़ारस की तवक़्क़ो थी वो ख़ुद ख़ामोश हैं
शिद्दते ग़म से वो हस्ती बन गई है ख़ुद सवाल

लाख आंसू भी तुम्हारे प्यार की क़ीमत नहीं
ज़ब्ते ग़म मुश्किल मगर इज़हारे ग़म अमरे मोहाल

रूह वो पाकीज़ातर हो कीजिए 'वाक़िफ़' दुआ
सब्र के मरहम से है सारे ग़मों का इन्देमाल

इन्दिरा गांधी

मुखड़े पे तेरे सुबह की शोख़ किरन धुआं–धुआं
सुब्हे वतन लहू–लहू शामे वतन धुआं–धुआं

मौज–ए–सबा बदल गई बाद–ए–ख़िज़ां में ढ़ल गई
शाख़–ए–गुलाब जल गई हुस्न–ए–चमन धुआं–धुआं

शाम उदास, बेक़रार, फूलों की आंख अश्कबार
शोला–ब–शोला आशियां सारा चमन धुआं–धुआं

जैसे फ़िज़ा की आंख में अश्क से हैं भरे–हुए
घाट उदास–उदास है गंग–ओ–जमन धुआं–धुआं

जोश में होश खो गये, हादसे कितने हो गए
बात है तेरी बेअसर मेरा सुख़न धुआं–धुआं

आग से क्या मिला तुझे आग से क्या मिला मुझे
तेरा भी मन धुआं–धुआं मेरा भी मन धुआं–धुआं

अब न दिलों को तोड़िए रिशतों को फिर से जोड़िए
एक बदन है ये वतन सारा वतन धुआं–धुआं

क़ता

जो हो चुका उसे नज़र अन्दाज़ कीजिए
फिर से तआल्लुक़ात का आग़ाज़ कीजिए
ये ज़िन्दगी का गीत है नग़्मा वतन का है
क्यों चुप हैं वो उन्हें भी हमआवाज़ कीजए

नॉत

दर्द से अगर दिल का सिलसिला नहीं होगा
कोई नाम रटने से कुछ भला नहीं होगा

जो हुआ जुदा तुझसे दीन का न दुनियां का
ज़िन्दगी से फिर उसका राबता नहीं होगा

बाद–ए–मुहब्बत से जिसका जाम ख़ाली है
पारसा बना होगा पारसा नहीं होगा

जो गुनाहगारों पर हंस के तन्ज़ करते हैं
उनको तेरी रहमत का आसरा नहीं होगा

जलवए–मुहम्मद से जो चराग़ रौशन हैं
आंधियों को छूने का हौसला नहीं होगा

ये जहां बनाया क्यूं बज़्म को सजाया क्यूं
हुस्न के लिए शायद आईना नहीं होगा

उसकी ज़ात पर मुझको ऐतमाद है 'वाक़िफ़'
मुश्किलों में भी अपना दिल बुरा नहीं होगा

गीत

लहर लहर नग़्मा

पछुवा आई पुरवा बन के
नदी बह चली दरिया बनके
जब आई बरसात बह चले
दिल के सब जज़्बात बह चले
हम बादल के संग उड़ चले
हम नदिया के साथ बह चले

क़ता

मग़रिब में छलक रहा है ज़ाम अब तो आ जा
यादों का उफ़क़ है लाला फ़ाम अब तो आ जा
धरती पर उतर रही है रात धीरे-धीरे
त्योहार की हो रही है शाम अब तो आ जा

किसान

दुःख के दिन कट गये मोरे भइया
दुःख के दिन कट गये मोरे भइया
पर्वत काटा धारा काटा
मेहनत है जीवन का ताज
सर्दी काटी गर्मी काटी
काटा बिदेसिया का राज
गेहूं काटा जुंधरी काटी
काटा महाजन का ब्याज
सब पत्थर हट गये मोरे भइया
दुःख के दिन कट गये मोरे भइया
माटी ही अपना चंदन है रानी
माटी ही तेरा सिन्दूर
माटी ही अपना जीवन है रानी
माटी ही अपना ग़ुरूर
माटी ही अपना ओढ़ना बिछौना
माटी ही मुकुट मयूर
मेहनत में सब डट गये मोरे भइया
दुःख के दिन कट गये मोरे भइया
बोएं पसीना उगाएं मोती
बांट रहे धरती का प्यार
खेतों में पुरवा बजाए घुघंरू
नाचे फसलिया हमार
कोई भी खेत रहे न ख़ाली
है ये समय की पुकार
घर–घर सुख बट गये मोरे भइया
दुःख के दिन कट गये मोरे भइया

गीत

बही चली जाए जैसे नदिया का पानी, हमारी ज़िन्दगानी
धरती के सुख–दुख की सच्ची कहानी हमारी ज़िन्दगानी

बरखा की भीगी हवाओं में बहती
तानों में उठती सदाओं में बहती
गीतों में चलती कथाओं में बहती
पत्तों पे लिक्खी हमारी कहानी, हमारी ज़िन्दगानी

राजा भी हारे तो हम नहीं हारे
हार गये तन, ये मन नहीं हारे
हार गये सोना रतन नहीं हारे
इतनी नई भी है जितनी पुरानी, हमारी ज़िन्दगानी

सूखा पड़े चाहे आकाश टूटे
हाथों से धरती का दामन न छूटे
माटी में मिल–मिल के माटी से फूटे
है ये हरियाली हमारी निशानी हमारी ज़िन्दगानी

गीत

जाए रही इक बहार आए रही इक बहार
दुपहर में विधवा हवा, रतिया सुहागन बयार
जाए रही इक बहार
आंधी मा गाये रहा जेठ का महिनवां
रस्ते मा भाग रहे धूल भरे दिनवा
मेहनत के माथे से टपके पसीनवा
मनवा जुड़ाए हमार
जाए रही इक बहार
एक फसल जाए रही सोना बिखेर के
पुरवइया लाए रही बदरा को घेर के
रुत मुस्काए रही ज़रा मुंहफेर के
महक रहे फूलों के हार
जाए रही इक बहार
चैत की बहार सारी बगियन में भर गई
फूलों की महकार आंगन में भर गई
मस्ती की एक लहर तन मन में भर गई
पेड़ों ने कर लिया सिंगार
जाए रही इक बहार आए रही इक बहार

बरखा बहार

देखो घटा गहरानी, छाए गई बरखा बहार
पुरवा भई मस्तानी आए गई बरखा बहार

खेतों के प्याले से चांदी छलके
बादल में सूरज का सोना झलके
पलकें उठाए बिजुरिया चमके
घुटने घुटने पानी
आए गई बरखा बहार

धारा में तैर चली कागज़ की नइया
कोई सहारा न कोई खेवइया
बच्चों ने छेड़ दिया हइयारे हइया
नदिया भई तूफानी
आए गई बरखा बहार

बैल नहायें किसनवा नहाये
जियरा नहाये बदनवा नहाये
दूर से रोगी का मनवा नहाये
सोये रही थी धरती
जगाय गई बरखा बहार
आए गई बरखा बहार

मेघ मल्हार

मन गाये मेघा मल्हार
घुमड़ घुमड़ कर बादल आए
रिमझिम पड़े फुहार
मन गाये मेघ मल्हार
बूदें गाएं, पुरवा गाए
लहरें गाएं, दरिया गाए
बोले मोर, पपीहा गाए
कोयल करे पुकार
मन गाये मेघ मल्हार
प्यास बुझी प्यासी धरती की
जागी हर शक्ती धरती की
जगा रही सोए तन मन को
ये ठंडी बौछार
मन गाये मेघ मल्हार
जल थल हो गई धरती सारी
प्यासे देस बदरिया जारी
दूर–दूर नइया न मांझी
सूझे आर न पार
मन गाये मेघ मल्हार

रामा पड़े बौछार

उड़ाये लिए जाए जिया बहार का पहला पानी
रामा पड़े बौछार
बहाये लिए जाए जिया असाढ़ का पहला पानी
रामा पड़े बौछार

राम ये बदरिया घर-घर जाए
ताल तलैय्या सब भर जाए
आज नहाए जो वो तर जाए
रामा पड़े बौछार

झर-झर बरसो, झूम-झूम बरसो
धरती के अंगना घूम-घूम बरसो
मुरझाए मुखड़े चूम-चूम बरसो
रामा पड़े बौछार

लहर-लहर पुरवइया डोली
बादल धरती से खेले होली
ख़ाली नहीं होती सखी की झोली
रामा पड़े बौछार

शेर

विज्ञान-विज्ञान है ईश्वर नहीं
इंसान इंसान है जानवर नहीं

बच्चों के लिए

तुम को छूने की कोशिश में दिन कट गया
दूर जाती हुई तितलियो ख़ुश रहो

हम एक हैं

हम एक है हम एक हैं
एक मंज़िल है अपनी क़दम एक हैं
हम एक हैं ....

रूप कोई सही आइना एक है
कोई भाषा सही भावना एक है
देश के वास्ते कल्पना एक है
रूप कितने हैं लेकिन सनम एक हैं
हम एक हैं ....

उपनिषद में वही–वही क़ुरआन में
ग्रन्थ साहब में गौतम के निर्वान में
बोलता है कभी कोई इन्सान में
एक सच है ये सारे धरम एक हैं
हम एक हैं ....

रंग कोई सही ये लहू एक है
शब्द अंजान है आरज़ू एक है
रास्ते हैं जुदा जुस्तुजू एक है
प्यार की राह के पेचोख़म एक है
हम एक हैं ....

इश्क पंजाब है हुस्न कश्मीर है
ज़ुल्फ़ बंगाल है रंग जैसलमेर है
सैकड़ों रंग की एक तस्वीर है
अपने दुःख एक हैं अपने ग़म एक हैं
हम एक हैं ....

जिस पे पड़े वही जाने

जिस पे पड़े वही जाने भइया
जिस पे पड़े वही जाने

निर्बल जाने निर्धन जाने
जिस पर पड़े वही तन जाने
जिस पर पड़े वही मन जाने
जो जाने वो भी कम जाने

जिस पर पड़े वही जाने भइया
जिस पर पड़े वही जाने

उसने हमको हिम्मत दी है
दुःख सहने की ताक़त दी है
हर आंसू की क़ीमत दी है
उम्मीदों की जन्नत दी है

दर्द हमारा मालिक जाने
जो भी जाने वो कम जाने
जिस पे पड़े वही जाने

क़ातिल जाने न ज़ालिम जाने
जाने सिपाही न हाकिम जाने
पंड़ित जाने न आलिम जाने
जो जाने वो भी कम जाने — जिस पे पड़े वही जाने

बच्चों का गीत

(मैं उठता हूं बहुत सवेरे)

उस मालिक की पूजा करके
पढ़के नमाज़ और सजदा करके
फिर थोड़ा पढ़ता लिखता हूं
अपना तन मन ताज़ा कर के
हो जाते हैं दूर अंधेरे
मैं उठता हूं बहुत सवेरे
रात को जल्दी सो जाता हूं
नींद नगर में खो जाता हूं
अच्छी बातें अच्छी यादें
मैं भी शामिल हो जाता हूं

प्यारे मुखड़े तेरे मेरे
मैं उठता हूं बहुत सवेरे
झोंको की महकार जगाए
चिड़ियों की चहकार जगाए
एक परी का प्यार सुलाए
एक परी का प्यार जगाए

मां की झलक में दर्शन तेरे
मैं उठता हूं बहुत सवेरे

गांधी जी

जग में ऊँचा मुक़ाम बापू का
सारी दुनियां में नाम बापू का

देश की आत्मा को पहचाना
गांव था एक धाम बापू का

वही अल्लाह है वही ईश्वर
था यही तो पयाम बापू का

अब तशद्दुद पे सब उतारू हैं
है अहिंसा पयाम बापू का

शान्ती के लिए शहीद हुए
है बहुत नेक काम बापू का

मुल्क में अमन, एकता के लिए
अभी बाक़ी है काम बापू का

आदमी को जीना सिखा दो

दूर–दूर धरती का आंचल
दूर–दूर दरिया की हलचल
दूर–दूर बरस रहे बादल
दूर–दूर प्यार बरसा दो
आदमी को जीना सिखादो
दूर–दूर झूमती हवाऐं
दूर–दूर चमकती दिशाएं
दूर–दूर जाती हुई राहें
दूर–दूर बाहें फैला दो
आदमी को जीना सिखा दो
बिखरी हुई तारों की माला
चांदनी में धूप का उजाला
कोई रूप गोरा कोई काला
रूप को संवार दो सजा दो
आदमी को जीना सिखा दो
ज़िन्दगी के दर्द को जगा दो
आंसुओं से हर पलक सजादो
जानवर को आदमी बना दो
आदमी को जीना सिखा दो

दुआ
(हिन्दी उर्दू बच्चों के लिए)

मेरे मालिक मेरी दुआ सुन ले
ईश्वर मेरी प्रार्थना सुन ले
रोशनी दे कि मैं तुझे जानूं
और सच्चाइयों को पहचानूं
मुझको सच्चे गुरू से ज्ञान मिले
ये ज़मीन और आसमान मिले
शब्द से रोशनी मिले मुझको
अम्न और शान्ती मिले मुझको
चांदनी दे मुझे मुहब्बत दे
दिल में छोटे बड़ों की इज्ज़त दे
मेरे मालिक मेरी दुआ सुन ले
प्यारे दे ज़िन्दगी का रस्ता दे
रोशनी दे के मन को चमका दे
कोई भी चाहे कोई बात कहे
अच्छी हर बात मुझको याद रहे
काम ऐसा करें कि मान बढ़े
जिससे इन्सानियत की शान बढ़े
डगमगाऊं तो आसरा देना
सीधा रस्ता मुझे दिखा देना
मेरे मालिक मेरी दुआ सुन ले

साल गिरह

मौसम आया सिंगार किए

पौधों के बदन गुल्ज़ार लिए
शाख़ें फूलों का हार लिए
महकार लिए चहकार लिए
जाने कितने उपहार लिए

मौसम आया सिगांर किए

बढ़ती जाए ये साल गिरह
हर साल मिलें खुशियां तुमको
हर साल आए ये साल गिरह
अपनों का सच्चा प्यार लिए

मौसम आया सिगांर किए

एक रोज़ ख़ुशी का और मिला
जीवन की नाज़ुक डाली पर
खुशरंग नया एक फूल खिला
झोके रूत की महकार लिए

मौसम आया सिगांर किए

ईद और दीवाली साथ आई
एक रौशन रौशन दिन गुज़रा
एक जगमग जगमग रात आई
आंखों में चमकता प्यार लिए
मौसम आया सिगांर किए

संगीत चले आहंग चले
मुखड़ों पे खुशी का रंग चले
फिर भाई बहन की जंग चले
चाहत शोख़ी तकरार लिए
मौसम आया सिगांर किए

ग़ज़ल

उनका तसव्वुर यूं लहराया
जैसे ढलती रात का साया

जब भी टूटा कोई सितारा
तेरा बिछड़ जाना याद आया

सब का कहना कर दिया वरना
तुझ से बिछड़ कर क्या सुख पाया

तेरे तग़ाफ़ुल का शिकवा क्या
मैं खुद अपने काम न आया

अक़्ल ने खोया सब कुछ पाकर
इश्क़ ने खोकर सब कुछ पाया

ख़ुशी और ग़म में बसर करते करते
हुई आंख पत्थर नज़र करते करते
इधर है जहन्नम, उधर एक जन्नत
कहां आ गये हम सफ़र करते करते

ग़ज़ल

जो आंसू ख़ामुशी से बह गये हैं
दुःखों की दास्तानें कह गये हैं

बहुत मुश्किल था दिलको तोड़ देना
मगर हम मुस्कुरा कर रह गये हैं

वह शाख़–ए–आरज़ू मुरझा चुकी है
मगर यादों के कांटे रह गये हैं

हमारी बात समझो या न समझो
जो कहना था हमें हम कह गये हैं

पुराने नाख़ुदाओं को न ढूंढो
वह कश्ती साथ लेकर बह गये हैं

कुछ ऐसे हादसे गुज़रे हैं 'वाकिफ़'
जो दिल में दाग़ बन कर रह गये हैं

ग़ज़ल

ये अमल, ये ख़्याल अपना है
ज़िन्दगी झूट है न सपना है

दिल की कुछ मानो कुछ नहीं मानो
दिल का तो काम ही तड़पना है

रोशनी, रोशनी में क्या टकराव
हर शमा का मुक़ाम अपना है

इसकी ताबीर भी कहीं होगी
सब की आँखों में कोई सपना है

सोने चांदी के शहर में 'वाकिफ़'
सिर्फ़ मिट्टी का जाम अपना है

बिखरे फूल

मैं तो बुलबुल हूं मेरा काम है गाते रहना
भूल जाऊं तो मुझे याद दिलाते रहना

□□□

जिसने इस दिल को सिखाया है मुहब्बत करना
वो जहां भी हो ख़ुदा उसकी हिफ़ाज़त करना
मुस्कुरा देता हूं इंसान की नादानी पर
क्या करूं मैं, मुझे आता नहीं नफ़रत करना

□□□

मौसम के ये तूफ़ान तो आते ही रहेंगे
साहिल पे मकां लोग बनाते ही रहेंगे
आओ चलें बस्ती नहीं शमसान है 'वाक़िफ़'
फूलों को यहां लोग जलाते ही रहेंगे

□□□

सब को गीत सुनाए मैंने मुझको गीत सुनाए कौन
सब का दिल बहलाया मैंने मेरा दिल बहलाए कौन

दाग़ तो उस पर लगता है जो दामन उजला होता है
जिसका पैराहन गन्दा है उस पर दाग़ लगाए कौन

आज घिर गया है मांझी भी इस तूफ़ानी सागर में
सब को पार लगाया इसने इसको पार लगाए कौन

□□□

ग़ज़ल

ये जोगी हर जगह हर अजनबी का मेहमां होगा
ख़बर तेरी जहां होगी, पता तेरा जहां होगा

दुःखी होके न जाओ लौट कर यादों की बस्ती में
कहीं सूने खंडहर होंगे, कहीं खाली मकां होगा

दबे पांव चली आऐंगी तेरी मेरी यादें भी
मुहब्बत का जहां भी कोई अफ़साना बयां होगा

मुहब्बत बेवफ़ा होती नहीं हो भी नहीं सकती
ये मुमकिन है यही ज़ज़्बा किसी पर मेहरबां होगा

हरी हो जाएगी हर शाख़–ए–गुल फ़स्ले बहारां में
मगर ये शाख़ से टूटा हुआ पत्ता कहां होगा

हमारी ज़िन्दगी तो कट गयी तारीक गलियों में
हमारे बाद बस्ती में चराग़ों का समां होगा

न जाओ छोड़ कर ये गांव 'वाक़िफ़' धूल के डर से
चमकते शहर में फूलों के मुखड़ों पर धुआं होगा

मौसम बुरा न माने

मौसम का गीत गाओ मौसम बुरा न माने
बहती हुई हवा का सरगम बुरा न माने

ज़ज़्बात को सँभालो ग़म को ज़रा मना लो
ये अश्क पोंछ डालो शबनम बुरा न माने

ये मत कहो घरों में है आज भी अंधेरा
महफ़िल में रौशनी का आलम बुरा न माने

बैठे थे सर झुकाए जब लोग फूल लाए
जब सर पे आए पत्थर तब हम बुरा न माने

क़ता

हुस्न का कोई रंग नहीं
इश्क़ की कोई ज़ात नहीं
जन्म-जन्म का साथ है ये
दो इक दिन की बात नहीं

ग़ज़ल

मिला था कोई अजनबी रास्ते में
मुझे मिल गयी हर ख़ुशी रास्ते में

बदलना पड़ा ख़ुदकुशी का इरादा
मिली ग़ुमशुदा ज़िन्दगी रास्ते में

इधर आओ मैं जाँ को सैराब कर दूं
मिलेगी बहुत तिश्नगी रास्ते में

उसे मिल न पायी समन्दर की मंज़िल
कहीं खो गयी वह नदी रास्ते में

गुज़रते गये हम सदी से भी आगे
खड़ी रह गयी ये सदी रासते में

बहुत आयेगा काम दिल का उजाला
कहीं भी नहीं रोशनी रास्ते में

उसे शहर में अब भटकना पड़ेगा
अगूंठी कहीं खो गयी रास्ते में

अंधेरे में 'वाक़िफ़' सफ़र कर रहा हूं
मिलेगी मगर चांदनी रास्ते में

मौलाना अबूल कलाम आज़ाद

तेरी फ़िक्र, तेरी तहरीर
अहद की रोशन एक लकीर
रोशन बातें रोशन ज़हन
रोशन मुखड़ा साफ ज़मीर
सच्चा मुस्लिम सच्चा रफ़ीक़
सच्चा आलिम सच्चा फ़कीर
ईद की ख़ुशबू कपड़ों में
माथे पर गुल रंगे अबीर
गाँधी नेहरू मौलाना
लायें कहां से इनकी नज़ीर
एक मुअरिख़ एक अदीब
इक रहबर वह एक मुशीर
आज भी ज़िन्दा हर तहरीर
शेरो अदब हो या तफ़सीर
कोई न समझे दर्दे वतन
कोई न जाने तेरी पीर
लाफ़ानी तक़रीरों में
देश के ख़्वाबों की ताबीर
करते क़द्र जो अहले वतन
धुंधली क्यूं होती तस्वीर
दिल में जहां का दर्द लिये
तन्हाई तेरी तक़दीर
इस धरती पर आया था
बज़्म–ए–फ़लक़ का एक सफ़ीर

मौसम बदल जायेगा

हैं मिसाले अब्र ये रोज़ो शब, जो बरस गया सो बरस गया
नया साल है नयी आरज़ू नये ख़्वाब हैं नयी जुस्तुजू
कहीं आशियां हैं धुआं धुआं कहीं ज़िन्दगी हैं लहू–लहू
कभी खत्म होगा ये सिलसिला कि हमें यक़ीने बहार है
है वतन की ख़ाक में ज़िन्दगी ये ज़मीं ज़मीने–ए–बहार है

ग़मे इन्सां से रहे दर्द का रिश्ता क़ायम
आंसुओ तुम मेरी पलकों को सजाये रखना

अब भटकती फिर रही है ज़िन्दगी तेरे बग़ैर
बेक़रारी बन गयी आवारगी तेरे बग़ैर

जुदाई का ज़माना जीते मरते बीत जायेगा
तुम्हे जिसने मिलाया था वो फिर तुमसे मिलायेगा।

वह हसीन

वह इक हसीन, इक शफ़ीक़ मेहरबां नहीं रहा।
कि इक बुज़ुर्ग अब हमारे दरमियां नहीं रहा।।

वतन के दर्दो ग़म का एक तर्जुमां नहीं रहा।
कि अमन–ओ–इत्तहाद का इक निशां नहीं रहा।।

जो काम देखिए तो एक नौजवां नहीं रहा।
कि एक दिन भी ज़िन्दगी का रायगां नहीं रहा।।

अदब की महफ़िलें करेंगी याद मुद्दतों उसे।
वह ख़ुशख़्याल, ख़ुशमिज़ाज, वह ख़ुशबयां नहीं रहा।।

वह नाम एक दरख़्त है वह ज़ात एक छाँव थी।
वह इक शजर नहीं रहा वह इक निशां नहीं रहा।।

जो बच गयी वह याद है जो रह गयी वह रोशनी।
चिराग़ बुझ गया मगर कहीं धुआं नहीं रहा।।

ज़िन्दगी का आसरा है ज़िन्दगी

हमसफ़र है रहनुमा है ज़िन्दगी
ज़िन्दगी का आसरा है ज़िन्दगी

बाग़ है बादे सबा है ज़िन्दगी
तेज़ तूफ़ानी हवा है ज़िन्दगी

हर जहां रौशन है इसके नूर से
रोशनी का सिलसिला है ज़िन्दगी

दूसरों के काम अगर आती रहे
इक इबादत है दुआ है ज़िन्दगी

हर मुर्सरत में उसी का शुक्रिया
रंज में सब्रओ रज़ा है ज़िन्दगी

ज़िन्दगी इस पार भी उस पार भी
आती और जाती हवा है ज़िन्दगी

बाप की शँफ़क़त की प्यारी धूप है
मां की आंखों का दिया है ज़िन्दगी

हम जागते रहे

इल्म का हरम ले लिया गया
ध्यान का सनम ले लिया गया
हाथ से क़लम ले लिया गया
फिर भी हम सोचते रहे
धूप ने हमें काला कर दिया
भूख ने हमें आधा कर दिया
ज़ुल्म ने हमें अन्धा कर दिया
फिर भी हम देखते रहे
रात जब सजी ख़्वाब खो गये
पास के चराग़ दूर हो गये
सुबह जब हुई लोग सो गये
फिर भी हम जागते रहे
ज़हन बिक गये ज़मीर बिक गये
हम ग़रीब क्या अमीर बिक गये
बिक गये क़लम सफ़ीर बिक गये
फिर भी हम बोलते रहे

क़ता

सच परेशान है कि हम चुप हैं
ख़ुदा ख़ामोश है सनम चुप हैं
क़ाट ली है ज़बां सियासत ने
झूट आज़ाद है क़लम चुप हैं

ग़ज़ल

दामन–ए–एहसास खुद कांटों से भर लेते हैं लोग
ऐसी बाते भी हैं जिनको फर्ज़ कर लेते हैं लोग

ज़िन्दगी के दर्द को महसूस कर लेते हैं लोग
कोई शय बरबाद होती है असर लेते हैं लोग

अपनी तस्वीरों में तेरा रंग भर लेते हैं लोग
कुछ ख़्याली सूरतें है जिनपे मर लेते हैं लोग

ज़ुल्म की आदत जुदा इंसान की फ़ितरत जुदा
जो भी तीर आता है अपनी जान पर लेते हैं लोग

ये हवायें ये सदायें ये घटाऐं ये आँधियाँ
हमसफ़र इन ताक़तों से बाल–ओ–पर लेते हैं लोग

तिश्नगी की अब शिकायत है न साकी से गिला
'वाकिफ़' अपने जाम को अश्कों से भर लेते हैं लोग

ग़ज़ल

आज ये दुःख है, तो कल है ज़िन्दगी
मौत का नेमुलबदल है ज़िन्दगी

फूल मुरझाते भी हैं खिलते भी हैं
वाद–ए–जन्नत का फल है ज़िन्दगी

आंसुओं में मुस्कुराती है कभी
झील है दुनिया कंवल है ज़िन्दगी

जिनके दिल में दर्द का एहसास है
उनकी आंखों में सजल है ज़िन्दगी

प्यार से महका हुआ इक गीत है
दर्द में डूबी ग़ज़ल है ज़िन्दगी

एक धोका है ख़्याले ख़ुदकुशी
हर परेशानी का हल है ज़िन्दगी

ईद मिलन

(७ अप्रैल १९६२ ईद मिलन के जलसे के लिए लिखा)

तुम कला के दोस्त हो तुम एकता की शान हो
तुम को हक़ है जिसे चाहो परमानित करो
दोनों बातों से मैं ऊपर उठ चुका हूं दोस्तो
चाहे अपमानित करो चाहे सम्मानित करो

ये मेरी राय बरेली है
ये अपनी राय बरेली है
ये पेड़ हैं बचपन के साथी
ये नदिया मेरी सहेली है

हैं एक से एक यहां ज्ञानी
है एक से एक यहां हस्ती
व्यापार सही व्यवहार सही
मुस्कान मुफ़्त चीजें सस्ती
सड़कों पे दुकाने रक्खी हैं
हर राह में ठेलम ठेली है
ये अपनी राय बरेली है

ये छोटी सी सुन्दर बस्ती
नेहरू ने उठाया है इसको
इन्दा ने सजाया है इसको
मेहनत ने बसाया है इसको
देदे के पसीने के मोती

सबने चमकाया है इसको
मुखड़े पे दमक है चन्दा की
सिन्दूरी मांग सन्दीली है
ये अपनी राय बरेली है

है अली मियां का ज्ञान यहां
सूफ़ी सन्तों का मान यहां
सीधा साधा इन्सान यहां
जीना है अभी आसान यहां
हिन्दू मुस्लिम हैं नेक यहां
सिंधी पंजाबी एक यहां
जब शहर शहर में आग लगी
एकता का जलवा देख यहां
जो दुःख आये हैं झेले हैं
जो चोट पड़ी है सह ली है
ये अपनी राय बरेली है

है ग़ज़ल छन्द संगीत यहां
फूलों से महकते गीत यहां
सुर ज्ञान यहां सुर दीप यहां
गंगा के सुन्दर घाट यहां
मन्दिर मस्जिद एक साथ यहां
मन का है चौड़ा पाट यहां
लोन सई से गंगा तक
बालू की चांदनी फैली है
ये अपनी राय बरेली है

कैसे–कैसे सुन्दर मुखड़े
कैसे–कैसे प्यारे लोग
कैसे–कैसे रूप मनोहर
कैसे चन्दा तारे लोग

किस से पूछूं कौन बताए
कहाँ गए वह प्यारे लोग
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई
ये सच्चे अल्लाह के बन्दे
ये सब लोग हमारे लोग
कहाँ गए वह प्यारे लोग
बस्ती में बेवफ़ा लोग हैं
कौन पता बतलाएगा
तुम्हीं बताओ हवा के झोंको
बस्ती–बस्ती फिरते हो
कहां गयीं मौसम की चिड़ियाँ
किधर गए बंजारे लोग
ये सब लोग हमारे लोग
कहाँ गए वह प्यारे लोग

२६ जनवरी

२६ जनवरी
पीछे बीता हुआ साल, आगे मुस्कुराता फ़रवरी
२६ जनवरी
ये निशान है वतन की ख़ुद्दारी का
गाँधी, नेहरू और हिन्द की रवादारी का
अम्बेडकर की सूझ–बूझ का होशियारी का
ये इम्तहान है हमारी सच्चाई का, ग़ैर जानिबदारी का
ये फल है अबुल कलाम की इल्मदानी का
ये इनाम है शहीदों की क़ुर्बानी का
तंग नज़री की सियासत से इस दिन को बचाना है
दुनिया में नफ़रत और फ़साद फैलाने वाले एजेन्ट
कारख़ानों कालेजों में लोगों को बहकाते
आग लगाती ग़ैर मुलकी साज़िशें
तिजारत और सियासत में घुसे हुए मौत के चूहे
दुनिया में तनाव और जंग की हवा चलती रहे
हर हुकूमत इनकी मरज़ी से बदलती रहे
पड़ोसी से पड़ोसी को डराते रहो
तक़रीरों और तहरीरों से लड़ाते रहो
ये है दुनिया की रहबरी २६ जनवरी
ये संग दिल समाज चक्कर दार क़ानून
बेइन्साफ़ी बेइमानी रिश्वत ख़ोरी
झूट और ज़ुल्म की वकालत सच्चाई की चोरी
टूटा ख़ुदा से रिश्ता टूटी धरम की डोरी
सहमी हुई शांति की परी २६ जनवरी
पीछे बीता हुआ साल आगे मुस्कुराता फरवरी

मोहम्मद सललल्लाहो अलैहे वसल्लम

मोहम्मद रहमते आलम मुहम्मद अज़मते आदम
ये नाम--ए--नामी मुसतक़बिल के ख़्वाबों की अलामत है

भलाई की ज़मानत है
सारी दुनिया की अमानत है

हरम है जितना सादा उतना सादा है पयाम उसका
इतना ही सादा है कलाम उसका

राह में एक सहरा दुःखों का मिला
दर्दोग़म से भरा एक जंगल मिला

कितना आज़ाद है आज अपना वतन
इतनी क़ुर्बानियां देके ये फल मिला

दो आवाज़ें

छोड़ कर ये ज़ुल्म का लश्कर चलो
अपने–अपने गाँव अपने घर चलो

मिल गया है इसमें इन्सां का लहू
तोड़ कर ये शीश–ओ–साग़र चलो

और भी हैं ज़िन्दगी के रास्ते
है यहाँ कितनी घुटन बाहर चलो

सामने अपने निहत्थे लोग हैं
पहन कर सारे ज़िरह बकतर चलो

आग लग जायेगी पूरे मुल्क में
फेंक कर तक़रीर के पत्थर चलो

ये न कहना अब न मिल पायेंगे हम
यार से अपने गले मिल कर चलो

देखो 'वाक़िफ़' ये फ़िज़ा ये आसमाँ
आज अपने जिस्म से बाहर चलो

एक दावत

एक अदीब के यहां दावत थी
रूसी अदीब के एज़ाज में
"हुस्न इत्तफ़ाक़" से मैं भी शरीक था
कुछ मशहूर अदीब और शायर
शहर की कुछ मशहूर हस्तियां
इनकम टैक्स आफ़ीसर
कुछ ग़ैर मुलकी सफीर भी थे उस महफ़िल में
आपसी तआरूफ़ के बाद
मेज़बान अदीब ने कहा मेरे तआरूफ़ में
"ये ग़रीब उर्दू" के अच्छे शायर हैं इनसे मिलिए
एक बड़े पब्लिशर बोले
गेट अप यूं ही है
मैटर क्या है
ये तो कम्पोज़ीटर जाने
एक दोशीज़ा ने सोचा
ख़ूबसूरत है देहाती है तो क्या
एक मैडम ने कहा
सेहतमन्द है नाम ख़ैराती है तो क्या
फ़्रांस के सफ़ीर ने कहा
जदीद है तो अच्छा शायर होगा
अमरीकी सफ़ीर बोला कुछ दिन और ज़रूरत है शायरों की
जब तक मशीन नहीं बन जाती शायरी की
बरतानिया का सफ़ीर सिर्फ़ सर हिला कर रह गया

ईरानी सफ़ीर ने शफ़क़त से देखा
जैसे कोई रईस अपने पुराने ख़ादिम को
अरब के सफ़ीर चल दिये
फ़ुटबाल मैच देखने के लिए
चीनी सफ़ीर ने चिल्ला कर
सारी शायरी खत्म हो गयी माऊ पर
रूसी सफ़ीर खाता रहा और मुस्कराता रहा
मुस्कराता रहा और खाता रहा

ग़ज़ल

वो महक फिज़ा में बिखर गई उसे भूल जा उसे भूल जा
वो हवा न जाने किधर गई उसे भूल जा, उसे भूल जा

हुई सुबह रात गुज़र गई, उसे भूल जा उसे भूल जा
वह परी नदी में उतर गई उसे भूल जा उसे भूल जा

न उदास हो न दुःखी रहे, नई ज़िन्दगी में सुखी रहे
नये रूप में वह सँवर गई उसे भूल जा, उसे भूल जा

वह मुहब्बतें, वह रक़ाबतें, वह हिकायतें, वह शिकायतें
जो गुज़र गई सो गुज़र गई, उसे भूल जा, उसे भूल जा

न वह लोग हैं, न वह चाहतें, वह ज़माना है न वह फ़ुरसतें
वह बहार–ए–शाम–ओ–सहर गई उसे भूल जा उसे भूल जा

सुबह की पाकीज़ा ख़ुशबुओं से महका है बदन
क्या ज़रूरत इतर की बाद–ए–सबा के वास्ते

यह सारा काम उर्दू से हिन्दी करने का जनाब मुहम्मद ज़मां सिद्दीकी व मेरे पुत्र नवेद हसन एवं मेरी बहू ने किया। जिसे मैं लेकर शबनम भाई (शबनम नक़वी) के पास इलाहाबाद पहुंची। जहां पर उन्होंने वाक़िफ़ साहब के देरीना व चहीते शायर दोस्त मरहूम "अनवार" प्रतापगढ़ी साहब के दामाद जनाब हामिद मियाँ के हवाले कर दिया, जिन्होंने इस कार्य को अपना सौभाग्य समझ कर अपनाया दोबारा जांच के बाद सुन्दर एवं अच्छा छापने का वायदा किया यह काम बहुत मेहनत व जिम्मेदारी का था और उनका वायदा आपके हाथों में है।

जनाब मज़हर भाई ने तो इस किताब का कवर पृष्ठ बनाकर किताब में चार चांद लगाने की कहावत को चरितार्थ किया।

इस संस्करण को छपने के सिलसिले में जिन हजरात ने मुझे अपना सहयोग व स्नेह प्रदान किया उनके नाम हैं —

श्री कृष्णा बिहारी नूर, डाक्टर मधुरिमा सिंह, बाल कृष्णा मिश्र, शम्भू दयाल सिंह सुधाकर, शम्भू शरणा द्विवेदी बन्धु, देव नारायण द्विवेदी देव, अम्बर बहराइची, चारू चन्द्र द्विवेदी, कमलेश भट्ट कमल, सरदार पंछी, सूर्य नारायण दुबे "सूरज", राजा राम भारती, मनमोहन कपूर, राजेन्द्र बहादुर सिंह, राजन, जवाहर इन्दु, डाक्टर पान्डे, डाक्टर प्रदम जोशी, हौसला सिंह, आनन्द स्वरूप श्रीवास्तवा, भवानी भारव हेमान्शु, राम बाबू रस्तोगी, "अज़हर", श्रीमती श्यामा सिंह "सबा" व श्रीमती निर्मला लाल, सुधीर 'बेकस' तथा वीरेन्द्र सिंह आनंद।

मैं उन सभी बन्धुओं की आभारी व कृतज्ञ हूँ जिन्होंने हमें प्रोत्साहित किया अपना अमूल्य समय दिया अन्यक मेहनत की अपना सहयोग प्रदान किया और मन्ज़िल तक पहुँचने में मेरी

सहायता की इन सब के अलावा हमारे शहर रायबरेली का हर वह आदमी जिसे कविता या शायरी से थोड़ा सा भी लगाव है उन सभी के दिलों की तमन्नायें इस पुस्तक में निहित हैं।

इस प्रकार हमें विश्वास है कि हिन्दी काव्य संग्रह का यह संस्करण ''शहर में चांदनी'' मलिक मोहम्मद जायसी अचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, और अमर बहादुर सिंह ''अमरेश'' की काव्य स्थली पर एक निर्मल शीतल दूधिया चांदनी सदैव बिखेरे रहेगी।

पलकें बोझल हो रही हैं इस समय जब कि एक लेख का अन्त हो रहा है मेरे ज़हेन में उन्हीं का लिखा क़ता जो अपनी मृत्यु से कुछ माह पूर्व उन्होंने व्यापार मण्डल रायबरेली द्वारा आयोजित ईद मिलन समारोह में ७.४.९२ को जहां उन्हें सम्मानित किया गया था, लिखा भी और उसी मंच पर पढ़ा भी था।

तुम कला के दोस्त हो, तुम एकता की शान हो।
तुमको ये हक़ है कि जिसको चाहो परमाणित करो।।

दोनों बातों से मैं ऊपर उठ चुका हूँ दोस्तों।
चाहे अपमानित करों अब चाहे सम्मानित करो।।

ज़ैबुन निसा ज़ेब वाक़िफ़ी

10, ताड़तल्ला दक्षिणी जहानाबाद
शहर रायबरेली, उत्तर प्रदेश
फोन : 884350

"बुलन्दियों का शायर"

बाल कृष्णा मिश्र
साहित्य भूषण

किसी भी काव्य को अनुभूति और संवेदनशीलता की पराकाष्ठा उसको उदार बनाती है। वाक़िफ़ अनुभूतियों का शायर है, उसकी शायरी को महसूस किया जा सकता है, व्याख्या करना कठिन है। उनके एक–एक शेर संवेदना से ओत–प्रोत है।

वाक़िफ़ उपमाओं का बेजोड़ शायर है।

सुर्ख़ फूलों पे शाम की रंगत
सो के जागे हुये नयन जैसे

हाय ये सांवले हसीं बादल
भीगे–भीगे हुये बदन जैसे

"उर्दू शायरी के दौर में डाक्टर एक़बाल का नाम बुलन्दियों के शायरों में है, डाक्टर एक़बाल की एक पंक्ति याद आ रही है।

"ख़ुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तक़दीर से पहले
ख़ुदा बन्दे से ख़ुद पूछे बता तेरी रज़ा क्या है।

मतलब यह कि ख़ुदी को इतनी बुलन्दी तक पहुँचाया जाय कि ख़ुदा भी हर मामले पर बन्दे से मशविरा ले। इसके मुताबिक़ ख़ुदा और बन्दा दो अलग–अलग हस्तियां (सत्तायें) हैं मगर वाक़िफ़ ने दोनों को एक रस कर दिया। दो होने का वाक़िफ़ ने एहसास ही नहीं किया। वह तो स्वयं एक बेख़ुदी का पैकर है :—

"हमको वाक़िफ़ ख़ुदी का होश न था
बे ख़ुदी में हयात गुज़री है"

अस्तु वाक़िफ़ की कल्पना भावनात्मक परिवेश अत्यन्त विराट है। ऐसी अवस्था को मुक्तावस्था कहते हैं और यह शायरी की चरमावस्था है।

''वाक़िफ़ की भाषा, अभिव्यक्ति दरिया में बहते हुये पानी की सी रवानी लिये सहज और सरल है।

मौलिक उद्‌भावनाओं का अनुपम भण्डार उनकी शायरी की विशिष्टता है, जो अन्य शायरों से उनकी पृथक पहचान बनाने मक्षं समर्थ है।

वाक़िफ़ में कबीर की मस्ती, मीरा की दीवानगी, ग़ालिब व निराला का फ़क्कड़पन एक साथ सहज़ रूप से विद्यमान है।

जैसे–जैसे समय की हवा के झोंके आने वाली सदियों में बहते चलेंगे वाक़िफ़ की शायरी की सौरभ सुगन्ध इन्सान के मन प्राणों को आल्हादित करती रहेगी।

कुछ लोग शायरी करते हैं। कुछ शायरी में जीते हैं वाक़िफ़ आख़िर तक शायरी में ही जिये।

कहा जाता है कि शोहरत की ख़्वाहिश हर श्रेष्ठ से श्रेष्ठ बुद्धिमान में होती है "Fame is the last informity of the novel mind" मैंने मूर्धन्य विद्वानों को शोहरत और दौलत के लिये भागते हुये देखा है। आश्चर्य किन्तु सत्य है कि वाक़िफ़ इन दोनों से तटस्थ थे, वरन् उदासीन थे। यह बात मैंने उनके बहुत नज़दीक से महसूस किया है।

मैंने जो भी विचार व्यक्त किये इसका कारण मेरी वाक़िफ़ की घनिष्टता नहीं पुस्तक के पृष्ठों पर अंकित पंक्तियां ख़ुद इस सच्चाई को साबित करेंगी।

यह मेरा परम सौभाग्य है कि ऐसे जनजात अद्‌भुद व्यक्ति के प्रति मुझे बहन ज़ेबुन निसा ने कुछ लिखने का मौक़ा दिया।

यह रायबरेली जनपद का परम सौभाग्य है कि शायरी वाकिफ़ के रूप में यहां जन्मी, आगामी पीढ़ी इस पर गर्व करेगी।

—•—

विलायत जाफ़री

निदेशक, लखनऊ, दूरदर्शन

मैं लखनऊ से वाकिफ़ से मिलने की तमन्ना लेकर रायबरेली आया था, लेकिन मुलाक़ात के बजाये उनके ताज़ियती जलसे में शरीक होना पड़ा, और उसकी तसवीर पर सबसे पहला हार मेरे हांथों पड़ा।

वाकिफ़ इस पूरे मुल्क के थे, अभी फ़ैसला नहीं हुआ है मगर जब फ़ैसला होगा कि वह एक बड़ा शायर था और उसने हमको बहुत कुछ दिया है जो हम ख़ुद अभी नहीं जानते।

वाकिफ़ बहुत बहादुर और बेबाक थे, अपने हालात से लड़ने वाला तो हादुर होता ही है, उनकी बेबाकी का एक वाक़िआ याद आया, हमारे एक दोस्त ने वाकिफ़ की मुलाकात एक मिनिस्टर साहब से यह कह कर कराई कि इनसे मिलो यह मिनिस्टर हैं और बहुत बड़े आदमी हैं वाकिफ़ ने मिनिस्टर साहब के मुंह पर कहा कि "आदमी तो मिलता नहीं तुम बड़ा आदमी कहां से ले आये"

एक सच्चा फ़न्कार, सच्चा शायर सच्चा कवि पैदा होता है मरता नहीं रायबरेली के अगर मलिक मोहम्मद जायसी नहीं मरे आचार्य महाबीर प्रसाद द्विवेदी नहीं मरे तो वाकिफ़ भी नहीं मरेगा।